रस्किन बॉण्ड
अंधेरे में एक चेहरा
Hindi edition of Ruskin Bond's bestseller
"A Face In The Dark and Other Hauntings"

रस्किन बॉन्ड

रस्किन बॉन्ड का जन्म 1934 में कसौली में हुआ था। उनका पालन-पोषण जामनगर, देहरादून, नई दिल्ली और शिमला में हुआ। युवावस्था में कुछ वर्ष उन्होंने लन्दन में बिताए लेकिन वहाँ उनका मन नहीं लगा और 1955 में वह भारत लौट आए। उनके प्रथम उपन्यास द रूम ऑन द रूफ़ के लिए उन्हें जॉन लेवेलीन राइस पुरस्कार प्रदान किया गया। यह पुरस्कार कॉमनवेल्थ के तीस वर्ष से कम आयु के साहित्यकार को उसकी उत्कृष्ट साहित्यिक कृति के लिए प्रदान किया जाता है। उसके बाद से उनकी पैंतीस पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। उनकी कई पुस्तकों का हिन्दी में अनुवाद हो चुका है, जिसमें से रूम ऑन द रूफ़, वे आवारा दिन, उड़ान, नाइट ट्रेन ऐट देओली, एडवेंचर्स ऑफ रस्टी, अब दिल्ली दूर नहीं, पेंथर्स मून उल्लेखनीय हैं। 1993 में उनको साहित्य अकादमी पुरस्कार, 1999 में पद्मश्री और 2014 में पद्मभूषण से अलंकृत किया गया।

अँधेरे में एक चेहरा

चुनिंदा अलौकिक कहानियाँ

रस्किन बॉन्ड

राजपाल

अनुवाद
रश्मि भारद्वाज

ISBN: 9789350642023
प्रथम संस्करण: 2016 © रस्किन बॉन्ड

हिन्दी अनुवाद © राजपाल एण्ड सन्ज़
ANDHERE MEIN EK CHEHRA (Stories) by Ruskin Bond
(Hindi edition of A Face in the Dark and other Hauntings published in English by Penguin Books India)

राजपाल एण्ड सन्ज़
1590, मदरसा रोड, कश्मीरी गेट, दिल्ली-110006
फोन: 011-23869812, 23865483, फैक्स: 011-23867791
e-mail: sales@rajpalpublishing.com
www.rajpalpublishing.com
www.facebook.com/rajpalandsons

क्रम

भूमिका

अँधेरे में एक चेहरा

बन्दरों का प्रतिशोध

एक भुतहा साइकिल

एक सपना

अँधेरे में सीटी की गूँज

रीगल पर पुनर्मिलन

विल्सन का पुल

पुखराज

वह काली बिल्ली

अँधेरे में फुसफुसाहट

भुतहा पहाड़ी की हवा

बाग में भूत

परियों की पहाड़ी पर

क्या एस्ट्ले लौटेगा?

पुरस्कार

बिल्ली की आँखें

सुज़ैना के सात पति

जिन्न की मुसीबत

भूत-बँगला

गणपत की कहानी

हवा की सरगोशी

सैवॉय होटल का भूत

किपलिंग से मुलाकात

डैफ़ोडिल का किस्सा

फॉक्स-बर्न पर पिकनिक

पानी में कुछ है

पारिवारिक भूत

सहस्त्राब्दी की एक रात

भूमिका

स्वर्ग और धरती पर बहुत सारी चीज़ें हैं, होरैशियो,
जिसकी कल्पना तुम्हारे दर्शन ने भी नहीं की होगी।

—शेक्सपियर, हैमलेट, एक्ट I, सीन V

आपको भूत की कहानी का आनन्द लेने के लिए भूतों पर भरोसा करने की कोई ज़रूरत नहीं। एक अच्छी कहानी आपको अलौकिक में विश्वास करने के लिए बाध्य नहीं कर सकती, यह आपको मानव अस्तित्व के रहस्यों पर विचार करने के लिए प्रेरित करती है और इस बात की सम्भावना को बढ़ाती है कि हमारे भौतिक अस्तित्व के अलावा भी जीवन की एक और परत है—कुछ आत्मिक शक्ति-सा, एक व्यक्ति का आभामण्डल जो शरीर के नहीं रहने पर भी देर तक ठहरा रहता है। व्यक्तित्व का ऐसा ही प्रक्षेपण यदा-कदा खुद को दृश्य रूप में प्रदर्शित करता है, लेकिन सामान्यतः यह अदृश्य, अलौकिक प्रक्रिया है जो अपनी उपस्थिति विभिन्न, कई बार आशा के विपरीत तरीकों से कराती रहती है।

अगर आप चाहें तो इसे स्वप्न कह सकते हैं—जैसे स्वप्न की तरह मैंने अपने पिता को देखा था, जिनकी बहुत पहले मृत्यु हो चुकी थी, बिलकुल वैसे ही दिखते हुए जैसे मेरे बचपन में दिखते थे; या तूफ़ान से घिरी पहाड़ी पर वह लड़का जो मुझे आने वाले खतरे से आगाह करने आया था, या फिर भुतहा पहाड़ी पर खेल रहे बच्चे, उनकी छवियाँ समय के खंड में कैद हैं।

वे सहायक, रक्षक प्रेत थे क्योंकि भूतों का प्रयोजन हमें डराना नहीं होता, हालाँकि उनमें अधिक दुष्ट ऐसा कर सकते हैं (इन्सान अधिक अहित करते हैं बनिस्पत भूतों के)। दूसरी दुनिया के अधिकांश यात्री उदास आत्माएँ होती हैं जो खोये हुए प्यार या खोये हुए घर की तलाश में रहती हैं। वे अशान्त, अप्रसन्न आत्माएँ होती हैं जो उन जगहों पर बसेरा करती हैं जिन्हें वे कभी जानती थीं और वैसा घर प्रेतबाधित कहलाता है अगर एक बार इनमें से किसी पर अशान्त अतीत की छाया अधिकार कर लेती है। खासकर पुराने घर इन भूतों के निवास के लिए बहुत प्रसिद्ध होते हैं। बहुत से महान लेखकों ने, चार्ल्स डिकेंस (अ क्रिसमस कैरोल) से लेकर रुडयार्ड किपलिंग (दी रिटर्न ऑफ इमरे) और हेनरी जेम्स तक (दी टर्न ऑफ दी स्क्र्यू) की कुछ बेहतरीन कहानियाँ प्रेतबाधित घरों पर आधारित हैं।

भारत में, पीपल का पेड़ अलौकिक कहानियों में शीर्ष स्थान रखता है। भूत, प्रेत, मूंजिया और अन्य अपार्थिव तत्व इस सबसे मेहमाननवाज़ पेड़ पर घर बनाते हैं, और जब उन्हें मौका मिलता है तो वे किसी असावधान राहगीर को वश में कर लेते हैं और उनके जीवन को बर्बाद कर डालते हैं। (मुझे पूरा जीवन यह चेतावनी दी जाती रही कि मैं पीपल के पेड़ के नीचे जम्हाई नहीं लूँ—"एक शरारती भूत मेरी गर्दन के अन्दर कूद जायेगा!" और फिर मेरा जीवन मेरा नहीं रह जायेगा ऐसा मुझे बताया गया; अगर प्रेत मुझे नहीं मारता है या पागल नहीं बनाता है, तब भी यह मेरे पाचनतन्त्र को पूरी तरह से नष्ट कर देगा।)

इस संग्रह की कहानियाँ मेरे लम्बे लेखकीय जीवन में अलग-अलग समय पर लिखी गयी हैं। ये उपदेश देने के लिए नहीं बल्कि मनोरंजन करने के लिए लिखी गयी हैं। ये बिलकुल भी भुतहा या डरावनी नहीं हैं, क्योंकि अलौकिक चीज़ों का एक मज़ेदार पक्ष भी होता है, जिसे यहाँ कुछ कहानियाँ प्रमाणित करेंगी।

मुझे कहा गया कि मैं भूतों, जिन्नों, चुड़ैलों और अन्य के बारे में सहानुभूति, यहाँ तक कि स्नेह के साथ लिखता हूँ। लोगों को यह विचित्र लगता है। शायद मैं खुद एक भूत हूँ, तब। पेंग्विन इंडिया के रवि सिंह ऐसा ही सोचते प्रतीत होते हैं। उन्होंने यह ज़ोर देकर कहा कि उनकी मसूरी की एक यात्रा में, उन्होंने मुझे सैवॉय होटल के राइटर्स बार में दोपहर के तीन बजे देखा—ऐसा समय जब मैं हमेशा शहर के दूसरे हिस्से में अपनी दोपहर की नींद ले रहा होता हूँ। क्या यह व्यक्तित्व प्रक्षेपण का मामला था? क्या मेरे सपने में, मुझे बहुत प्यास महसूस हुई और ताज़गी की खोज में मैंने समय और स्थान की यात्रा तय की।

"क्या तुम आत्माओं को भी परोसते हो?" मैंने प्रत्यक्ष रूप से बेयरे से पूछा। और ज़ाहिर तौर पर उसने आज्ञा का पालन किया।

लेकिन रवि मुझे नहीं बताते हैं कि उन्होंने मेरा 'भूत' देखने से पहले कितनी पी थी।

—रस्किन बॉन्ड

मसूरी
जून 2004

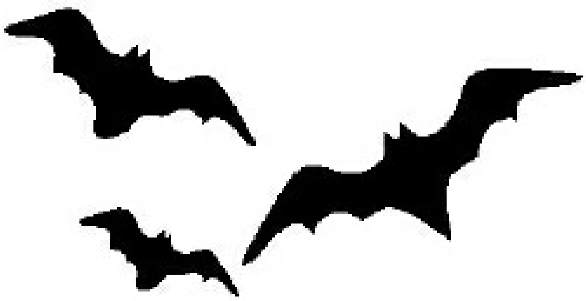

अँधेरे में एक चेहरा

एंग्लो-इंडियन शिक्षक मिस्टर ऑलिवर एक बार देर रात शिमला के बाहर बने अपने स्कूल लौट रहे थे। मशहूर लेखक रुडयार्ड किपलिंग के समय से भी पहले, यह स्कूल अंग्रेज़ी पब्लिक स्कूलों की तर्ज़ पर चल रहा था और यहाँ पढ़ने वाले बच्चे ब्लेज़र, टोपियों और टाई में सजे अधिकांशतः समृद्ध भारतीय परिवारों के होते थे। प्रसिद्ध अमरीकी पत्रिका लाइफ़ ने एक बार भारत पर किये गये अपने फीचर में इस स्कूल की तुलना इंग्लैंड के प्रसिद्ध स्कूल इटेन से करते हुए इसे 'इटेन ऑफ द ईस्ट' की संज्ञा दी थी। मिस्टर ऑलिवर यहाँ कुछ सालों से पढ़ा रहे थे।

अपने सिनेमाघरों और रेस्तराँ के साथ शिमला बाज़ार स्कूल से लगभग तीन मील दूर था और कुँवारे मिस्टर ऑलिवर अक्सर शाम को घूमने शहर की ओर निकल पड़ते थे तथा अँधेरा होने के बाद देवदार के जंगल से गुज़रते छोटे रास्ते से स्कूल लौटते थे। जब हवा तेज़ चलती थी तब देवदार के पेड़ों से निकलती उदास, डरावनी-सी आवाज़ों की वजह से अधिकांश लोग उस रास्ते का इस्तेमाल न कर मुख्य रास्ते से ही जाते थे। लेकिन मिस्टर ऑलिवर भीरु या कल्पनाशील नहीं थे। उन्होंने एक टॉर्च रखा हुआ था जिसकी बैटरी खत्म होने वाली थी। टॉर्च से निकलता अस्थिर प्रकाश जंगल के सँकरे रास्ते पर पड़ रहा था। जब उसकी अनियमित रोशनी एक लड़के की आकृति पर पड़ी, जो चट्टान पर अकेला बैठा हुआ था तब मिस्टर ऑलिवर रुक गये। लड़कों को अँधेरा होने के बाद बाहर रहने की अनुमति नहीं थी।

"तुम यहाँ बाहर क्या कर रहे हो, लड़के?" मिस्टर ऑलिवर ने थोड़ी कठोरता से उसके पास जाते हुए पूछा ताकि वह उस बदमाश को पहचान सकें। लेकिन उस लड़के की ओर बढ़ते हुए मिस्टर ऑलिवर को यह महसूस हुआ कि कुछ तो गड़बड़ है। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि वह लड़का रो रहा है। उसने अपना सिर झुका रखा था, अपने हाथों में उसने अपने चेहरे को थाम रखा था और उसका शरीर काँप रहा था। वह एक विचित्र, बेआवाज़ रुलाई थी और मिस्टर ऑलिवर को साफ़ तौर पर थोड़ा विचित्र महसूस हुआ।

"अच्छा, क्या बात है?" उनकी आवाज़ में अब क्रोध की जगह सहानुभूति थी।

“तुम क्यों रो रहे हो?” लड़के ने न जवाब दिया न ऊपर देखा। उसका शरीर पहले की तरह खामोश सिसकियों के साथ काँपता रहा। “अरे बच्चे! हो गया, तुम्हें इस समय बाहर नहीं होना चाहिए। मुझे बताओ अपनी परेशानी। ऊपर देखो!” लड़के ने ऊपर देखा। उसने चेहरे से अपने हाथ हटाये और अपने शिक्षक की ओर देखा। मिस्टर ऑलिवर की टॉर्च की रोशनी उस लड़के के चेहरे पर पड़ी—अगर आप उसे एक चेहरा कहना चाहें तो।

उस चेहरे पर आँखें, कान, नाक, मुँह कुछ भी नहीं था। वह बस एक गोल चिकना सिर था और उसके ऊपर स्कूल की टोपी पड़ी थी! और यहीं पर यह कहानी खत्म हो जानी चाहिए थी। लेकिन मिस्टर ऑलिवर के लिए यह यहीं खत्म नहीं हुई।

उनके काँपते हाथों से टॉर्च गिर पड़ी। वह मुड़े और गिरते-पड़ते पेड़ों के बीच से तेज़ी से भागते हुए मदद के लिए चिल्लाने लगे। वह अब भी स्कूल की इमारत की तरफ़ ही दौड़ रहे थे कि उनको बीच रास्ते में एक लालटेन झूलती हुई दिखाई दी। मिस्टर ऑलिवर चौकीदार से टकरा कर लड़खड़ाए और हाँफते हुए साँसें लेने लगे। “क्या बात है, साहेब?” चौकीदार ने पूछा। “क्या वहाँ कोई दुर्घटना हुई है? आप दौड़ क्यों रहे हैं?”

“मैंने कुछ देखा—कुछ बहुत ही भयावह—जंगल में एक रोता हुआ लड़का—और उसका चेहरा नहीं था!”

“चेहरा नहीं, साहेब?”

“आँख, नाक, मुँह—कुछ नहीं!”

“क्या आपका मतलब है कि वह ऐसा था साहेब?” चौकीदार ने पूछा और रोशनी अपने चेहरे के ऊपर ले गया। चौकीदार के चेहरे पर न आँखें थीं, न कान, कोई और अंग नहीं—यहाँ तक कि भवें भी नहीं। और तभी हवा चली और लैम्प बुझ गया।

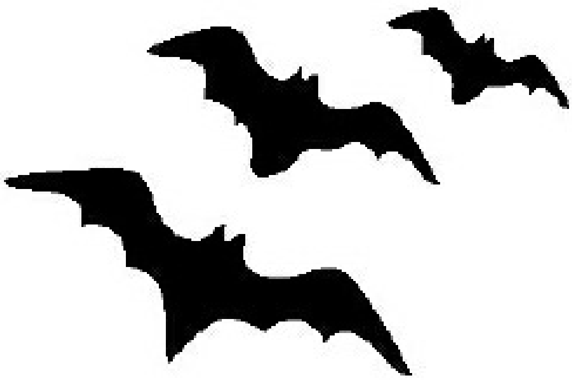

बन्दरों का प्रतिशोध

सुबह उठकर मैं दुविधा में था कि क्या रात में मैंने वास्तव में कुत्तों के भौंकने की आवाज़ें सुनी हैं और उन्हें पहाड़ी के किनारे बने कॉटेज के नीचे तेज़ी से भागते देखा था कि वह सब बस मेरा एक सपना था? उनमें एक गोल्डेन कॉकर, एक रीट्रीवर, एक पीक, एक डैचशंड जाति का था और एक-दो को मैं पहचान नहीं पाया। उनके भौंकने की तेज़ आवाज़ से आधी रात को मेरी नींद खुली, वे इतना शोर मचा रहे थे कि मैंने बिस्तर से उठ कर खिड़की से बाहर देखा। चाँदनी रात में मैंने उन्हें साफ़ देखा, पाँच या छह कुत्ते लम्बी मानसून घास के बीच बहुत उत्तेजित होकर भाग रहे थे।

चूँकि उनमें कुत्तों की कई प्रजातियाँ शामिल थीं, मैं थोड़ा उलझन में पड़ गया। मुझे कॉटेज में आये एक हफ़्ता ही हुआ था लेकिन मैं अपने अधिकांश पड़ोसियों के साथ दुआ-सलाम और बातचीत के सम्बन्ध बना चुका था। भारतीय सेना से रिटायर हुए कर्नल फैनशॉ मेरे सबसे करीबी पड़ोसी थे। उनके पास ज़रूर एक कॉकर जाति का कुत्ता था लेकिन वह काला था। देवदार के पेड़ों के पीछे रहने वाली कुँवारी एंग्लो इंडियन वृद्धाओं के पास सिर्फ़ बिल्लियाँ थीं (हालाँकि मुझे यह कभी समझ नहीं आया कि बिल्लियाँ कुँवारी बूढ़ी औरतों का विशेषाधिकार क्यों होनी चाहिए)। दूधवाले ने कुछ मिश्रित जाति वाले कुत्ते पाल रखे थे। और उस पंजाबी उद्योगपति, जिसने भूतपूर्व राजकुमार का महल खरीदा था और खुद रहने नहीं आकर देखभाल के लिए एक चौकीदार रखा था, के पास एक विशाल तिब्बती मस्टिफ्फ (Mastiff) जाति का कुत्ता था।

इनमें से कोई भी कुत्ता वैसा नहीं दिखता था, जैसा मैंने पिछली रात देखा था।

"क्या यहाँ कोई रीट्रीवर रखता है?" शाम को टहलने जा रहे कर्नल फैनशॉ मिले तो मैंने पूछा।

"जितना मैं जानता हूँ कोई नहीं," उन्होंने कहा और अपनी घनी भवों के नीचे से मुझ पर एक तेज़, भेदती हुई नज़र डाली। "क्यों, क्या तुम्हें आस-पास कोई दिखा?"

“नहीं, मुझे ऐसे ही जिज्ञासा हुई, इस जगह बहुत सारे कुत्ते हैं, हैं न?”

“ओह, हाँ। लगभग हर कोई यहाँ एक कुत्ता रखता है। यह अलग बात है कि अक्सर तेंदुआ उन्हें उठा ले जाता है। मैंने खुद अपने प्यारे नन्हे टेरियर जाति के कुत्ते को पिछली सर्दियों में ही खोया है।”

लम्बे और लाल मुँह वाले कर्नल फैनशॉ शायद इन्तज़ार कर रहे थे कि मैं उन्हें कुछ और बताऊँ—या वह पहाड़ी की कठिन चढ़ाई के बाद बस थोड़ा साँस लेने के लिए रुके थे।

उस रात मैंने फिर कुत्तों की आवाज़ें सुनीं। मैं खिड़की तक गया और बाहर झाँका। पूरा चाँद निकला हुआ था और उसकी चाँदनी में सिन्दूर के पेड़ों के पत्ते चमक रहे थे।

कुत्ते पेड़ के ऊपर देखकर भौंक रहे थे लेकिन मुझे पेड़ों पर कुछ नहीं दिखा, एक उल्लू भी नहीं।

मैंने एक आवाज़ दी और कुत्ते जंगल में गायब हो गये।

अगली सुबह मिलने पर कर्नल फैनशॉ ने मुझे उत्सुकता से देखा। मैं यह पक्के तौर पर जानता था कि वह उन कुत्तों के बारे में कुछ जानते हैं; लेकिन वह प्रतीक्षा कर रहे थे कि मैं उनसे कुछ कहूँ। मैंने उनका दिल रखने का निर्णय लिया।

“मैंने आधी रात को लगभग छह कुत्ते देखे,” मैंने कहा “एक कॉकर, एक रीट्रीवर, एक पीक, एक डैचशंड, और दो मिश्रित जाति के कुत्ते। कर्नल, मुझे पक्का विश्वास है कि आप यह अच्छी तरह जानते हैं कि वे किसके कुत्ते हैं।”

कर्नल आनन्दित थे। मैं यह उनकी आँखों की चमक देखकर कह सकता था कि उन्हें किसी को उलझन में देखकर बहुत मज़ा आ रहा था।

“तुम मिस फेयरचाइल्ड के कुत्तों को देख रहे हो,” उन्होंने बहुत ही आत्मसन्तुष्टि के भाव से कहा।

“ओह, और वह कहाँ रहती हैं?”

“वह नहीं रहतीं, मेरे बच्चे। मर गयीं। पन्द्रह साल पहले।”

“फिर उनके कुत्ते यहाँ क्या कर रहे हैं?”

“बन्दरों को खोज रहे हैं,” कर्नल ने कहा और मेरी प्रतिक्रिया देखने के लिए रुक गये।

“मुझे कुछ समझ नहीं आया,” मैंने कहा।

“चलो, मैं इस बात को ऐसे कहता हूँ,” कर्नल ने कहा। “क्या तुम्हें भूतों पर विश्वास है?”

“मैंने कभी देखा नहीं कोई,” मैंने कहा।

“लेकिन तुमने देखा, मेरे बच्चे, तुमने देखा। मिस फेयरचाइल्ड के कुत्ते सालों पहले मर गये—एक कॉकर, एक रीट्रीवर, एक डैचशंड, एक पीक और दो मौंगरल कुत्ते। वे सिन्दूर के पेड़ों के नीचे की उस छोटी पहाड़ी पर दफ़न हैं। उनकी मौत में कुछ भी असामान्य नहीं था, यह ध्यान रखना। वह सब बहुत बूढ़े थे और अपनी मालकिन के जाने

के बाद बहुत दिनों तक नहीं बचे। पड़ोसियों ने मरने तक उनका ध्यान रखा था।”

“और मिस फेयरचाइल्ड उसी कॉटेज में रहती थीं जहाँ मैं रुका हूँ? क्या वह जवान थीं?”

“वह चालीस के ऊपर की एक अधेड़, हट्टी-कट्टी औरत थीं जिन्हें बाहर रहना रास आता था। उन्हें मर्दों की अधिक परवाह नहीं थी। मुझे लगा तुम उनके बारे में जानते हो।”

“नहीं, मुझे यहाँ आये बहुत दिन नहीं हुए, आप जानते हैं। लेकिन आप बन्दरों के बारे में क्या कह रहे थे? वह कुत्ते बन्दरों को क्यों खोज रहे थे।”

“आह, वह कहानी का एक रोचक हिस्सा है। क्या तुमने उन लंगूर बन्दरों को देखा जो कभी-कभी सिन्दूर के पेड़ के पत्ते खाने आते हैं?”

“नहीं।”

“तुम देखोगे, जल्दी ही। उनका एक झुंड इन जंगलों में हमेशा घूमता रहता है। उनसे कोई खतरा नहीं लेकिन अगर उन्हें मौका मिले तो वे बगीचे को नष्ट कर डालते हैं... मिस फेयरचाइल्ड को इन बन्दरों से घृणा थी। उन्हें अपने डेहलिया के फूलों से बहुत लगाव था—कुछ नायाब फूल थे उनके पास—लेकिन बन्दर रात को आकर उनके पौधों को खोद डालते और डेहलिया की कलियों को खा जाते थे। शायद उन्हें डेहलिया की कलियों का स्वाद बहुत भाता था। मिस फेयरचाइल्ड बहुत गुस्सा होती थीं। जिन लोगों को बागवानी पसन्द होती है वह अक्सर अपना आपा खो बैठते हैं अगर उनके मनपसन्द पौधे नष्ट होते हैं—यह बहुत ही सामान्य बात है, मुझे लगता है। मिस फेयरचाइल्ड अपने कुत्तों को बन्दरों के पीछे लगा देती थीं, जब भी वह कर पातीं ऐसा, यहाँ तक कि अगर आधी रात हो तब भी। लेकिन बन्दर कुत्तों को भौंकता छोड़ आराम से पेड़ों पर जा चढ़ते थे।

“फिर एक दिन—या कि एक रात—मिस फेयरचाइल्ड ने बहुत बड़ा कदम उठाया। उन्होंने एक शॉट गन उधार ली और खिड़की के पास बैठ गयीं। और जब बन्दर आये, उन्होंने उनमें से एक को गोली मार दी।”

कर्नल बोलते-बोलते रुके और उन्होंने सिन्दूर के पेड़ों के ऊपर देखा, जिसके पत्ते दोपहर की गर्म धूप में चमक रहे थे।

“उन्हें ऐसा नहीं करना चाहिए था,” कर्नल ने कहा।

“कभी भी बन्दर को नहीं मारो। सिर्फ़ इसलिए नहीं कि वे हिन्दुओं के लिए पवित्र हैं—बल्कि वे बहुत कुछ इन्सानों जैसे हैं, जानते हो। चलो, अब मुझे चलना चाहिए। गुड डे!” और कर्नल अपनी कहानी एकाएक बीच में ही खत्म करते हुए तेज़ कदमों से देवदार के पेड़ों की तरफ़ से निकल गये।

उस रात मैंने कुत्तों की आवाज़ें नहीं सुनीं। लेकिन अगले दिन मैंने बन्दरों को देखा—असली बन्दर, भूत नहीं। वे संख्या में लगभग बीस थे, बूढ़े और जवान, पेड़ों पर बैठे सिन्दूर के पत्ते खा रहे थे। उन्होंने मुझ पर कोई खास ध्यान नहीं दिया और मैं थोड़ी देर तक उन्हें देखता रहा।

वे सुन्दर प्राणी थे, उनके रोएँ चमकीले भूरे रंग के थे और पूँछ लम्बी और लहरदार। वे बहुत ही सभ्य ढंग से पेड़ों पर उछल-कूद रहे थे और एक-दूसरे के प्रति उनका व्यवहार

बहुत ही विनम्र और शालीन था—मैदानी इलाकों में पाये जाने वाले धृष्ट बल्कि असभ्य लाल बन्दरों से बहुत अलग। उनमें से कुछ छोटे बन्दर पहाड़ियों की तरफ़ उछल-कूद मचाते, स्कूली बच्चों की तरह एक-दूसरे के साथ खेल रहे थे और कुश्ती लड़ रहे थे।

वहाँ उन्हें तंग करने के लिए कुत्ते नहीं थे—और ललचाने के लिए बगीचे में खिले डेहलिया के फूल भी नहीं।

लेकिन उस रात मैंने फिर से कुत्तों का भौंकना सुना। वे पहले से भी कहीं अधिक उत्तेजित होकर भौंक रहे थे।

"इस बार मैं इनकी वजह से नहीं उठने वाला," मैं बुदबुदाया और कम्बल को अपने कानों तक खींच लिया।

लेकिन भौंकने की आवाज़ें तेज़ और तेज़ होती जा रही थीं और उनके साथ अब कुछ और भी आवाज़ें सम्मिलित हो गयी थीं, कुछ चिचियाहट और घसीटे जाने की आवाज़ें।

तभी अचानक एक औरत की कानों को भेदनेवाली चीख जंगल में गूँज उठी। यह बहुत ही रहस्यमय और अस्वाभाविक आवाज़ थी, जिसे सुनकर मेरे रोंगटे खड़े हो गये।

मैं बिस्तर से कूदा और तेज़ी से खिड़की पर गया।

एक औरत ज़मीन पर गिरी हुई थी, तीन या चार विशालकाय बन्दर उसके ऊपर थे, उसे बाँहों पर काट रहे थे और गर्दन से खींच रहे थे। कुत्ते चीख रहे थे और बन्दरों को खींचने की कोशिश कर रहे थे, लेकिन कुछ बन्दर उन्हें पीछे से परेशान कर रहे थे। औरत ने फिर खून को जमा देने वाली चीख मारी और मैं कमरे में तेज़ी से लौटा और एक छोटी कुल्हाड़ी लेकर बगीचे की ओर भागा।

लेकिन सभी—कुत्ते, बन्दर और वह चीखती औरत—गायब हो गये, और मैं वहाँ पहाड़ी के पास अपने पायजामे में अकेला खड़ा, हाथ में कुल्हाड़ी पकड़े खुद को मूर्ख-सा महसूस कर रहा था।

अगले दिन कर्नल ने कुछ ज़्यादा ही आत्मीयता से मेरा अभिवादन किया।

"अब भी देख रहे हो कुत्तों को?" उन्होंने मज़ाकिया लहज़े में पूछा।

"मैंने बन्दरों को भी देखा," मैंने कहा।

"ओह, हाँ, वे फिर आ रहे हैं आजकल। लेकिन वे वास्तविक हैं और बिलकुल भी नुकसानदेह नहीं।"

"मैं जानता हूँ—लेकिन मैंने उन्हें पिछली रात कुत्तों के साथ देखा।"

"ओह! क्या सच में? यह तो विचित्र है, बहुत विचित्र।"

कर्नल ने मुझसे आँखें चुराने की कोशिश की, लेकिन मेरी बात अभी खत्म नहीं हुई थी।

"कर्नल," मैंने कहा। "आपने मुझे बताया नहीं कि मिस फेयरचाइल्ड कैसे मरीं।"

"ओह, क्या मैंने नहीं बताया? ज़रूर मेरे दिमाग से निकल गया होगा। मैं बूढ़ा हो रहा हूँ, लोगों को पहले की तरह याद नहीं रख पाता। लेकिन, मिस फेयरचाइल्ड मुझे

ज़रूर याद हैं, बेचारी औरत। बन्दरों ने उन्हें मार दिया। तुम नहीं जानते क्या? टुकड़े कर दिये उनके…”

उनकी आवाज़ धीमी हो गयी थी और वह विचारमग्न एक कैटरपिलर (कीड़े) को देख रहे थे जो उनकी छड़ी पर चढ़ने की कोशिश कर रहा था।

“उन्हें उस बन्दर को गोली नहीं मारनी चाहिए थी,” वह बोले, “बन्दर को कभी मत मारो—वे इन्सान जैसे ही हैं, जानते हो…”

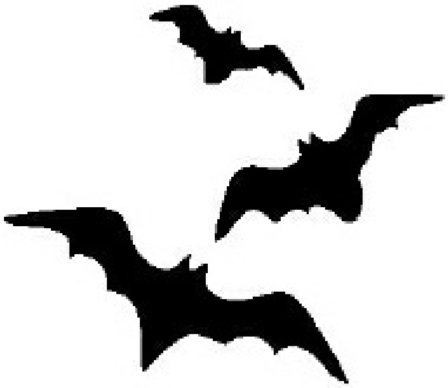

एक भुतहा साइकिल

उन दिनों मैं पूर्वी उत्तरप्रदेश के एक जिले शाहगंज से लगभग पाँच मील दूर बसे एक गाँव में रह रहा था और मेरे पास आवागमन का एकमात्र साधन एक साइकिल थी। हालाँकि मैं किसी भी किसान से सहायता माँग कर उसकी बैलगाड़ी पर शाहगंज जा सकता था, लेकिन खराब रास्ते और अपने अनाड़ीपन के कारण मुझे साइकिल की सवारी तेज़ लगती थी। मैं लगभग हर दिन शाहगंज जाता, अपनी चिट्ठियाँ लेता, अखबार खरीदता, चाय के अनगिनत कप पीता और स्थानीय व्यापारियों से गप्पें लड़ाता। शाम के लगभग छह बजे मैं एक निर्जन, सुनसान जंगल के रास्ते से गाँव की ओर लौटता। जाड़े के महीनों में छह बजते ही अँधेरा हो जाता और मुझे साइकिल पर एक लालटेन रखकर चलना होता था।

एक शाम जब मैं गाँव की ओर जाने वाले रास्ते में आधा रास्ता तय कर चुका था तो अचानक बीच रास्ते पर खड़े एक छोटे लड़के को देखकर रुक गया। उस पहर में जंगल छोटे बच्चों के लिए सही जगह नहीं था—भेड़िये और लकड़बग्घे इस जिले में आम थे। मैं साइकिल से नीचे उतरा और लड़के के पास पहुँचा, लेकिन उसने मुझ पर कोई खास ध्यान नहीं दिया।

“तुम यहाँ अकेले क्या कर रहे हो?” मैंने कहा।

“मैं इन्तज़ार कर रहा हूँ,” उसने बिना मेरी ओर देखे कहा।

“किसका इन्तज़ार कर रहे हो? अपने माता-पिता का?”

“नहीं, मैं अपनी बहन का इन्तज़ार कर रहा हूँ।”

“अच्छा, मैंने उसे रास्ते में नहीं देखा,” मैंने कहा। “वह शायद आगे होगी। अच्छा होगा तुम मेरे साथ चलो, वह तुम्हें रास्ते में मिल जायेगी।”

लड़के ने सिर हिलाया और चुपचाप साइकिल के आगे वाले डंडे पर बैठ गया। मैं

कभी भी उसके नैन-नक्श याद नहीं कर पाया। एक तो अँधेरा था, साथ ही उसने अपना चेहरा आगे की ओर कर रखा था।

हवा हमारे विपरीत थी और साइकिल चलाते हुए मैं ठंड से काँप रहा था, लेकिन उस लड़के पर ठंड का कोई असर नहीं था। हम बहुत दूर नहीं गये थे, जब मेरे लैम्प की रोशनी एक और बच्चे पर पड़ी जो सड़क के किनारे खड़ा था। इस बार यह एक लड़की थी। वह लड़के से थोड़ी बड़ी थी और उसके बाल हवा में बिखरे थे, जिससे उसका चेहरा लगभग छुपा हुआ था।

“यह रही तुम्हारी बहन,” मैंने कहा। “इसे अपने साथ ले चलते हैं।”

लड़की ने मेरी मुस्कान का कोई प्रत्युत्तर नहीं दिया, और लड़के की ओर देखकर भी उसने बस गम्भीरता से सिर हिलाया। लेकिन वह मेरी साइकिल के पीछे कैरियर पर बैठ गयी और मुझे साइकिल चलाने के लिए कहा। मेरे आत्मीय सवालों के उत्तर वे हाँ-न में दे रहे थे और मुझे महसूस हुआ कि वे अजनबियों से सावधान थे। कोई बात नहीं, गाँव पहुँच कर मैं इन्हें मुखिया के हवाले कर दूँगा और वह इनके माता-पिता का पता लगा लेंगे।

सड़क बिलकुल समतल थी, लेकिन मुझे लगा कि मैं किसी पहाड़ी पर साइकिल चला रहा था। और फिर मैंने ध्यान दिया कि लड़के का सिर मेरे चेहरे के बहुत करीब है, और लड़की की साँसें बहुत ही तेज़ और भारी हैं, जैसे कि वह खुद साइकिल चला रही हो। ठंडी हवा के बाद भी मैं बहुत गर्मी और घुटन महसूस कर रहा था।

“मुझे लगता है हमें थोड़ा रुक जाना चाहिए,” मैंने सुझाव दिया।

“नहीं,” लड़का और लड़की दोनों एक साथ चिल्लाये, “रुको नहीं!”

मैं इतना चकित था कि बिना कोई बहस किये मैं साइकिल चलाता रहा, और तभी जब मैं उनकी माँग को अनदेखा कर रुकने की सोच रहा था, मैंने साइकिल के हैंडल पर टिके लड़के के हाथ की ओर ध्यान दिया। उसके हाथ लम्बे हो गये थे, काले और बालों से भरे।

मेरे हाथ काँपे और साइकिल रास्ते पर डगमगा गयी।

“ध्यान रखो!” बच्चे एक साथ चिल्लाये। “देखो, तुम कहाँ जा रहे हो!”

उनका स्वर अब धमकी भरा था और उसमें बच्चों वाली कोई बात नहीं थी। मैंने कनखियों से अपने कन्धे के ऊपर देखा और मेरा सबसे भयानक डर साकार हो आया। लड़की का चेहरा विशाल और फूला हुआ था। उसके पैर, काले और बालों से भरे ज़मीन पर घिसट रहे थे।

“रुको,” भयानक बच्चों ने आदेश दिया। “नदी के पास रुको!”

लेकिन इससे पहले कि मैं कुछ कर पाता, मेरी साइकिल के आगे का चक्का एक पत्थर से टकराया और साइकिल मुझे नीचे गिराते हुए मेरे ऊपर गिर पड़ी। जब मैं धूल से लथपथ था, मैंने किसी कड़ी चीज़ का आघात अपने सिर के पीछे महसूस किया, जैसे कोई खुर हो और मेरी आँखों के आगे अँधेरा छा गया।

जब मुझे होश आया, मैंने देखा कि चाँद आसमान में निकल चुका था और उसका प्रतिबिम्ब नदी के पानी पर चमक रहा था। दोनों बच्चे कहीं नज़र नहीं आ रहे थे। मैं उठा

और अपने कपड़ों से धूल झाड़ने लगा। तभी मैंने पानी उलीचने और छपछपाहट की आवाज़ सुनी और ऊपर देखा। दो छोटी काली भैंसें कीचड़ सनी चाँदनी में चमकते पानी में खड़ी मुझे घूर रही थीं।

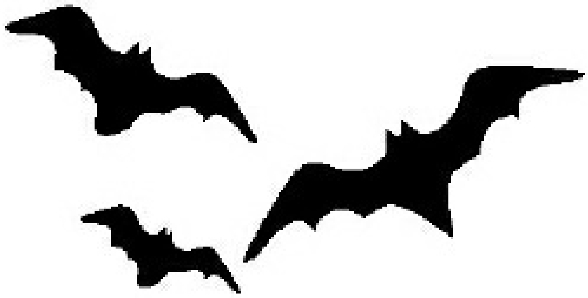

एक सपना

1955 की बात है। मैं तीन साल इंग्लैंड में रहने के बाद देहरादून लौट चुका था, अपनी शर्तों पर जीवन जीने के लिए दृढ़ प्रतिज्ञ था—भारत मेरा देश होगा और मैं एक लेखक बनूँगा। यह एक कठिन समय था। आंद्रे डॉईच प्रकाशन संस्थान द्वारा मेरी पहली किताब दी रूम ऑन दी रूफ़ के लिए दी गयी पचास पाउंड की पेशगी खत्म हो रही थी और किताब अब भी प्रकाशित नहीं हुई थी। मेरी माँ और सौतेले पिता बाकी परिवार के सदस्यों के साथ दिल्ली चले गये थे। मैं उनके साथ नहीं गया था क्योंकि मैं अपने हिसाब से जीवन जीने की आज़ादी चाहता था। हालाँकि मेरे पास वह आज़ादी थी और मैं बहुत छोटा था—अब तक इक्कीस का भी नहीं हुआ था—लेकिन भविष्य अनिश्चित था। कभी-कभी मैं अकेलापन महसूस करता था और दुविधा में पड़ जाता था कि मैंने सही निर्णय लिये हैं या नहीं।

मैं मुख्य बाज़ार में स्थित एक छोटी किराने की दुकान के ऊपर बने कमरे में किराए पर रहता था, जिसमें एक छोटी बालकनी थी लेकिन बिजली नहीं थी और नल का पानी नहीं आता था। मकान मालकिन के जीवन में अपनी समस्याएँ थीं जिनमें वह उलझी रहती थी और मुझे लगभग अकेला छोड़ दिया था, लेकिन धोबी के बेटे सीताराम ने मेरे पीछे आना अपना एकमात्र लक्ष्य बना रखा था। मैं जहाँ भी जाता वह मेरे पीछे हो लेता और मेरी शान्ति भंग करता रहता।

एक सुबह मैंने तय किया कि साइकिल से शहर के बाहर के इलाके में दूर तक घूमने जाऊँगा। मैंने यहाँ सुबह के उगते सूरज के बारे में बहुत कुछ पढ़ा था, लेकिन कभी भी इतनी जल्दी उठ नहीं सका कि इसे देख पाऊँ। मैंने सीताराम से कहा कि वह मुझ पर एक उपकार करे और मुझे सुबह छह बजे उठा दे। उसने मुझे पाँच बजे उठा दिया। तब रोशनी हो ही रही थी। जब तक मैंने कपड़े पहने, आकाश का रंग नीले से साफ़ हल्के बैंगनी रंग में बदल गया था और फिर सूरज अपनी पूरी आभा के साथ आकाश में चमक उठा।

मैंने मकान मालकिन से एक साइकिल उधार ली—यह कभी-कभार उसके नौकर द्वारा कुछ विशिष्ट ग्राहकों को सामान पहुँचाने के काम आती थी और रायपुर रोड से नीचे

टेढ़े-मेढ़े, डावाँडोल तरीके से साइकिल चलाता हुआ नीचे उतरने लगा क्योंकि लगभग पाँच सालों से मैंने साइकिल नहीं चलायी थी। आजकल देहरादून में बहुत ट्रैफिक होता है लेकिन तब ऐसा नहीं था और छह बजे सुबह सड़क सुनसान थी। जल्दी ही मैं शहर के बाहर चाय बागान पहुँच गया। रास्ते के किनारे एक छोटी-सी चाय की दुकान पर नाश्ते के लिए रुका और जैसे ही कड़े बन को अपनी चाय में डुबोने वाला था, एक जानी पहचानी परछाईं मेरी मेज़ पर पड़ी और सिर उठाने पर मैंने देखा कि सीताराम मुझे देखकर खीसें निपोर रहा है। मैं भूल गया था कि उसके पास भी साइकिल है।

प्रिय दोस्त और जाना पहचाना! मुझे समझ नहीं आ रहा था कि खुश होऊँ या क्रोधित।

"मेरी साइकिल आपकी साइकिल से तेज़ है," उसने कहा।

"ठीक, फिर ऋषिकेश की ओर बढ़ना जारी रखो। मैं कोशिश करूँगा तुम्हारे साथ बने रहने की।"

वह हँसा, "आप इस तरह मुझसे बच नहीं सकते, लेखक-साहेब।"

"आप कहाँ जा रहे हैं?" जब मैं साइकिल पर चढ़ने की तैयारी कर रहा था तब उसने पूछा।

"कहीं भी," मैंने कहा, "जितनी दूर तक मेरा जाने का मन करे।"

"आइये, मैं आपको वे रास्ते दिखाता हूँ जो आपने पहले कभी नहीं देखे होंगे।"

क्या ये मसीहाई शब्द थे? क्या मैं धोबी के बेटे के माध्यम से नये रास्ते और नये अर्थ तलाशने वाला था?

"रास्ता दिखाओ, मेरे जीवन के प्रकाश," मैंने कहा, और वह खुशी से मुस्कुराया और इतनी तेज़ी से साइकिल लेकर निकला कि मुझे उसके साथ गति मिलाने में मुश्किल हुई।

उसने मुख्य रास्ता छोड़ दिया और बाँसों के झुरमुट के बीच से निकलता एक ऊबड़-खाबड़ और धूल भरे रास्ते पर उतर गया। यह एक अच्छा-खासा चौड़ा रास्ता था और हम दोनों एक साथ इस पर साइकिल चला पा रहे थे। बाँसों के झुरमुट से निकलकर यह रास्ता एक विशाल चाय बागान में पहुँचा और फिर आगे मुड़कर एक छोटी-सी नहर के पास जाकर खत्म हुआ।

हमने अपनी साइकिलें एक आम के तने से टिकायीं। आम पकने शुरू हो गये थे लेकिन बहुत सारे फल पूरी तरह पकने से पहले ही पक्षियों द्वारा नष्ट कर दिये गये थे।

तोतों के एक झुंड ने हमारे ऊपर चक्कर काटा। एक रामचिरैया ने नहर के पानी में डुबकी मारी और एक चमकती हुई मछली के साथ बाहर आयी।

सीताराम नहर किनारे घूमने चला गया और मैं वहीं आम के पेड़ से पीठ टिकाये आराम करने लगा।

अचानक एक गहन शान्ति की अनुभूति ने मुझे घेर लिया। मैं अपने आस-पास के माहौल से पूरी तरह एकाकार महसूस करने लगा था—नहर के पानी की कलकल, पेड़, चिड़िया, धूप की गर्मी, मंद हवा, मेरे पैर के पास घास पर चलता कैटरपिलर, खुद वह

घास, उसकी हर पत्ती...

मैं अमेरिकन गायक नेल्सन एडी का गाया एक पुराना गीत गाने लगा—

जब तुम हताश हो और उदास
अपना सिर उठाओ और चिल्लाओ -
यह एक बढ़िया दिन होने वाला है!

जब मैं गा रहा था, मैंने नहर के पास कुछ हरकत देखी। सफ़ेद बबूल के पेड़ों के बीच से एक धुँधली-सी आकृति मेरी ओर बढ़ रही थी। यह सीताराम नहीं था, यह कोई अजनबी नहीं था, कोई ऐसा जिसे मैं जानता था। हालाँकि आकृति धुँधली ही रही, मैंने जल्दी ही अपने पिता का चेहरा और कदकाठी पहचान ली।

वह वहाँ मुस्कुराते हुए खड़े थे और मेरा गीत मेरे होंठों में ही गुम हो गया। मैं एक गहन रूहानी शान्ति से घिर गया था।

जैसे ही मैं उठा और उन्हें अभिवादन करने के लिए अपना हाथ उठाया, वह आकृति गायब हो गयी।

शायद यह गीत था जो मेरे पिता को कुछ क्षणों के लिए वापस ले आया था। उन्हें गायक नेल्सन एडी हमेशा से पसन्द थे और उनके सभी रिकॉर्ड जमा कर रखे थे। अब कहाँ हैं वे रिकॉर्ड? कहाँ है वह पुराना संगीत?

मेरे प्रिय, प्रिय पिता। मैं उन्हें कितना प्रेम करता था। और मैं सिर्फ़ दस साल का था जब वह मुझसे छिन गये। लेकिन अभी उन्होंने मुझे यह संकेत दिया कि वह अब भी मेरे साथ हैं... मैं अकेला नहीं। मेरे अन्दर आशा का प्रवाह हुआ।

तभी पास से पानी में तेज़ छपाक की आवाज़ आयी और मैंने देखा कि सीताराम पानी में था। मैंने ध्यान ही नहीं दिया कि उसने कब अपने कपड़े उतारे और नहर में छलाँग लगायी।

वह मुझे भी साथ आने के लिए संकेत दे रहा था और एक पल की हिचकिचाहट के बाद मैंने भी उसका साथ देने का निर्णय लेते हुए बहुत हल्का महसूस किया।

~

कुछ दिन बीते, हर बीतता दिन पहले बीते हुए दिन सा ही महत्त्वहीन रहा। फिर एक शाम अपने कमरे की सीढ़ियों से ऊपर आते हुए मुझे रात की रानी की खुशबू ने घेर लिया। मैं इस खुशबू से चौंक गया क्योंकि रात की रानी का पौधा न मेरी बालकनी में था न ही आस-पास कहीं था। बिल्डिंग के सामने एक नीम का पेड़ था और एक आम का पेड़, उस आम के बागान का बचा हुआ एकलौता वारिस जिसे शॉपिंग ब्लॉक बनाने के लिए काट कर हटा दिया गया था। आस-पास और कोई वनस्पति नहीं थी—होती भी तो वह ट्रैफिक और लोगों की भीड़ झेल नहीं पाती। सिर्फ़ कुछ गमलों में लगे पौधे दुकानों के आगे और बरामदे पर मौज़ूद थे। लेकिन फिर भी रात की रानी की खुशबू साफ़ आ रही थी और तेज़

होती जा रही थी।

आधी सीढ़ियाँ चढ़ने के बाद, मैंने ऊपर देखा और पड़ोस की खिड़की से आती हल्की रोशनी में अपने पिता को सबसे ऊपर की सीढ़ी पर खड़ा पाया। वह मुझे देख रहे थे बिलकुल उसी तरह जैसे उस दिन नहर के पास देखा था—स्नेह के साथ और उनके होंठों पर मुस्कान थी—थोड़ी देर मैं स्थिर खड़ा रहा, खुशी से स्तब्ध। फिर प्रेम की तरंगों और पुराने दिनों के साथ की यादों से सराबोर हो मैं सीढ़ियाँ चढ़ने लगा—लेकिन जब मैं ऊपर पहुँचा, वह दृश्य गायब हो गया था और मैं अकेला वहाँ खड़ा था, रात की रानी की मीठी सुगन्ध अब भी मेरे साथ थी, लेकिन कोई और नहीं, कोई और आवाज़ नहीं थी, दूर से आती ट्रेन के इंजन को दूसरी पटरी पर ले जाने की आवाज़ के अलावा।

यह दूसरी बार था जब मैंने अपने पिता को देखा था या कि उनकी आत्मा को देखा था। मैं नहीं जानता यह कोई पूर्वाभास था कि वह बस मुझे दोबारा देखना चाहते थे, और दो अलग दुनिया की खाई को पाटना चाहते थे।

बालकनी में अकेला खड़ा, मैं अतीत की यादों से घिरा अपने बचपन के दिनों को याद कर रहा था जब मेरे पिता मेरे एकमात्र साथी थे—दिल्ली के बाहर रॉयल एयरफ़ोर्स के तम्बू में, जब मई और जून की गर्म हवा दिन में चक्कर काटती रहती थी और रात की रानी की भीनी खुशबू रात में तैर रही होती; छोटे शिमला में शाम को घूमने जाते हुए, बिशप कॉटन स्कूल के रास्ते पर—और उससे पहले जामनगर सागर तट पर टहलते सीपियाँ खोजते हुए।

मेरे पास अब भी उनमें से एक बचा था—एक नरम गोल सीप जो ज़रूर पेरिविंकल नामक एक खास घोंघे की प्रजाति का रहा होगा। मैंने उसे कान में लगाया और सागर की गुनगुनाहट सुनी, समुद्र का मायावी संगीत। उस आवाज़ ने मुझे एक विचित्र बेचैनी से भर दिया, एक अलग जीवन की चाह। मैंने मानसून की बारिश की धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा में लगे गर्म और नम शहर को कुछ दिनों के लिए विदा कहने का निर्णय लिया।

~

देहरादून से अपने स्वैच्छिक निर्वासन की तीसरी सुबह मैं नदी के ऊपर एक जीर्ण-शीर्ण रास्ते पर बढ़ा जो बड़े पहाड़ों पर स्थित समाधियों की ओर जाता था। मैं मोक्ष या कोई आत्मा का प्रकाश नहीं तलाश रहा था—मैं बस खुद से और अपनी स्थिति से सामंजस्य बैठाने की कोशिश कर रहा था। क्या मुझे देहरादून में रहना चाहिए या फिर ज़्यादा सम्भावनाओं वाली जगह पर जाना चाहिए—दिल्ली या बम्बई, शायद? या कि मुझे लंदन और अपने थॉमस कुक के ऑफ़िस की मेज़ पर लौट जाना चाहिए? ओह, एक क्लर्क का जीवन जीने के लिए! या मुझे लगता है मैं अंग्रेज़ी की ट्यूशन दे सकता हूँ। हालाँकि ऐसा लगता है कि हर कोई अंग्रेज़ी जानता है।

पहाड़ी पगडंडी पर अकेले थके कदमों से चलते हुए मुझे मेरा भविष्य बहुत सम्भावनाहीन लग रहा था। तब अगर वास्तव में मेरे लिए कुछ ज़रूरी था तो वह एक सच्चा साथ था—कोई राज़दार, जिससे मैं जीवन की छोटी-छोटी समस्याएँ बाँट सकूँ। कोई आश्चर्य नहीं कि लोग शादी करते हैं! लेकिन एक दरिद्र लेखक से कौन शादी करता

जिसके बैंक में बीस रुपये पड़े हुए थे और उस जगह पर भी कोई सम्भावना नहीं बची थी जहाँ से अंग्रेज़ी खत्म होने वाली थी (मुझे नहीं पता था कि तीस साल बाद अंग्रेज़ी फिर से वापस होगी।) दिमाग में यह निराशावादी सोच लिये मैंने खुद को लकड़ी के एक छोटे पुल के बीच खड़ा पाया जो उस पहाड़ी धारा पर बना था जो आगे चलकर बड़ी नदी में मिल जाता था। मैं खुद को नीचे पत्थर पर गिरा देने के बारे में नहीं सोच रहा था; इस सोच ने ही मुझे डरा दिया होता। इसके अलावा मैं उस तरह का इन्सान था जो जीवन से चिपके रहते हैं, भले ही उसे छोड़ देने का लालच कितना भी बड़ा हो। लेकिन बेखयाली में मैं पुल की लकड़ी की बनी रेलिंग पर झुक गया। लकड़ी सड़ी हुई थी और तुरन्त टूट गयी।

मैं लगभग तीस फीट नीचे गिरा, सौभाग्यवश मैं धारा के बीच में गिरा था जहाँ पानी काफ़ी गहरा था। मैं किसी पत्थर से नहीं टकराया, लेकिन धारा तेज़ थी और वह मुझे अपने साथ बहा ले गयी। मैं थोड़ा बहुत तैरना जानता था इसलिए तैरा और धारा के साथ बहने लगा, हालाँकि मेरे कपड़े बाधक बन रहे थे। लेकिन आगे मैंने बहुत हलचल देखी और मैं जान गया कि आगे धारा और तेज़ है या शायद एक जलप्रपात। इसका अर्थ होता एक सम्भावनाशील युवा लेखक का असमय अन्त, इसलिए मैंने अपनी दायीं ओर के नदी के किनारे पर पहुँचने की अथक कोशिश करनी शुरू की। मैंने अपना हाथ एक नरम पत्थर पर रख दिया लेकिन लहरों ने मुझे खींच लिया। फिर मैंने एक सूखे पेड़ के तने को पकड़ा जो धारा में गिर गया होगा। मैंने उसे मज़बूती से पकड़ा था लेकिन मेरे अन्दर खुद को पानी से बाहर खींचने की ताकत नहीं बची थी।

डर की एक लहर मेरे अन्दर दौड़ गयी और मुझे धारा से और संघर्ष व्यर्थ लगने लगा। इससे पहले कि मैं खुद को लहरों के हवाले करने के लिए आँखें मूँदता, किसी चीज़ ने मुझे सिर घुमा कर देखने के लिए बाध्य किया और मैंने अपनी दायीं ओर के घास से भरे किनारे की ओर देखा। मैंने अपने पिता को वहाँ खड़ा देखा। वह मुझे देखकर फिर से मुस्कुरा रहे थे, एक सौम्य मुस्कान, प्रेम से भरी। मुझे उन तक पहुँचना था। मैंने पेड़ की शाखा को मज़बूती से पकड़ा और खूब ज़ोर लगाया—हाँ, मैं एक दिलेर लड़का था—मैंने खुद को पानी के बाहर खींचा और पेड़ के तने से चिपटा हुआ फर्न और कोमल घास के ढेर में जा घुसा।

मैंने अपने चारों ओर देखा, लेकिन वह दृश्य जा चुका था, हवा जंगली गुलाब और मैगनोलिया के फूलों की खुशबू से भरी थी।

आज उन वर्षों को दोबारा याद करते हुए, मैं जानता हूँ कि जो चुनाव मैंने किये थे वे मेरे लिए सही चुनाव थे और मुझे आगे बढ़ने की हिम्मत देने एक पुराना, प्रिय साथी वापस आया था।

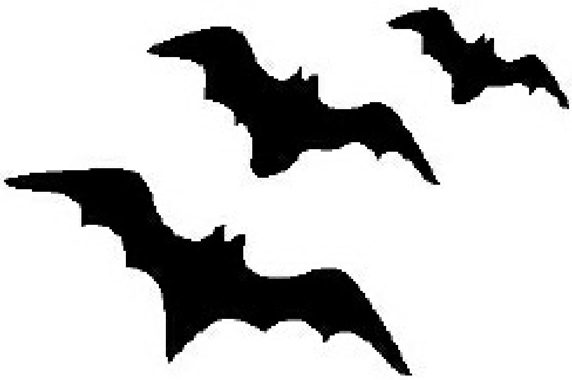

अँधेरे में सीटी की गूँज

चाँद लगभग पूरा निकल आया था। चमकीली चाँदनी से पूरा रास्ता नहाया हुआ था। लेकिन पेड़ों की परछाइयाँ मेरा पीछा कर रही थीं, सिन्दूर के पेड़ों की कुटिल शाखाएँ मुझ तक बढ़ रही थीं—कुछ धमकाती हुई सी कुछ ऐसे जैसे उन्हें साथ की तलाश हो।

एक बार मैंने सपना देखा कि पेड़ चल सकते हैं। ऐसी ही एक चाँदनी रात में उन्होंने खुद को अपनी जड़ों से थोड़ी देर के लिए अलग कर लिया, एक-दूसरे से मिले और पुराने दिनों को याद किया—क्योंकि उन्होंने बहुत सारे लोग और घटनाएँ देखी हुई थीं, खासकर पुरानी। और फिर सुबह होने से पहले वे उसी जगह पर लौट आते हैं जहाँ वे बड़े होने के लिए अभिशप्त थे। रात के एकाकी प्रहरी और यह उनके घूमने के लिए एक बेहतर रात थी। वे घूमने के लिए बेताब थे—पत्तों की बेचैन सरसराहट, पेड़ के तनों की चरचराहट—ये वे आवाज़ें थीं जो उनके अन्दर से उस रात की खामोशी में आ रही थीं...

कभी-कभी कोई और घूमने वाला अँधेरे में मेरे पास से गुज़र जाता था। अभी ज़्यादा रात नहीं हुई थी, सिर्फ़ आठ बजे थे और कुछ लोग घर लौटने के रास्ते में थे। कुछ शहर में घूमते चमकती रोशनी, दुकानों और रेस्तराँ का आनन्द ले रहे थे। उस अँधेरे रास्ते पर मैं किसी को पहचान नहीं पा रहा था। उन्होंने भी मुझ पर ध्यान नहीं दिया। मुझे बचपन का एक पुराना गीत याद आया। धीरे-धीरे मैं उसे गुनगुनाने लगा और जल्दी ही शब्द मुझ तक वापस आने लगे—

हम तीन
हम नहीं हैं एक भीड़;
हम लेकिन साथ भी नहीं—
मेरी प्रतिध्वनि,

मेरी परछाईं,
और मैं...

मैंने अपनी परछाईं को देखा, शान्ति से मेरे साथ चलती हुई। हम अपनी परछाईं को कोई महत्त्व नहीं देते। यह हमेशा हमारे साथ रहती है, बिना कोई शिकायत किये जीवन भर का साथ, मूक और असहाय होकर हमारे हर जुड़ाव और अलगाव की साक्षी बनी रहती है। इस चमकती चाँदनी रात में मैं खुद को रोक नहीं पाया तुम पर ध्यान देने से, मेरी परछाईं और मैं माफ़ी चाहता था कि तुम्हें इतना कुछ देखना पड़ा जिसके लिए मैं शर्मिंदा था, लेकिन खुश भी कि तुम साथ थीं जब मुझे मेरे हिस्से की छोटी जीतें मिलीं। और मेरी प्रतिध्वनि का क्या? मैंने ज़ोर से आवाज़ लगानी चाही यह देखने के लिए कि मेरी पुकार मुझ तक वापस आती है कि नहीं; लेकिन खुद को ऐसा करने से रोक लिया क्योंकि मैं पहाड़ों की उस पूर्ण निःशब्दता और पेड़ों के वार्तालाप को भंग नहीं करना चाहता था।

रास्ता ऊपर पहाड़ी पर जाकर खत्म होता था और ऊँचाई पर समतल हो आया था, जहाँ यह लम्बे देवदारों के बीच चाँदनी का रिबन लगता था। एक चंचल गिलहरी सड़क के बीच उछलती-कूदती, एक पेड़ से दूसरे पेड़ तक आ-जा रही थी। एक रात की चिड़िया ने पुकार लगायी। बाकी सन्नाटा था।

एक पुराना कब्रिस्तान मेरे सामने पड़ा। यहाँ कई पुरानी कब्रें थीं—कुछ बड़ी और स्मारकीय—और कुछ नयी कब्रें भी थीं, क्योंकि कब्रगाह अभी भी इस्तेमाल में लायी जा रही थी। मैं उनमें से एक पर बिखरे हुए फूल देख सकता था—कुछ पुराने डेहलिया और लाल साल्विया के फूल। थोड़ा आगे, चारदीवारी के पास, कब्रगाह की बची हुई दीवार तेज़ मानसून बारिश में ढह गयी थी। कुछ कब्रों पर लगे पत्थर भी दीवार के साथ ही निकल आये थे। एक कब्र खुली पड़ी थी। एक सड़ा हुआ ताबूत और कुछ बिखरी हुई हड्डियाँ किसी की आखिरी स्मृति के रूप में बचे थे जो मेरी और तुम्हारी तरह जीता और प्यार करता था।

कब्र पर लगे पत्थर का कुछ हिस्सा सड़क पर गिरा था और उसकी लिखावट धूमिल पड़ गयी थी। मैं कोई विकृत इन्सान नहीं लेकिन किसी चीज़ को देखकर मैं झुक गया और एक नरम, गोल हड्डी का टुकड़ा उठाया, शायद एक खोपड़ी का हिस्सा। मेरे हाथों का दबाव पाकर हड्डी टुकड़ों में चूर हो गयी। मैंने उसे घास पर गिरने दिया। मिट्टी, मिट्टी में।

और फिर कहीं से, बहुत दूर से नहीं, किसी के सीटी बजाने की आवाज़ आयी। पहले मुझे लगा कि मेरी ही तरह कोई देर शाम घूमने वाला व्यक्ति सीटियाँ बजा रहा है, जैसे मैं पुराने गीत गुनगुना रहा था। लेकिन सीटी बजाने वाला बहुत जल्दी सामने आया—सीटी की आवाज़ तेज़ और खुशमिज़ाज थी। एक लड़का साइकिल चलाता हुआ तेज़ी से गुज़रा। मैं उसकी बस एक झलक ही देख पाया, जब तक उसकी साइकिल सड़क पर परछाइयाँ बुनती आगे बढ़ गयी।

लेकिन कुछ ही मिनटों में वह वापस आया। इस बार वह मुझसे कुछ फीट दूर रुका और उसने मेरी ओर एक प्रश्नवाचक, अधूरी मुस्कान फेंकी। एक दुबला-पतला, साँवला

चौदह या पन्द्रह साल का लड़का। उसने स्कूल की ब्लेज़र और पीला स्कार्फ़ पहन रखा था। उसकी आँखों में चाँदनी अपनी पूरी तरलता के साथ चमक रही थी।

"तुम्हारी साइकिल में घंटी नहीं है," मैंने पूछा।

उसने कुछ नहीं कहा, बस अपने सिर को एक तरफ़ हल्का झुकाते हुए मुझे देखकर मुस्कुराया। मैंने अपना हाथ आगे बढ़ाया और मुझे लगा कि वह मुझसे हाथ मिलायेगा। लेकिन तभी अचानक, एकदम से वह फिर आगे बढ़ गया, प्रफुल्लित होकर सीटी बजाते हुए हालाँकि बिना लय के। एक सीटी बजाता हुआ स्कूली लड़का। उसके लिए बाहर घूमने के लिए थोड़ी देर हो चुकी थी, लेकिन वह आज़ाद किस्म का बन्दा लग रहा था।

सीटी की आवाज़ मंद पड़ने लगी, फिर बिलकुल ही सुनाई देनी बन्द हो गयी। एक गहन, नीरव शान्ति ने जंगल को घेर लिया। मैं और मेरी परछाईं घर की ओर चल पड़े।

~

अगली सुबह मैं एक अलग तरह की सीटी की आवाज़ से जागा—खिड़की के बाहर एक चिड़िया के गीत से।

वह एक खुशनुमा दिन था, सूरज की रोशनी गर्म और लुभावनी थी, और मैं बाहर निकलने के लिए मचल उठा, लेकिन कुछ काम खत्म करने थे, कुछ प्रूफ़ सही करने थे, चिट्ठियाँ लिखनी थीं। और कुछ दिनों बाद ही मैं पहाड़ की चोटी तक जा सका, देवदारों के नीचे उस शान्त, एकाकी विश्राम स्थल पर। यह बात मुझे विचित्र लगी कि जिन्हें बर्फ़ में चमकती चोटियों का अद्भुत दृश्य देखने का अवसर मिला हुआ है, वे कई फीट नीचे दबे हुए हैं।

वहाँ कुछ मरम्मत का काम चल रहा था। कब्रगाह की बची हुई दीवार खड़ी की जा रही थी, लेकिन ओवरसियर ने मुझे बताया कि क्षतिग्रस्त कब्रों को ठीक करने के लायक पैसे नहीं हैं, चौकीदार की मदद से मैंने बिखरी हुई हड्डियों को समेट कर टूटी हुई कब्र के पास हुए एक छोटे गढ्डे में डाला और उसे कुछ पैसे दिये ताकि वह खुली हुई कब्र को घेर दे।

कब्र के पत्थर पर लिखा नाम मिट गया था, लेकिन मैं तिथि पढ़ पाया—20 नवम्बर 1950—कोई पचास साल पहले, लेकिन इतना पहले भी नहीं कि कब्र के पत्थर ही निकल जायें...

मुझे चर्च में दफ़न व्यक्तियों के ब्योरे का रजिस्टर मिला और मैंने इसके पीले पन्नों को 1950 की तरफ़ पलटा, जब मैं खुद भी एक स्कूली लड़का ही था। मुझे वहाँ नाम मिला—माइकल दत्ता, उम्र पन्द्रह साल—और मौत का कारण—रोड एक्सीडेंट।

मैं सिर्फ़ अनुमान ही लगा सकता था और सम्भावना की पुष्टि के लिए मुझे यहाँ रहने वाले किसी पुराने व्यक्ति का पता लगाना था, जिसे वह लड़का या उस एक्सीडेंट के बारे में कुछ याद हो।

पाइन टॉप पर बूढ़ी मिस मार्ले रहती थीं। वुडस्टॉक स्कूल की सेवानिवृत्त शिक्षिका और उनकी याद्दाश्त बहुत बेहतरीन थी और वह वहाँ पचास वर्षों से भी ज़्यादा समय से

रह रही थीं।

उजले बालों और नरम गालों वाली मिस मार्ले की नीली आँखें जिज्ञासा से भरी थीं, उन्होंने अपने पुराने फैशन के चश्मे को नाक पर चढ़ाकर मुझे उदारता से देखा।

“माइकल एक प्यारा लड़का था—उदारता से भरपूर, हमेशा सहायता के लिए तैयार। मेरे बोलने की देर होती कि मुझे अखबार चाहिए या एस्परीन, और वह अपनी साइकिल पर सवार हो चल देता, इन खड़ी ढाल की सड़कों पर बेफ़िक्री से साइकिल दौड़ाता हुआ, लेकिन ये पहाड़ी सड़कें और इसके चौंकाने वाले घुमाव साइकिल पर दौड़ लगाने के लिए नहीं हैं।

“वे मोटरों की आवाजाही के लिए सड़कों को चौड़ा कर रहे थे, और एक ट्रक ऊपर पहाड़ पर आ रहा था, पत्थरों से लदा, जब माइकल घुमाव के पास आया तो अनियन्त्रित होकर ट्रक से टकरा गया। उसे हॉस्पिटल ले जाया गया और डॉक्टरों ने भी पूरी कोशिश की, लेकिन उसे होश नहीं आया। तुमने ज़रूर उसकी कब्र देखी होगी। तभी तुम यहाँ हो। उसके माता-पिता? वे थोड़े दिनों बाद ही यहाँ से चले गये, विदेश, मुझे लगता है...एक प्यारा लड़का, माइकल, लेकिन थोड़ा ज़्यादा ही लापरवाह। तुम्हें पसन्द आता वह, मुझे लगता है।”

~

मैंने उस प्रेत साइकिल सवार को फिर कुछ दिनों तक नहीं देखा, हालाँकि मैंने उसकी उपस्थिति कई बार महसूस की। और जब सर्दी की एक एकाकी शाम को मैं उस निर्जन कब्रगाह के पास से गुज़र रहा था, मुझे लगा कि मैंने उसकी सीटी की आवाज़ दूर से आती सुनी है लेकिन वह सामने नहीं आया, शायद यह बस एक सीटी की प्रतिध्वनि थी, जो मेरी अवास्तविक परछाईं से संवाद कर रही थी।

कुछ महीने बाद मैंने उस मुस्कुराते चेहरे को दोबारा देखा और यह मेरे सामने कुहरे से निकल कर आया जब मैं भिगो देने वाली मानसून की बारिश में घर लौट रहा था। पुराने कम्युनिटी सेंटर में मैं एक रात्रि भोज के लिए गया था और एक बहुत ही सँकरे और भवों की तरह खड़े रास्ते से घर की ओर लौट रहा था। शाम से ही भयंकर तूफ़ान अपने आने की चेतावनी दे रहा था। पहाड़ों की तरफ़ गहरा कुहासा छाया हुआ था। यह इतना घना था कि मेरी टॉर्च की रोशनी उससे टकरा कर लौट रही थी। आकाश में बिजली चमक रही थी और बादल पहाड़ों के बीच गरज रहे थे। बारिश बहुत तेज़ हो गयी थी। मैं धीरे-धीरे, सावधानी से पहाड़ों की तरफ़ से आगे बढ़ रहा था। तभी बादल गरजे और मैंने उसे कुहासे से निकल मेरे आगे खड़ा पाया—बिलकुल वही दुबला-पतला, साँवला लड़का जिसे मैंने कब्रगाह के पास देखा था। वह मुस्कुराया नहीं। इसकी बजाय उसने अपना हाथ ऊपर मुझे देख कर विदा में हिलाया। मैं थोड़ी देर असमंजस में स्थिर खड़ा रहा। कुहासा थोड़ा छंटा और मैंने देखा कि वह रास्ता गायब था। मेरे कुछ फीट आगे की जगह खाली थी। और चट्टान के नीचे लगभग सौ फीट की खाई।

जैसे ही कँटीली झाड़ियों का सहारा लेते हुए पीछे की ओर बढ़ा, वह लड़का गायब हो गया था। मैं लड़खड़ाते हुए कम्युनिटी सेंटर की ओर वापस लौट गया और रात

लाइब्रेरी में कुर्सी पर बैठ कर काटी।

~

मैंने उसे फिर नहीं देखा।

लेकिन एक हफ़्ते से जब मैं तेज़ बुखार में बिस्तर पर पड़ा था, मैंने नीचे खिड़की पर उसकी सीटियों की आवाज़ सुनी। 'क्या वह मुझे अपने पास बुला रहा था,' मैंने सोचा, 'या बस वह यह दिलासा देने की कोशिश कर रहा था कि सब ठीक है।' मैं बिस्तर से उठा और बाहर झाँका, लेकिन मुझे कोई दिखाई नहीं दिया। समय-समय पर मैं उसकी सीटियों की आवाज़ सुनता रहा, लेकिन जैसे-जैसे मैं ठीक होता गया, यह आवाज़ मंद पड़ते-पड़ते, फिर एकदम से बन्द हो गयी।

पूरी तरह ठीक होने के बाद मैं पहाड़ की चोटी पर फिर से घूमने जाने लगा। हालाँकि मैं अँधेरा होने तक कब्रिस्तान के पास घूमता रहता और निर्जन सड़क पर चहलकदमी करता रहता लेकिन मैंने उसे दोबारा नहीं देखा या उसकी सीटी की आवाज़ नहीं सुनी। मुझे अकेलापन महसूस हुआ, मुझे एक दोस्त की ज़रूरत हुई, भले ही वह एक प्रेत साइकिल सवार ही क्यों न हो। लेकिन वहाँ सिर्फ़ पेड़ थे।

और इस तरह हर शाम मैं अँधेरा होने पर घर की ओर लौटता इस पुराने गीत का अन्तरा गाता रहा—

हम तीन
हम नहीं हैं एक भीड़;
हम लेकिन साथ भी नहीं—
मेरी प्रतिध्वनि,
मेरी परछाईं,
और मैं...

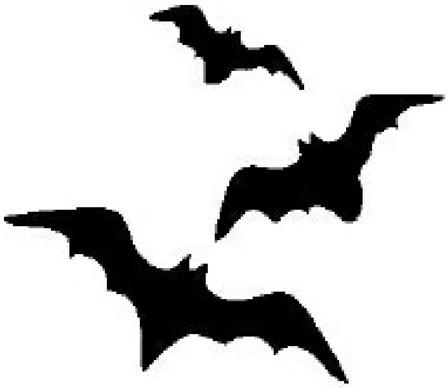

रीगल पर पुनर्मिलन

अगर आप भूत देखना चाहते हैं तो बस नयी दिल्ली के रीगल सिनेमा पर बीस मिनट के लगभग खड़े हो जाइये। भव्य पुराने सिनेमा हॉल का बाहरी हिस्सा उनके लिए एक महत्त्वपूर्ण जगह है। देर से या जल्दी, आप भीड़ में एक जाना-पहचाना चेहरा देखेंगे। इससे पहले कि आप याद कर पायें कि यह कौन था या कौन हो सकता है, वह गायब हो जायेगा और आप खड़े सोचते रह जायेंगे कि वह वास्तव में वही कोई था या नहीं... क्योंकि वह कोई तो कुछ साल पहले ही मर चुका था।

रीगल 1940 के पूर्वार्ध में बहुत ही पॉश इलाका हुआ करता था। तब मैंने अपने पिता के साथ वहाँ अपनी पहली फ़िल्म देखी थी। कनॉट प्लेस के सिनेमाघर तब अपने नयेपन की वजह से जाने जाते थे और हॉलीवुड और ब्रिटेन की नयी-नयी फिल्मों का प्रदर्शन किया करते थे। हिन्दी फ़िल्म देखने के लिए आपको कश्मीरी गेट या चाँदनी चौक तक जाना होता था।

बाद के सालों में मैं कई बार रीगल के अन्दर और बाहर गया और इसलिए मैं पुराने परिचितों से मिलने या जाने-पहचाने चेहरों की झलक अन्दर हॉल या बाहर सीढ़ियों के पास देखने का अभ्यस्त हो चला था।

एक बार गलती से मैं खुद भूत मान लिया गया।

मैं उन दिनों तीस साल का था। हॉल की सीढ़ियों के बाहर किसी का इन्तज़ार कर रहा था, जब एक भारतीय मेरे पास आया और जर्मन में कुछ कहा या मुझे वह भाषा जर्मन जैसी लगी।

“मुझे माफ़ कीजिये,” मैंने कहा, “मुझे समझ नहीं आया। आप मुझसे अंग्रेज़ी या हिन्दी में बात करें।”

“क्या आप हैन्स हो? हम पिछले साल फ्रैंकफर्ट में मिले थे।”

“मुझे माफ़ करें। मैं कभी फ्रैंकफर्ट नहीं गया।”

“आप बिलकुल हैन्स जैसे दिखते हैं।”

“शायद मैं उसका जुड़वाँ हूँ। या शायद मैं उसका भूत हूँ!”

मेरा मज़ाक सुनकर वह बिलकुल भी नहीं हँसा। वह थोड़ा परेशान दिखा और पीछे हट गया, उसके चेहरे पर भय की छाया दौड़ गयी। “नहीं, नहीं,” वह हकलाया। “हैन्स ज़िन्दा है, तुम उसके भूत नहीं हो सकते!”

“मैं बस मज़ाक कर रहा था।”

लेकिन वह घूमा, और जाकर तेज़ी से भीड़ में मिल गया। वह उत्तेजित दिख रहा था। मैंने दार्शनिक भाव से अपने कन्धे उचकाए। “तो मेरा एक जुड़वाँ है हैन्स नाम का,” मैंने विचार किया, “शायद मैं किसी दिन उससे टकराऊँगा।”

मैंने इस घटना का ज़िक्र सिर्फ़ यह दिखाने के लिए किया है कि हममें से अधिकतर के मिलते-जुलते चेहरे वाले लोग हैं, और कई बार हम वही देखते हैं जो हम देखना चाहते हैं या खोज रहे होते हैं, जबकि करीब से देखने पर, समानता उतनी चौंकाने वाली नहीं होती है।

~

लेकिन जब किशन मुझे मिला तो मुझे उसे पहचानने में कोई गलती नहीं हुई। मैंने उसे पाँच या छह सालों से नहीं देखा था, लेकिन वह लगभग पहले जैसा ही दिख रहा था। घनी भवें जिन्हें पूर्ण करतीं सौम्य आँखें, दृढ़ ठोड़ी जिसे पूर्ण करती मोहक मुस्कान। लड़कियाँ उसे हमेशा पसन्द करती थीं, और वह यह जानता था—और उन्हें अपने पीछे आता देखकर वह बहुत सन्तुष्ट होता था।

हमने एक फ़िल्म देखी—मुझे लगता है वह शायद—‘दी विंड कैन नॉट रीड’ थी—और फिर हम पुराने स्टैंडर्ड रेस्तराँ तक टहलते आये थे, डिनर का ऑर्डर दिया और पुराने दिनों को याद करते रहे थे जबकि रेस्तराँ का छोटा-सा बैंड 1950 के भावुक गाने बजा रहा था।

हाँ, हमने पुराने दिनों के बारे में बात की—जब हम शिमला में बड़े हो रहे थे, जहाँ हम एक-दूसरे के पड़ोस में रहा करते थे, पड़ोसी के लीची के बागान का संधान करते, शहर में साइकिल लेकर घूमते थे जब स्कूटर ईज़ाद नहीं हुआ था, मैदान में फुटबॉल खेलते या फिर कम्पाउंड की दीवार पर बिना किसी काम के बैठे रहते। मैंने तब स्कूल खत्म किया ही था और मेरे आगे पूरा एक साल पड़ा हुआ था, जब तक विदेश जाने का समय नहीं हो जाता। किशन के पिता, तब सिविल इंजीनियर, स्थानान्तरण आदेश के अधीन थे इसलिए किशन को भी तत्काल स्कूल नहीं जाना था।

वह एक आरामपसन्द लड़का था, मेरे पीछे लगे रहने से खासा सन्तुष्ट। मेरी साहित्यिक अभिरुचि थी, उसके पास कोई स्पष्ट लक्ष्य नहीं था। हालाँकि बड़े होने पर उसके वृहत अध्ययन और विद्वता से मैं काफ़ी चकित हुआ।

एक दिन जब हम रायपुर नहर के किनारे साइकिल चला रहे थे, वह रास्ते से

फिसलकर अपनी साइकिल सहित नहर में गिर गया। पानी बस कमर तक था, लेकिन उसका प्रवाह बहुत तेज़ था और मुझे उसकी मदद के लिए पानी में कूदना पड़ा। कोई बहुत बड़ा खतरा नहीं था लेकिन हमें साइकिल को नहर से निकालने में थोड़ी मुश्किल हुई।

बाद में उसने तैरना सीख लिया।

लेकिन वह तब जब मैं वहाँ से जा चुका था...

मेरी माँ इस बात के लिए आश्वस्त थीं कि मेरे लिए इंग्लैंड में बेहतर सम्भावनाएँ हैं और उन्होंने मुझे न्यू जर्सी में रहने वाले अपने रिश्तेदार के पास भेज दिया, और उसके पूरे चार साल बाद ही मैं उस धरती पर वापस लौट पाया, जिसकी वास्तव में मुझे बहुत परवाह थी। उस समय तक शिमला के बहुत से मेरे दोस्त शहर छोड़ चुके थे; यह वह जगह नहीं थी जहाँ स्कूल खत्म होने के बाद आप बहुत कुछ कर सकते हैं। किशन मुझे कलकत्ता से चिट्ठियाँ लिखता, जहाँ वह इंजीनियरिंग कॉलेज में था। फिर वह विदेश पढ़ने चला गया। मुझे समय-समय पर उसका हाल मिलता रहता। वह खुश था। वह शान्त स्वभाव का था और अक्सर लोगों से उसकी अच्छी बनती थी। उसकी एक प्रेमिका भी थी, यह उसने मुझे बताया था।

'लेकिन,' उसने लिखा था, 'तुम मेरे सबसे पुराने और सबसे अच्छे दोस्त हो। मैं जहाँ भी जाऊँगा, हमेशा तुमसे मिलने वापस आऊँगा।'

~

और उसने बिलकुल वही किया भी। मैं जब दिल्ली में था तब हम कई बार मिले और एक बार साथ दोबारा शिमला भी गये और रायपुर रोड पर चहलकदमी की और क्लॉक टॉवर के पीछे टिक्कियाँ और गोलगप्पे भी खाये। लेकिन पुराने परिचित चेहरे गुम थे। रास्तों पर बहुत अधिक निर्माण हो गया था और अत्यधिक भीड़ थी। लीची बागान तेज़ी से गायब हो रहा था। जब हम दिल्ली लौटे, किशन ने मुम्बई के नौकरी प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। हम अनियमित तौर पर जुड़े तो रहे लेकिन हमारे रास्ते और जीवन ने बिलकुल अलग दिशा ले ली। वह एक इंजीनियरिंग फर्म से जुड़कर अपना भविष्य बनाने में लगा हुआ था, मैं पहाड़ों पर वापस लौट गया बिलकुल एक अलग तरह के लक्ष्य के साथ—लिखने के लिए और दस से पाँच के मेज़ से बँधे हुए कार्य से मुक्त रहने के लिए।

समय बीतता गया और मुझे किशन की कोई भी खबर मिलनी बन्द हो गयी।

कुछ साल बाद, मैं दिल्ली स्थित इंडिया इंटरनैशनल सेंटर की लॉबी में खड़ा था तो तीस पार की एक आकर्षक जवान स्त्री मेरे पास आयी और बोली, "हॅलो रस्टी, मुझे पहचाना नहीं? मैं मंजू हूँ। मैं तुम्हारे, किशन और रणवीर के घर के पास रहती थी जब हम बच्चे थे।"

मैंने तब उसे पहचान लिया क्योंकि वह हमेशा से एक सुन्दर लड़की रही थी, शिमला मॉल रोड की 'सुन्दरी'।

हम बैठे और हमने पुराने और नये दिनों के बारे में बातें कीं और मैंने उसे बताया कि

मुझे बहुत सालों से किशन की कोई खबर ही नहीं।

"क्या तुम नहीं जानते?" उसने कहा, "वह लगभग दो साल पहले नहीं रहा।"

"क्या हुआ?" मैं हताश हो गया, क्रोधित भी कि मुझे इस बारे में कुछ नहीं मालूम। "वह अभी अड़तीस साल से ज़्यादा का नहीं रहा होगा?"

"यह गोवा के समुद्र तट पर हुई एक दुर्घटना थी। एक बच्चा मुश्किल में पड़ गया और किशन उसे बचाने के लिए पानी में गया। उसने उस नन्ही लड़की को तो बचा लिया लेकिन जब वह तैर कर किनारे पर वापस आ रहा था, उसे दिल का दौरा पड़ा। उसकी मौत वहीं तट पर ही हो गयी। ऐसा लगता है कि उसका दिल हमेशा से ही कमज़ोर था। यह परिश्रम उसके लिए बहुत भारी पड़ा।"

मैं शान्त रहा। मैं जानता था वह बहुत अच्छा तैराक बन चुका था, लेकिन मैं उसके दिल के बारे में कुछ नहीं जानता था।

"क्या वह शादीशुदा था?" मैंने पूछा।

"नहीं, वह हमेशा से एक योग्य कुँवारा लड़का था।"

मंजू से दोबारा मिलना अच्छा लगा, हालाँकि उसने मुझे एक बुरी खबर दी। उसने मुझे बताया कि वह अपनी शादीशुदा ज़िन्दगी से काफ़ी खुश है और उसका एक छोटा बेटा है। हमने एक-दूसरे से वादा किया कि हम सम्पर्क में रहेंगे।

मैंने कनॉट प्लेस के लिए टैक्सी ली और रीगल पर उतरने का निश्चय किया। मैं वहाँ थोड़ी देर अनिश्चय में खड़ा रहा कि क्या करूँ, कहाँ जाऊँ। शो शुरू होने का समय लगभग हो चुका था और आस-पास बहुत सारे लोगों की भीड़ जमा हो गयी थी।

मुझे लगा किसी ने मेरा नाम पुकारा। मैंने अपने आस-पास देखा और भीड़ में किशन था।

लेकिन तभी एक लम्बी-चौड़ी महिला ऑटो रिक्शा पर चढ़ती मेरे सामने आ गयी और जब तक मैं दोबारा ठीक से देख पाता, मेरा पुराना दोस्त गायब हो चुका था।

क्या मैंने उससे मिलते-जुलते चेहरे के किसी व्यक्ति को देखा या उसके जुड़वाँ को! या उसने अपना वादा निभाया मुझसे दोबारा आकर एक बार फिर मिलने का?

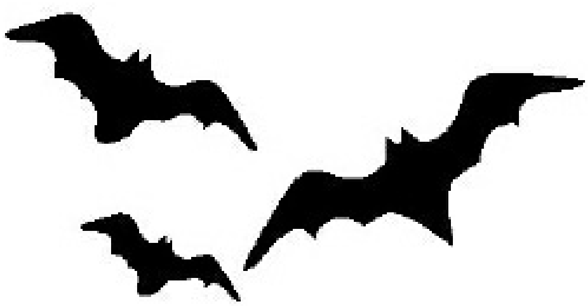

विल्सन का पुल

लकड़ी का पुराना पुल टूट चुका था, और अब एक लोहे का पुल भागीरथी पर लटका हुआ था जो गंगोत्री से नीचे पहाड़ों के बीच के दर्रे से होते हुए गुज़रती थी। लेकिन गाँववाले आपको बतायेंगे कि आप अब भी विल्सन के घोड़े की वह टाप सुन सकते हैं जब वह अपने डेढ़ सौ साल पहले बनाये पुल पर उसे भगाया करता था। उस समय लोग इसके सुरक्षित होने को लेकर आशंकित थे, इसलिए इसकी मज़बूती दिखाने के लिए विल्सन घोड़े पर बैठकर इस पर से बार-बार गुज़रा करता था। उस पुल का कुछ हिस्सा अब भी नदी के दूर किनारे पर देखा जा सकता है और विल्सन और उसकी सुन्दर पहाड़ी वधू गुलाबी की दंतकथा, अब भी इस क्षेत्र में काफ़ी प्रचलित है।

मैं अपने कुछ दोस्तों के साथ नदी किनारे जंगल के पुराने रेस्ट हाउस में ठहरा हुआ था। मेरे साथ रे दम्पति जिनकी नयी-नयी शादी हुई थी और दत्ता दम्पति थे जिनकी शादी काफ़ी साल पहले हुई थी। युवा रे दम्पति की बहुत लड़ाई होती थी, जिसे देखकर दत्ता दम्पति चिन्तित कम और मनोरंजन ज़्यादा किया करते थे। मैं उनके समूह का हिस्सा था, लेकिन फिर भी बहुत हद तक बाहरी था। कुँवारा होने की वजह से मैं उनके ज़्यादा महत्त्व का नहीं था और एक विवाहित जोड़े के सलाहकार की तरह तो मैं उनके किसी भी काम का नहीं था।

मैं अपना अधिकांश समय नदी किनारे घूमने में या घाटी को घेरे खड़े देवदार या सिन्दूर के घने जंगलों की खाक छानने में बिताता। ये वही पेड़ थे जिनकी वजह से विल्सन और उसके संरक्षक टेहरी के राजा का भाग्य चमका था। उन्होंने विशाल लकड़ी के लट्ठों को पानी में बहाकर समतल में बने टिंबर यार्ड में पहुँचाकर घने जंगलों का खूब दोहन किया।

एक बार मैं देर शाम रेस्ट हाउस लौट रहा था, आधा पुल ही पार किया होगा कि दूसरे किनारे पर मैंने एक आकृति देखी जो कुहरे से निकलकर आ रही थी। वह एक औरत थी जिसने पहाड़ों में पहनी जाने वाली सादी साड़ी पहन रखी थी, उसके खुले बाल उसके कन्धों पर बिखरे थे। ऐसा लगा कि उसने मुझे नहीं देखा और पुल की रेलिंग पर

झुककर काफ़ी नीचे बहता तेज़ पानी का बहाव देखने लगी और फिर मुझे चकित और भयभीत करती हुई वह रेलिंग पर चढ़ी और पानी में कूद गयी।

मैं उसे आवाज़ देता आगे की ओर दौड़ा लेकिन रेलिंग तक जाकर मुझे सिर्फ़ नीचे झागवाले पानी में उसका गिरा हुआ शरीर दिखा जिसे धारा तेज़ी से बहाती नीचे की ओर लिये जा रही थी। चौकीदार का कमरा थोड़ी दूर था। दरवाज़ा खुला हुआ था। चौकीदार राम सिंह बिस्तर पर अधलेटा हुक्का पी रहा था।

"कोई अभी-अभी पुल से कूदा है," मैंने हाँफते हुए कहा, "नदी ने उसे अपने साथ बहा लिया!"

चौकीदार चुपचाप रहा, "फिर से गुलाबी," उसने जैसे खुद से ही कहा हो; फिर मुझसे पूछा, "क्या आपने उसे ठीक से देखा?"

"हाँ, एक खुले लम्बे बालों वाली औरत—लेकिन मैंने उसका चेहरा ठीक से नहीं देखा।"

"यह ज़रूर गुलाबी रही होगी। बस एक भूत, मेरे प्रिय सर। चिन्ता करने की कोई बात नहीं। अक्सर कोई-न-कोई उसे नदी में कूदते देखता है। आप बैठिये," उसने एक पुरानी, जीर्ण आरामकुर्सी की ओर संकेत करते हुए कहा, "आप आराम से बैठिये और मैं आपको उसके बारे में बताता हूँ।"

मैं बिलकुल भी शान्त महसूस नहीं कर रहा था, लेकिन राम सिंह की सुनने बैठ गया जो मुझे गुलाबी की आत्महत्या की कहानी सुना रहा था। मेरे लिए एक गिलास गर्म मीठी चाय बनाने के बाद वह अपनी लम्बी घुमावदार कथा सुनाने लगा कि किस तरह विल्सन, एक अंग्रेज़ खोजी अपना भाग्य तलाशता कस्तूरी मृग के संधान में जुटा था जब उसका गाँव के रास्ते में गुलाबी से सामना हुआ। लड़की की गहरी हरी आँखें और आड़ू जैसे रंग पर वह मंत्रमुग्ध हो गया और उसने हर सम्भव उपाय लगाकर उसके परिवार को जान लिया। वह उसके प्यार में था कि बस उसे सुन्दर और प्राप्ति योग्य समझ रहा था? यह हम कभी नहीं जान पायेंगे। अपनी यात्रा और जोखिम भरे कारनामों के दौरान उसे बहुत सारी औरतें मिली थीं लेकिन गुलाबी अलग थी। बच्चों जैसी निष्पाप और उसने निर्णय किया कि वह उसी से शादी करेगा। उसके दीन-हीन परिवार को कोई आपत्ति नहीं थी। शिकार की अपनी सीमाएँ थीं और विल्सन को इस क्षेत्र के घने जंगलों में बिखरी सम्पदा को बँटोरना ज़्यादा लाभदायक सौदा लगा। कुछ सालों में उसने अथाह सम्पत्ति खड़ी कर ली, उसने हरसिल में एक बड़ा लकड़ी का मकान बनवाया, दूसरा देहरादून में और तीसरा मसूरी में। गुलाबी के पास वह सब कुछ था जो कुछ उसने चाहा होगा, दो स्वस्थ नन्हे बेटों सहित। जब वह काम से बाहर होता, वह बच्चों की देखभाल करती और हरसिल के अपने विशाल सेब के बागान की देखभाल करती।

और फिर वह बुरा दिन आया जब विल्सन अंग्रेज़ औरत रूथ से मसूरी माल रोड पर मिला और यह निर्णय लिया कि उसे भी अपने प्रेम और सम्पत्ति का हिस्सेदार बनाना चाहिए। एक बढ़िया घर उसे भी उपलब्ध कराया गया। जो समय वह हरसिल में गुलाबी और बच्चों के साथ बिताता था, वह बहुत कम हो गया। व्यापार सम्बन्धी काम—अब वह एक बैंक के मालिकों में से एक था—उसे एक फैशनेबल पहाड़ी रिज़ॉर्ट में रखते। वह एक

लोकप्रिय मेज़बान था और अपने दोस्तों और सहकर्मियों को दून की शिकार पार्टियों पर ले जाया करता था।

गुलाबी ने अपने बच्चों को गाँव के तौर-तरीकों से पाला था। उसने विल्सन के उस मसूरी वाली औरत के साथ चल रहे विलास की कहानियाँ सुनी थीं और उसकी एक विरल यात्रा के दौरान इस मामले में उससे सवाल किये और अपनी नाराज़गी दिखाते हुए उस दूसरी औरत को छोड़ने के लिए कहा। विल्सन ने उसकी बात पर ध्यान नहीं देते हुए उसे फालतू की बकवास पर ध्यान नहीं देने को कहा। यह कहकर जब वह घूमा, गुलाबी ने बन्दूकों की मेज़ पर रखी फ्लिंटलॉक पिस्तौल उठायी और उस पर एक गोली दाग़ दी। निशाना चूक गया और उसके आईने को चकनाचूर कर दिया। गुलाबी घर से निकलकर बागान से होते हुए जंगल में भागी और वहाँ से नीचे खड़ी ढलान वाले रास्ते से उस पुल पर जिसे विल्सन ने ही तीन या चार साल पहले बनाया था। जब विल्सन सामान्य हुआ, अपने घोड़े पर चढ़कर उसको खोजने निकला। लेकिन बहुत देर हो चुकी थी। गुलाबी पहले ही पुल से बहुत नीचे हरहराते पानी में कूद चुकी थी। उसका शरीर नीचे धारा में एक-दो मील दूर कुछ पत्थरों में फँसा मिला।

यह कहानी थी जो राम सिंह ने मुझे सुनायी, अपनी तरफ़ से बढ़ा-चढ़ा कर और घुमा-फिरा कर। मुझे लगा कि इस शाम को रेस्ट हाउस में आग के किनारे अपने दोस्तों को सुनाने के लिए यह बढ़िया कहानी होगी। उन्हें कहानी बहुत प्रभावी लगी लेकिन जब मैंने उन्हें बताया कि मैंने गुलाबी का भूत देखा है, उन्हें लगा कि मैं अपनी तरफ़ से कहानी को थोड़ा बढ़ा-चढ़ा कर बता रहा हूँ। मिसेज दत्ता को यह दुःखद कहानी लगी। युवा मिसेज रे के अनुसार गुलाबी मूर्ख थी, “वह एक सीधी-सादी लड़की थी,” मिसेज दत्ता ने अपना विचार रखा, “उसने उसी तरह प्रतिक्रिया दी जो वह जानती थी...”

“पैसे खुशी नहीं खरीद सकते,” मिसेज रे ने कहा। “नहीं,” मिसेज दत्ता ने कहा, “लेकिन यह आपके लिए बहुत सारी सुविधाएँ खरीद सकते हैं।” मिसेज रे दूसरी चीज़ों के बारे में भी बात करना चाहती थीं, इसलिए मैंने विषय बदल दिया। किसी कुँवारे के लिए यह थोड़ी परेशानी वाली बात हो सकती है कि उसे अपनी शाम दो शादीशुदा जोड़ों के साथ बितानी पड़े। वहाँ अन्दर ही अन्दर बहुत कुछ चल रहा होता है, जिससे वह अवगत तो होता है लेकिन उससे निबटना नहीं जानता।

उसके बाद मैं पुल पर बहुत बार गया। दिन में वहाँ ट्रैफिक की व्यस्तता होती लेकिन शाम ढलते ही उस पर बहुत कम वाहन रह जाते और पैदल यात्री तो कभी-कभी ही कोई गुज़रता। नीचे दर्रे से धुँध उठती और पुल के दूसरे किनारे को बिलकुल अदृश्य कर देती थी। मैं शाम को वहाँ घूमने को प्राथमिकता देता, मन में आधी उम्मीद और आधी चाह लिये कि गुलाबी के भूत से फिर सामना हो। यह उसका चेहरा था जो मैं दोबारा ज़रूर देखना चाहता था, क्या वह अब भी उतनी ही सुन्दर होगी, जितना उसके बारे में कहा जाता है?

जो हमारे जाने से पहले की शाम घटा, वह मुझे उसके बाद काफ़ी लम्बे समय तक परेशान करने वाला था।

हमारे जाने के दिन जब करीब आ रहे थे, थोड़ा माहौल शान्त हो गया था। ऐसा

लगता था जैसे रे दम्पति ने अपने मतभेद सुलझा लिये हैं, हालाँकि वे ज़्यादा बातें नहीं कर रहे थे। मिस्टर दत्ता अपने दिल्ली के ऑफ़िस में लौटने के लिए बेताब थे। मिसेज दत्ता का गठिया का दर्द शुरू हो गया था। मैं भी बेचैन था, मसूरी में अपने लिखने की मेज़ पर लौटने के लिए।

उस शाम मैंने पुल पर आखिरी बार घूमने की सोची ताकि पहाड़ों की गर्मी की रात की ठंडी हवा का आनन्द ले सकूँ। चाँद नहीं निकला था और बहुत ज़्यादा अँधेरा था, हालाँकि पुल के दोनों सिरों पर जलते लैम्प से इतनी रोशनी हो रही थी जो उसे पार करने वाले लोगों के लिए काफ़ी थी।

मैं पुल के बीच में खड़ा था, सबसे अंधकार वाले हिस्से में, नदी के गरजते हुए खाई में गिरने को सुन रहा था, जब मैंने साड़ी में लिपटी आकृति को लैम्प की रोशनी में उभरते देखा जो रेलिंग की तरफ़ बढ़ रही थी।

एकदम से मैं चिल्ला पड़ा, “गुलाबी!”

वह मेरी तरफ़ आधी घूमी लेकिन मैं उसे ठीक से देख नहीं सका। हवा से उसके बाल पूरे चेहरे पर उड़ रहे थे और मैं सिर्फ़ उसकी अस्वाभाविक रूप से चमकती आँखें ही देख सका। मैंने पानी में छपाक की आवाज़ सुनी जब उसकी देह नीचे पानी में गिरी।

फिर एक बार मैंने खुद को रेलिंग के उस हिस्से की ओर दौड़ते पाया जहाँ से वह कूदी थी। और फिर कोई और भी उसी जगह की ओर दौड़ता दिखा, रेस्ट हाउस की तरफ़ से। यह युवा मिस्टर रे थे।

“मेरी पत्नी!” वह चिल्लाये, “क्या आपने मेरी पत्नी को देखा?”

वह रेलिंग के पास भागे आये और नीचे बहते पानी को घूरने लगे।

“देखिये! वहाँ है वह!” उन्होंने पानी में डूबती उतरती एक असहाय आकृति की ओर इशारा किया।

हम नीचे ढलवाँ किनारे से होते हुए नदी की ओर भागे लेकिन धारा उसे बहा ले गयी। पत्थरों और झाड़ियों से उलझते हुए हमने उस डूबती स्त्री को बचाने की पागलों की तरह कोशिश की, लेकिन उस घाटी में नदी गरजते हुए प्रचंड वेग की तरह थी, और लगभग एक घंटे के बाद ही हम एक लकड़ी के लट्ठे में चिपका हुआ बेचारी मिसेज रे का शरीर निकाल सके।

उनका दाह संस्कार उसी जगह से थोड़ी दूर किया गया और हम अपने-अपने घरों में उदास और दुःखी लौटे, इस अनुभव से अगर परिपक्व नहीं तो परिष्कृत ज़रूर होकर।

अगर आप कभी उस क्षेत्र में जायें और देर शाम को उस पुल से गुज़रने का निर्णय लें तो शायद गुलाबी का भूत देख सकते हैं या विल्सन के घोड़े की टाप सुन सकते हैं जब वह पुल पर उसे खोजता घूम रहा था। या आप शायद मिसेज रे का भूत देख सकते हैं या उनके पति की कातर चीख सुन सकते हैं। या कोई और लोग भी हो सकते हैं। कौन जानता है?

पुखराज

हिमालय की चीड़ से भरी ढलानों को निहारते हुए विश्वप्रसिद्ध संगीत दी ब्लू दन्यूब की स्वरलहरियों को सुनना भी एक विचित्र अनुभव था। दोनों दो अलग दुनिया की चीज़ें थीं लेकिन फिर भी वाल्ट्ज़ का संगीत उस माहौल के लिए ही बना हुआ लगता था। मंद बहती हवा में हिलती चीड़ों की डालियाँ संगीत की लय के साथ कदमताल करती प्रतीत हो रही थीं। रिकॉर्ड प्लेयर नया था लेकिन रेकॉर्ड्स पुराने थे, माल रोड के पीछे कबाड़ी की दुकान से लिये गये।

चीड़ की कतारों के नीचे सिन्दूर के पेड़ लगे थे, उनमें से एक खास सिन्दूर के पेड़ ने मेरा ध्यान खींचा। यह उन सभी पेड़ों से बड़ा था और कॉटेज के नीचे एक छोटे से टीले पर अकेला खड़ा था। हवा इतनी तेज़ नहीं थी कि इसके पुराने, मज़बूत तनों को हिला सके लेकिन वहाँ कुछ हिल रहा था, पेड़ पर धीरे-धीरे झूलता, वाल्ट्ज़ के संगीत की धुन पर नाचता हुआ।

वहाँ कोई था जो पेड़ से टँगा हुआ था।

एक रस्सी हवा में लटकी नाच रही थी, वह शरीर धीरे-धीरे इधर-उधर घूम रहा था। जब वह मेरी तरफ़ घूमा तो मैंने एक लड़की का चेहरा देखा। उसके बाल खुले थे। उसकी आँखें निस्तेज थीं, हाथ और पैर बेजान थे; उसका शरीर झूल रहा था और वाल्ट्ज़ का संगीत बज रहा था।

मैंने प्लेयर बन्द किया और नीचे भागा।

पेड़ों के बीच बने रास्ते से नीचे उस घास के टीले की ओर जहाँ वह बड़ा सिन्दूर का पेड़ था।

एक लम्बी पूँछ वाली नीलकंठ चिड़िया ने डर कर तेज़ी से उड़ान भरते हुए नीचे घाटी की ओर छलाँग लगाई। पेड़ पर कोई नहीं था, कुछ भी नहीं। एक बड़े से तने ने टीले को आधा घेर रखा था और मैं उस तक पहुँच कर उसे छू सकता था। एक लड़की बिना

पेड़ पर चढ़े उस तने तक नहीं पहुँच सकती थी।

जब मैं वहाँ खड़ा उन शाखाओं को देख रहा था, किसी ने पीछे से टोका,

"आप क्या देख रहे हैं?"

मैं चौंक कर मुड़ा। वह मुझसे मुखातिब एक लड़की थी, ज़िन्दा, स्वस्थ, चमकदार आँखों और सम्मोहक मुस्कान के साथ। वह बहुत ही प्यारी थी। मैंने कई वर्षों से इतनी खूबसूरत लड़की नहीं देखी थी।

"तुमने मुझे चौंका दिया," मैंने कहा। "तुम अचानक आयीं।"

"क्या आपने कुछ देखा—पेड़ पर?" उसने पूछा।

"मुझे लगा मैंने किसी को खिड़की से देखा है इसलिए मैं नीचे आया। क्या तुमने कुछ देखा?"

"नहीं" उसने अपना सिर हिलाया, मुस्कुराहट थोड़ी देर के लिए उसके चेहरे से हट गयी थी। "मैं कुछ नहीं देखती लेकिन दूसरे लोग देखते हैं—कई बार।"

"क्या देखते हैं वे?"

"मेरी बहन को।"

"तुम्हारी बहन को?"

"हाँ। उसने खुद को इस पेड़ से लटका लिया था। बहुत साल पहले। लेकिन कई बार आप उसे वहाँ लटका देख सकते हैं।"

वह ऐसे बोल रही थी जैसे जो हुआ वह उसके लिए कोई बहुत दूर की बात थी।

हम दोनों पेड़ से कुछ दूर चले आये थे। टीले के ऊपर, अब उपयोग में नहीं लायी जा रही टेनिस कोर्ट में (अंग्रेज़ों के समय के हिल स्टेशन की स्मृति) एक पत्थर की बैंच पड़ी थी। वह उस पर बैठ गयी और कुछ पलों की हिचकिचाहट के बाद मैं भी उसके बगल में बैठ गया।

"क्या तुम पास ही रहती हो?" मैंने पूछा।

"पहाड़ी के ऊपर। मेरे पिता की एक छोटी बेकरी है।"

उसने मुझे अपना नाम बताया— हमीदा। उसके दो छोटे भाई थे।

"तुम बहुत छोटी रही होगी जब तुम्हारी बहन नहीं रही।"

"हाँ। लेकिन वह मुझे याद है। वह बहुत सुन्दर थी।"

"तुम्हारी तरह।"

वह अविश्वास से हँसी, "ओह, मैं तो उसकी तुलना में कुछ भी नहीं। आपको मेरी बहन को देखना चाहिए था।"

"उसने खुद को क्यों खत्म कर लिया?"

"क्योंकि वह जीना नहीं चाहती थी। यही एक कारण था, नहीं? उसकी शादी होने वाली थी लेकिन वह किसी और को प्यार करती थी, कोई और जो उसके धर्म का नहीं था। यह एक पुरानी कहानी है, जिसका अन्त हमेशा दुःखद ही होता है। है न!"

“हमेशा नहीं। लेकिन उस लड़के का क्या हुआ जिससे वह प्यार करती थी? क्या उसने भी खुद को मार लिया?”

“नहीं, उसने दूसरी जगह नौकरी कर ली। नौकरी पाना आसान नहीं होता, है न?”

“मैं नहीं जानता। मैंने कभी नौकरी के लिए कोशिश नहीं की।”

“फिर आप क्या करते हैं?”

“मैं कहानी लिखता हूँ।”

“क्या लोग कहानी खरीदते हैं?”

“क्यों नहीं? अगर तुम्हारे पिता ब्रेड बेच सकते हैं, तो मैं भी कहानियाँ बेच सकता हूँ।”

“लोगों को रोटी ज़रूर चाहिए। वे कहानी के बिना रह सकते हैं।”

“नहीं, हमीदा, तुम गलत हो। लोग कहानियों के बिना नहीं रह सकते।”

~

हमीदा! मैं उसे प्यार करने से खुद को रोक नहीं सका। सिर्फ़ प्यार करने से। कोई इच्छा या वासना मेरे मन में नहीं आयी थी। ऐसा कुछ भी नहीं था। मैं उसे सिर्फ़ देखकर ही खुश था, उसे देखना जब वह मेरे कॉटेज के बाहर घास पर बैठी होती, उसके होंठ जंगली बेरियों के रस में सने होते। वह बोलती जाती—अपने दोस्तों, अपने कपड़ों, अपनी प्रिय चीज़ों के बारे में।

“क्या तुम्हारे माता-पिता को बुरा नहीं लगेगा अगर तुम यहाँ हर दिन आओगी?” मैंने पूछा।

“मैंने उन्हें बताया है कि आप मुझे पढ़ा रहे हैं।”

“क्या पढ़ा रहा हूँ?”

“उन्होंने नहीं पूछा। आप मुझे कहानी सुना सकते हैं।”

तो मैंने उसे कहानियाँ सुनायीं।

वह गर्मियों के दिन थे।

सूरज की किरणें उसकी तीसरी उँगली में पहनी गयी अँगूठी पर चमक रही थीं—एक पारदर्शी सुनहरा पुखराज, चाँदी में जड़ा हुआ।

“यह बहुत खूबसूरत अँगूठी है,” मैंने कहा।

“आप पहनिये इसे,” उसने तुरन्त अपनी उँगली से उसे उतारते हुए कहा। “यह आपको अच्छे विचार देगी। यह अच्छी कहानियाँ लिखने में आपकी मदद करेगी।”

उसने अँगूठी मेरी छोटी उँगली में पहना दी।

“मैं इसे कुछ दिन पहनूँगा,” मैंने कहा। “फिर तुम मुझे इसे लौटाने देना।”

उस दिन उसने आने का वादा किया था। मैं नीचे पहाड़ों की तली में धारा की ओर जाने वाले रास्ते पर उतर गया। वहाँ मुझे हमीदा मिली, पानी के ऊपर पथरीले किनारों से

लगी छायादार जगह में पत्तियाँ चुनती हुई।

"तुम इनका क्या करोगी?" मैंने पूछा।

"यह एक खास तरह की पत्ती है। आप इसे सब्ज़ी की तरह पका सकते हैं।"

"यह स्वादिष्ट है?"

"नहीं, लेकिन यह गठिया के लिए अच्छी है।"

"क्या तुम्हें गठिया है?"

"अरे नहीं। यह मेरी दादी के लिए है, वह बहुत बूढ़ी हैं।"

"झरने के ऊपर और पत्तियाँ हैं," मैंने कहा, "लेकिन हमें पानी में उतरना होगा।"

हमने अपने जूते उतारे और नदी के पानी में उतर गये। घाटी धीरे-धीरे अंधकार में समा रही थी और अस्त हो चुके सूरज के साथ अब दिखाई देनी भी बन्द हो गयी थी। पानी के ठीक किनारे पत्तियाँ उगी हुई थीं। हम उन्हें उठाने के लिए झुके लेकिन खुद को एक-दूसरे की बाँहों में पाया और धीरे से उतर आये पत्तियों के कोमल बिछौने पर, जैसे कि किसी सपने में हों। दूर अँधेरे में चिड़िया की मीठी आवाज़ मधुर गीत में बदल रही थी।

ऐसा लग रहा था जैसे गा रही हो, "यह समय नहीं जो बीत रहा, ये तो मैं और तुम हैं। यह तो मैं और तुम हैं..."

~

मैंने अगले दिन उसका इन्तज़ार किया लेकिन वह नहीं आयी। कई दिन बीत गये उसे देखे हुए।

क्या वह बीमार हो गयी? क्या उसे घर में रखा हुआ है? क्या उसे बाहर कहीं भेज दिया गया? मैं यह भी नहीं जानता था कि वह कहाँ रहती थी, इसलिए किसी से पूछ भी नहीं सका। पूछना चाहता भी तो क्या पूछता?

फिर एक दिन मैंने लगभग एक मील नीचे सड़क पर एक छोटी-सी चाय की दुकान से एक लड़के को ब्रेड और पेस्ट्री लाते देखा। उसकी आँखों के ऊपर को उठे तिरछे कटाव में मुझे हमीदा की थोड़ी झलक मिली। जब वह बाहर निकला तो मैंने ऊपर पहाड़ी तक उसका पीछा किया। उस तक पहुँच कर मैंने पूछा—"क्या तुम्हारी बेकरी है?"

उसने खुश होकर सिर हिलाया, "हाँ। क्या आपको कुछ चाहिए—ब्रेड, बिस्कुट, केक? मैं आपके घर पहुँचा सकता हूँ?"

"ज़रूर। लेकिन क्या तुम्हारी एक बहन नहीं? एक लड़की जिसका नाम हमीदा है?"

उसके चेहरे के भाव बदल गये। अब वह मेरे दोस्ताना व्यवहार नहीं कर रहा था। वह कुछ उलझा हुआ-सा और भयभीत दिख रहा था।

"आप क्यों जानना चाहते हैं?"

"मैंने उसे कुछ समय से नहीं देखा है।"

"आप उसे देख भी नहीं सकते।"

“तुम्हारा मतलब है वह चली गयी?”

“क्या आप नहीं जानते? आप ज़रूर बहुत समय से बाहर होंगे। बहुत साल पहले ही वह गुज़र गयी। उसने आत्महत्या कर ली। आपने इस बारे में नहीं सुना था?”

“लेकिन क्या वह उसकी बहन नहीं थी—तुम्हारी दूसरी बहन?”

“मेरी एक ही बहन थी—हमीदा—और वह मर गयी जब मैं बहुत छोटा था। यह एक पुरानी कहानी है, इस बारे में किसी और से पूछें।”

वह मुड़ा और तेज़ी से चला गया और मैं चुपचाप वहाँ खड़ा रह गया। मेरा दिमाग सवालों से भरा हुआ था, जिनके कोई उत्तर नहीं थे।

उस रात तेज़ आँधी आयी। मेरे शयनकक्ष की खिड़की हवा से टकराती तेज़ आवाजें कर रही थी। मैं उसे बन्द करने उठा और बाहर झाँका। बिजली की चमक के साथ मैंने उस कृशकाय शरीर को दोबारा देखा, सिन्दूर के पेड़ पर झूलता हुआ।

मैंने उसके चेहरे को देखने की कोशिश की, लेकिन उसका सिर झुका हुआ था और बाल हवा में उड़ रहे थे।

क्या वह एक सपना था?

यह कहना मुश्किल था। लेकिन मेरे हाथ में जड़ा पुखराज़ अँधेरे में चमक रहा था और जंगल से आती फुसफुसाहट कहती प्रतीत हो रही थी, “यह समय नहीं जो बीत रहा है मेरे दोस्त। यह तुम और मैं हैं...”

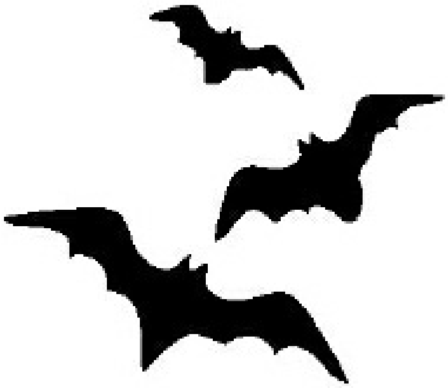

वह काली बिल्ली

इससे पहले कि बिल्ली आती, एक झाड़ू का होना ज़रूरी था।

हमारे हिल स्टेशन के बाज़ार में एक पुरानी कबाड़ी की दुकान थी—गंदी, सीलन भरी, अँधेरी—जहाँ मैं अक्सर पुरानी किताबों या विक्टोरियन युग की कलात्मक वस्तुओं को खोजने के लिए चहलकदमी किया करता। कभी-कभी वहाँ घर के लिए उपयोगी वस्तुएँ भी मिल जाती थीं लेकिन सामान्यतः मैं उन पर ध्यान नहीं देता था। हालाँकि मैं दुकान के एक कोने में खड़े एक पुराने लेकिन बिलकुल सही हालत के झाड़ू पर आकर्षित था। लम्बे डंडे वाला झाड़ू बिलकुल वैसा ही था, जैसा मुझे चाहिए था। मेरे पास मेरे कॉटेज के कमरों की सफ़ाई के लिए कोई नौकर नहीं था और मुझे छोटे डंडे वाले आम झाड़ू को इस्तेमाल करते समय आधा झुकना बिलकुल पसन्द नहीं था।

पुराने झाड़ू की कीमत दस रुपये थी। मैंने दुकानदार के साथ मोल-भाव किया और उसे पाँच रुपये में खरीद लिया। यह एक मज़बूत झाड़ू था, बिलकुल सही सलामत और मैं लगभग हर सुबह उसका उपयोग कर अच्छे परिणाम पा रहा था। और यह कहानी यहीं खत्म हो जानी चाहिए थी—या शुरू ही नहीं होती—अगर मैंने एक बड़ी काली बिल्ली को बाग की दीवार पर बैठे नहीं पाया होता।

उस काली बिल्ली की चमकदार पीली आँखें थीं और वह मुझे काफ़ी घूरकर देख रही थी, जैसे यह विचार कर रही हो कि इस आदमी के शोषित हो सकने की कितनी सम्भावनाएँ हैं। हालाँकि उसने एक-दो बार म्याऊँ की आवाज़ निकाली लेकिन मैंने कोई ध्यान नहीं दिया। मुझे बिल्लियों से ज़्यादा लगाव नहीं था। लेकिन जब मैं अन्दर गया तो मैंने पाया कि बिल्ली मेरे पीछे-पीछे आ गयी थी और रसोई के दरवाज़े के पास कुछ तलाशने लगी थी।

'यह ज़रूर भूखी होगी,' मैंने सोचा और उसे थोड़ा दूध दिया।

बिल्ली दूध पर लपकी और दूध पीते हुए पूरे समय आवाज़ें निकालती रही और फिर

कूदकर आलमारी पर चढ़कर आराम से बैठ गयी।

खैर, कुछ दिन तक के लिए बिल्ली से कोई छुटकारा नहीं मिलने वाला था। वह बिलकुल इसे अपना घर मान बैठी थी और मेरी उपस्थिति को बहुत मुश्किल से झेलती थी। उसका ध्यान मुझसे ज़्यादा मेरे झाड़ू पर था, और जब भी मैं कमरे की सफ़ाई कर रहा होता वह झाड़ू के इर्द-गिर्द नाचती और चक्कर लगाती थी। और जब वह झाड़ू दीवार के सहारे खड़ा रहता, बिल्ली उससे टिककर खुद को रगड़ती और ज़ोर से म्याऊँ-म्याऊँ की आवाज़ें निकालती।

एक बिल्ली और एक झाड़ू—यह मेल कुछ संकेतार्थक था, सम्भावनाओं से भरपूर...वह कॉटेज पुराना था, लगभग सौ साल पुराना और मैं अक्सर सोचता कि इतने लम्बे समय में यहाँ किस प्रकार के किरायेदार रहे होंगे। मैं उस कॉटेज में सिर्फ़ एक साल से था। हालाँकि यह कॉटेज हिमालयी सिन्दूर के जंगल के बीच अकेला खड़ा था, मेरा यहाँ कभी किसी भूत या आत्मा से सामना नहीं हुआ।

मिस बेल्लोस मुझसे जुलाई के मध्य में मिलने आयी थीं। मैंने कॉटेज के बाहर वाली पत्थर की सड़क पर चलने वाली छड़ी की खट-खट सुनी जो मेरे गेट के पास आकर रुक गयी।

“मिस्टर बॉन्ड!” एक शाही आवाज़ ने मुझे पुकारा, “क्या आप घर पर हैं?”

मैं बागवानी कर रहा था और ऊपर देखने पर पाया कि एक बूढ़ी, सीधी कमर वाली अंग्रेज़ औरत गेट से मुझे ताक रही थी।

“गुड ईवनिंग,” मैंने अपना फावड़ा रखते हुए कहा।

“मुझे विश्वास है कि आपके पास मेरी बिल्ली है,” मिस बेल्लोस ने कहा।

हालाँकि मैं उस औरत से पहले कभी नहीं मिला था, मैं उन्हें उनके नाम और रुतबे से जानता था। वह उस हिल स्टेशन की सबसे पुरानी निवासी थीं।

“मेरे पास एक बिल्ली ज़रूर है,” मैंने कहा, “हालाँकि यह कहना शायद ज़्यादा सही होगा कि बिल्ली के पास मैं हूँ। अगर यह आपकी बिल्ली है, आपका स्वागत है इसे ले जाने के लिए। आप अन्दर क्यों नहीं आतीं जब तक मैं उसे खोजता हूँ?”

मिस बेल्लोस अन्दर आयीं। उन्होंने एक पुराने फैशन की काली पोशाक पहन रखी थी और उनकी मज़बूत अखरोट की लकड़ी की छड़ी में दो या तीन मोड़ थे और हैंडिल की जगह एक मूठ थी।

वह आरामकुर्सी पर विराजीं और मैं बिल्ली की खोज में जुट गया। लेकिन बिल्ली आज अपने अचानक गायब हो जाने वाले मूड में थी और हालाँकि मैं उसे बड़ी मनुहार से पुकार रहा था, उसने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। मुझे पता था कि वह ज़रूर कहीं पास ही होगी, लेकिन बिल्लियाँ ऐसी ही होती हैं—उद्दंड, हठी जीव।

अन्त में थककर जब मैं बैठक में आया तो बिल्ली वहाँ मिस बेल्लोस की गोद में दुबकी बैठी थी।

“अच्छा, यह आपको मिल गयी, ठीक है। क्या आप जाने से पहले चाय लेना पसन्द करेंगी?”

"नहीं, शुक्रिया," मिस बेल्लोस ने कहा। "मैं चाय नहीं पीती।"

"कुछ तेज़, शायद। थोड़ी ब्रांडी लेंगी?" उन्होंने मुझ पर अपनी तीक्ष्ण नज़र डाली। हड़बड़ा कर मैंने जल्दी से जोड़ा, "ऐसा नहीं कि बहुत पीता हूँ। ज़रूरत के लिए घर में थोड़ी रखता हूँ। यह ठंड और कई चीज़ों को दूर रखती है। यह विशेषकर...सर्दी के लिए सही है," मैंने आहिस्ता से अपनी बात खत्म की।

"मैंने देखा है कि आपकी पानी की केतली उबल रही है," उन्होंने कहा, "क्या मुझे थोड़ा गर्म पानी मिलेगा?"

"गर्म पानी? ज़रूर।" मैं थोड़ी उलझन में था।

लेकिन मैं हमारी पहली भेंट में मिस बेल्लोस को नाराज़ नहीं करना चाहता था।

"शुक्रिया। और एक गिलास।"

उन्होंने गिलास लिया और मैं केतली लाने गया। अपनी विशाल पोशाक की ज़ेब से उन्होंने दो छोटी पुड़ियाँ निकालीं, केमिस्ट के पास मिलने वाले पाउडर की पुड़ियाँ जैसी। उन्होंने दोनों पुड़ियाँ खोलीं, पहले गिलास में बैंगनी फिर गहरे लाल रंग का पाउडर डाला। कुछ नहीं हुआ।

"अब पानी, कृपया," उन्होंने कहा।

"यह उबलता हुआ है, गर्म!"

"कोई बात नहीं।"

"मैंने गिलास में पानी डाला और उसमें भयंकर सनसनाहट होने लगी और झाग बनने लगा और फेनिल पदार्थ ऊपर तक आ गया। वह द्रव्य इतना गर्म था कि मुझे लगा कि गिलास चटक जायेगा; लेकिन इससे पहले कि ऐसा कुछ होता, मिस बेल्लोस ने उसे उठाकर होंठों से लगाया और पूरा पी गयीं।

"मुझे लगता है अब मुझे चलना चाहिए," उन्होंने गिलास नीचे रख कर अपनी जीभ से अपने होंठ चाटते हुए कहा। बिल्ली ने हवा में अपनी पूँछ लहराकर सहमति दी। "मैं तुम्हारी बहुत कृतज्ञ हूँ, लड़के।"

"अरे, कोई बात नहीं," मैंने विनम्रता से कहा। "हमेशा आपकी सहायता के लिए तत्पर हूँ।"

उन्होंने अपना पतला, हड्डीदार हाथ बढ़ाया और मेरे हाथ को उसकी ठंडी गिरफ़्त में ले लिया।

मैंने मिस बेल्लोस और उनकी काली बिल्ली को गेट तक जाते देखा और उदास अपनी बैठक में लौट आया। अकेले रहने से मेरी कल्पना और हौसले को दिशा मिली। मैंने आधे मन से अपनी कल्पनाओं पर हँसने का प्रयास किया, लेकिन मेरी हँसी मेरे गले में ही अटक गयी। मैं इस पर ध्यान देने से खुद को रोक नहीं पाया कि झाड़ू अपने कोने से गायब है।

मैं कॉटेज के बाहर भागा और रास्ते के ऊपर, नीचे देखने लगा। वहाँ कोई नहीं था। धीरे-धीरे जमा हो रहे अँधेरे में मैं मिस बेल्लोस की हँसी सुन पा रहा था, जो जल्दी ही गाने में तब्दील हो गयी—

जब मेरे आस-पास अँधेरा बढ़ रहा हो
और चाँद मेरी टोपी के पीछे हो
तुम्हें जल्द ही यह जानने में होगी मुश्किल
कि डायन है कौन
और कौन है डायन की बिल्ली।

माथे के ऊपर से कुछ दीवाली में चलाये जाने वाले रॉकेट की तरह आवाज़ करता हुआ निकला।

मैंने ऊपर देखा और मुझे ऊपर उठे चाँद में मिस बेल्लोस और उनकी बिल्ली की छाया दिखी जो झाड़ू पर सवार थी।

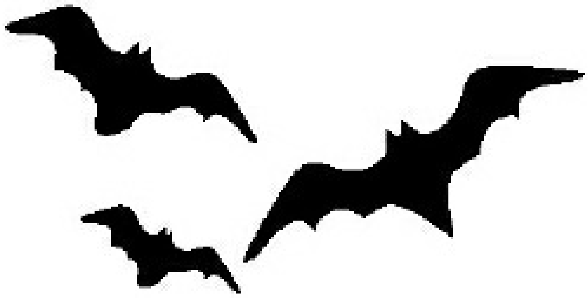

अँधेरे में फुसफुसाहट

एक भयानक रात। कराहती हवा, खुद पर उन्माद में कोड़े बरसाते पेड़, सड़क पर तेज़ बरसती बारिश, पहाड़ों पर गरजते बादल। मेरे आगे अकेलापन बिखरा हुआ था, मन का अकेलापन और शरीर से भी। पूरी दुनिया घाटी से आ रहे कुहरे से ढँकी हुई थी, एक सघन, सफ़ेद, नम नकाब।

मैं जंगल में अँधेरे के बीच रास्ता तलाश रहा था, अपने दिमाग में पहाड़ के रास्ते तलाश रहा था, कोई याद का पत्थर, कोई प्राचीन देवदार। फिर एक बिजली की कौंध में मुझे बंजर पहाड़ी और उस पर धुँध में लिपटे घर की झलक दिखाई दी।

यह एक पुराने ज़माने का घर था—उजाड़ हिल स्टेशन के बाहर चूने पत्थर का बना मकान। उसकी खिड़की में कोई रोशनी नहीं थी; शायद बिजली बहुत पहले काटी जा चुकी थी। लेकिन अगर मैं वहाँ पहुँच सका तो रात कट जायेगी।

मेरे पास कोई टॉर्च नहीं था, लेकिन तब तक चाँद जंगली बादलों से निकलकर चमकने लगा था और पेड़ कुहरे से आदिम दैत्यों की तरह निकल आये थे। मैं मुख्य दरवाज़े पर पहुँचा और उसे अन्दर से बन्द पाया। मैंने किनारे वाली खिड़की का शीशा तोड़ा, टूटे हुए काँच से अपना हाथ अन्दर किया और उसकी कुंडी को खोल लिया।

वह खिड़की सैकड़ों मानसूनों की मार खुद में लपेटे थी और उसने बहुत विरोध जताया। फिर वह खुल गयी और मैं लम्बे समय से बन्द कमरे के सीलन भरे माहौल में अन्दर आया और मेरे साथ हवा अन्दर आयी जिसने फ़र्श पर पड़े कागज़ों को बिखेर दिया और मेज़ पर पड़ी किसी अज्ञात वस्तु को गिरा दिया। मैंने खिड़की बन्द कर फिर से कुंडी लगा दी; लेकिन कुहरा खिड़की के टूटे शीशे से अन्दर चला आया और हवा इसे ऐसे बजा रही थी जैसे कोई मंजीरा हो।

मेरी जेब में माचिस थी। मैंने तीन बार घिसी तो रोशनी जली।

मैं एक बड़े कमरे में था जो फर्नीचर से भरा हुआ था। दीवार पर तस्वीरें थीं। मेंटलपीस पर गुलदान। एक मोमबत्ती स्टैंड और विचित्र बात कि कोई मकड़ी का जाला

नहीं। बाहरी सारी उपेक्षा और जर्जर हालत के बाद भी घर की कोई देखरेख कर रहा था। लेकिन इससे पहले कि मैं किसी और चीज़ पर ध्यान दे पाता, माचिस की तीली बुझ गयी।

जब मैं कमरे में आगे बढ़ा, देवदार की पुरानी लकड़ी से बना फ़र्श चरमराने लगा। दूसरी माचिस की तीली जला कर मैं मेंटलपीस तक पहुँचा और मोमबत्ती जलायी और तभी यह ध्यान दिया कि मोमबत्ती स्टैंड एक वास्तविक पुरानी कलाकृति है जिसमें शीशे की झूलती कटाई है। एक परित्यक्त कॉटेज, अच्छे फर्नीचर से सज्जित। मुझे आश्चर्य हुआ कि अब तक किसी ने इसमें चोरी से प्रवेश क्यों नहीं किया? तभी मुझे एहसास हुआ कि मैंने ऐसा किया है।

मैंने मोमबत्ती स्टैंड ऊपर उठाया और कमरे के चारों ओर देखा। कमरे में वाटर कलर और तैल के बने पोर्ट्रेट लगे थे। कहीं ज़रा भी धूल नहीं थी। लेकिन किसी ने मेरी पुकार का कोई प्रत्युत्तर नहीं दिया, किसी ने मेरी सहमी हुई दस्तक का कोई जवाब नहीं दिया। ऐसा लग रहा था कि घर के लोग छुपे हुए हैं, मुझे अँधेरे कोनों और चिमनियों से तिरछी नज़र से देख रहे हैं।

मैं शयनकक्ष में गया और वहाँ एक आदमकद आईने से मेरा सामना हुआ। मेरे प्रतिबिम्ब ने भी मुझे वापस घूरा जैसे कि मैं कोई अजनबी था, जैसे मेरा प्रतिबिम्ब उस घर से सम्बन्धित हो, जबकि मैं सिर्फ़ एक बाहरी व्यक्ति था।

जैसे ही मैं आईने की तरफ़ से घूमा, मुझे लगा मैंने किसी को देखा, कोई चीज़, मेरे अलावा कोई और प्रतिबिम्ब, जो मेरे साथ ही आईने की तरफ़ से घूमी। मुझे सफ़ेदी की एक झलक मिली, एक पीला अंडाकार चेहरा, जलती आँखें, लम्बे केश, मोमबत्ती की रोशनी में सुनहरे। लेकिन जब मैंने आईने में दोबारा देखा, तो मुझे कुछ नहीं दिखा सिवाय अपने ज़र्द चेहरे के।

मेरे तलवों के पास पानी का एक सैलाब बना हुआ था। मैंने मोमबत्ती को उस मेज़ पर जमाया, बिस्तर के किनारे बैठा और अपने भीगे मोजे, जूते उतारे। फिर मैंने अपने कपड़े उतारे और उन्हें कुर्सी के पीछे टिकाया।

मैं अँधेरे में नग्न खड़ा था, थोड़ा सिहरता हुआ। वहाँ मुझे देखने वाला कोई नहीं था—लेकिन मैंने खुद को उघड़ा हुआ महसूस किया, बिलकुल ऐसा जैसे कि मैं किसी कमरे में लोगों के सामने कपड़े उतारे खड़ा हूँ।

मैं बिस्तर की चादरों में घुस गया, जो थोड़ी यूक्लिप्टस और लैवेंडर जैसी महक रही थीं—लेकिन मैंने पाया कि वहाँ कोई तकिया नहीं था। यह विचित्र था। एक बिलकुल सलीके से बना हुआ बिस्तर, लेकिन कोई तकिया नहीं! मैं उसे खोजने के लिए बहुत थक चुका था। इसलिए मैंने मोमबत्ती बुझायी और अँधेरा मेरे चारों ओर छा गया...

जैसे ही मैंने अपनी आँखें बन्द कीं, फुसफुसाहटें शुरू हो गयीं। मैं नहीं बता सकता कि ये कहाँ से आ रही थीं। ये मेरे चारों ओर थीं, हवा की आवाज़ में मिली हुईं, चिमनी के खाँसने की आवाज़ में, फ़र्नीचर के सीधा किये जाने की आवाज़ में, बाहर बारिश में पेड़ों के रोने की आवाज़ में।

कभी-कभी मैं समझ पा रहा था कि क्या कहा जा रहा था। शब्द दूर से आ रहे थे—दूरी उतनी स्थान की नहीं, जितनी समय की—

"मेरा, मेरा, यह पूरा मेरा है..."

"वह हमारा है, प्रिय, हमारा।"

फुसफुसाहटें, प्रतिध्वनियाँ, शब्द मेरे चारों ओर चमगादड़ के डैनों के साथ उड़ रहे थे, बिलकुल ही व्यर्थ की चीज़ें एक तार्किक जल्दबाज़ी के साथ।

"तुम रात्रि भोजन के लिए लेट हो गये हो..."

"वह अपना रास्ता कुहरे में भटक गया है।"

"क्या तुम्हें लगता है, उसके पास पैसे हैं?"

"एक कछुए को मारने के लिए सबसे पहले उसके पैरों को दो खम्भों से बाँधना होता है।"

"हम उसे बिस्तर से बाँध देते हैं और उसके कंठ से गर्म पानी अन्दर डालते हैं।"

"नहीं, यह ज़्यादा आसान तरीका है।"

मैं उठ कर बैठ गया। ज़्यादातर फुसफुसाहटें दूर से आ रही थीं, निर्वैयक्तिक, लेकिन अन्तिम कथन डरावने रूप से नज़दीक था।

मैंने फिर से मोमबत्ती जलायी और आवाज़ें रुक गयीं। मैं उठा और कमरे में एक चक्कर लगाया, व्यर्थ ही आवाज़ों का कोई कारण खोजने के लिए। फिर एक बार मैंने खुद को आईने के सामने अपने प्रतिबिम्ब को घूरते पाया और उस दूसरे व्यक्ति का प्रतिबिम्ब, सुनहरे बालों और चमकती आँखों वाली लड़की और इस बार उसके हाथों में एक तकिया था। वह मेरे पीछे खड़ी थी।

फिर मुझे याद आयी लड़कपन में सुनी हुई वह कहानी, दो कुँवारी बहनों की—एक खूबसूरत, एक सादी—जो अमीर, सम्भ्रांत आदमियों को पटा कर अपने निवास पर ले जाती थीं और उनका गला घोंट देती थीं। मृत्यु बहुत ही स्वाभाविक लगती और वे सालों तक ऐसा करती रहीं। यह तो दूसरी बहन द्वारा मृत्यु शैया पर की गयी स्वीकारोक्ति से सारा सच बाहर आया और फिर भी कोई उस पर विश्वास नहीं कर रहा था।

लेकिन यह कई सालों पहले की बात है और वह घर कब का गिर चुका...

जब मैं आईने की तरफ़ से घूमा, मेरे पीछे कोई नहीं था। मैंने फिर से देखा और प्रतिबिम्ब गायब हो गया था।

मैं फिर से बिस्तर में घुस गया और मोमबत्ती बुझा दी। मैं सो गया और सपने देखने लगा (या क्या मैं जगा हुआ था और ऐसा सही में हुआ था?) कि जिस औरत को मैंने आईने में देखा था, मेरे बिस्तर के पास खड़ी, मुझ पर झुकी हुई थी, अपनी आँखों से चिंगारियाँ छोड़ती। मैं उन आँखों में लोगों को घूमते देख रहा था। मैंने खुद को देखा। और फिर उसके होंठों ने मेरे होंठों को छुआ, एकदम ठंडे होंठ, इतने रूखे कि मेरे शरीर में एक लहर दौड़ गयी।

और फिर, जबकि उसका चेहरा आकृतिविहीन हो गया और सिर्फ़ उसकी आँखें बची थीं, कोई और चीज़ मुझ पर दबाव डाल रही थी, कुछ मुलायम, भारी और आकारहीन, मुझे दम घोटने वाली कैद में जकड़ रही थी। मैं अपना सिर नहीं घुमा पा रहा था, न ही मुँह खोल पा रहा था। मैं साँस नहीं ले पा रहा था।

मैंने अपना हाथ उठाया और अपने ऊपर पड़ी चीज़ को हल्के से पकड़ा। और मुझे आश्चर्यचकित करता हुआ यह आसानी से मेरे हाथ में आ गया। यह बस एक तकिया था जो किसी तरह मेरे चेहरे पर गिर गया था, लगभग मेरा आधा दम घोंटता हुआ जबकि मैं एक काल्पनिक चुम्बन का सपना देख रहा था।

मैंने तकिये को परे किया। खुद पर से बिस्तर की चादर हटायी। मैं वह फुसफुसाहट, वह बेनाम आकृति, वह तकिया जो अँधेरे में मुझ पर गिरा, सब बहुत झेल चुका था। मैं बाहर जाकर वह तूफ़ान झेल लेना सही समझ रहा था, बनिस्पत उस अभिशप्त घर में आराम करते रहने के।

मैंने जल्दी से कपड़े पहने। मोमबत्ती लगभग खत्म होने वाली थी। वह घर और वहाँ का सब कुछ किसी और समय के अँधेरे से सम्बन्धित था, मैं दिन के उजाले से वास्ता रखता था।

मैं जाने के लिए तैयार था। मैंने विशाल आईने की विकृत नक्काशी को नज़रअन्दाज़ किया। मोमबत्ती स्टैंड को अपने सामने पकड़ कर, मैं सावधानी से आगे के कमरे की ओर बढ़ा। दीवारों पर टँगी तस्वीरें जीवन्त हो आयी थीं।

एक खास तस्वीर ने मेरा ध्यान खींचा और मैं उसके नज़दीक गया ताकि मोमबत्ती के मद्धिम प्रकाश में ज़्यादा ध्यान से उसका निरीक्षण कर सकूँ। यह सिर्फ़ मेरी कल्पना थी, या वह चित्र वाली लड़की मेरे सपने वाली औरत थी? क्या मैं समय में पीछे चला गया था या समय ने मुझे जकड़ लिया था?

मैं पीछे जाने के लिए मुड़ा और मोमबत्ती एक आखिरी बार चमक कर बुझ गयी, कमरे में अँधेरा करते हुए। मैं एक क्षण तक स्थिर खड़ा रहा, अपने विचारों को समेटता हुआ, अपने भय पर काबू पाता हुआ जो मुझे घेर रहा था। तभी दीवार पर एक दस्तक हुई।

"कौन है वहाँ?" मैंने आवाज़ दी।

शान्ति। और तभी, फिर एक बार, दस्तक और इस बार एक आवाज़, महीन और अनुनय भरी—"कृपया मुझे अन्दर आने दें, कृपया मुझे अन्दर आने दें..."

मैं आगे बढ़ा, दरवाज़े की कुंडी खोली और उसे खुला छोड़ दिया।

वह बाहर बारिश में खड़ी थी। पीली, सुन्दर-सी लड़की नहीं, बल्कि एक बूढ़ी औरत जिसके रंगहीन होंठ और फैले हुए नथुने थे और—लेकिन आँखें कहाँ थीं? आँखें नहीं थीं, आँखें नहीं थीं!

वह हवा के साथ मेरे बगल से गुज़री और ठीक उसी समय मैं खुले हुए दरवाज़े का फ़ायदा उठाते हुए बाहर की ओर भागा, बाहर होती बारिश में कृतज्ञतापूर्वक भागता हुआ, झरते हुए पेड़ों में घंटों खो जाने के लिए, उन सभी जोंकों पर खुश होता हुआ जो मेरे मांस पर लटक रहे थे।

और जब सुबह के साथ, अन्ततः मैंने अपना रास्ता पा लिया, चिड़ियों के संगीत और बादलों को भेदते, मैं बिखरते सूरज की रोशनी में बहुत खुश था।

और अगर आज आप मुझसे पूछें कि वह पुराना घर वहाँ अब भी है या नहीं, मैं यह

बता पाने में सक्षम नहीं हो पाऊँगा। इसकी सीधी-सी वजह है कि मुझे उसे खोजने जाने की ज़रा-सी भी इच्छा नहीं है।

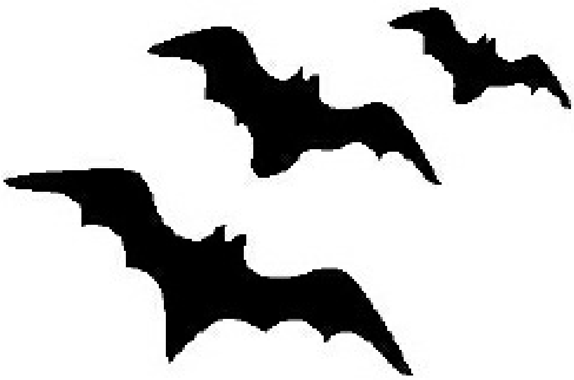

भुतहा पहाड़ी की हवा

हू—हूऊ-हूऊऊ, हिमालयी बर्फ़ से उतरकर आती हवा चीखी। यह तेज़ी से पहाड़ियों और दर्रों पर उतर रही थी और विशाल चीड़ और देवदार के पेड़ों पर गुनगुना और कराह रही थी।

भुतहा पहाड़ी पर हवा को रोकने के लिए बहुत कम चीज़ें थीं—सिर्फ़ कुछ छोटे कद के पेड़ और झाड़ियाँ, और खंडहर जो कभी एक छोटी रिहाइश रही होगी।

दूसरी पहाड़ी की ढलान पर एक छोटा गाँव था। लोग अपनी टिन की छत पर भारी पत्थर रखते थे ताकि वह उड़ने से बच सके। इस हिस्से में हमेशा ही हवा होती थी। यहाँ तक कि धूप निकली हो तब भी खिड़की, दरवाज़े बजते रहते, चिमनियाँ चोक हो जाती थीं, कपड़े उड़ जाते थे।

तीन बच्चे एक नीची पत्थर की दीवार के पास खड़े कपड़े सुखाने के लिए डाल रहे थे। हर कपड़े पर वे एक पत्थर डाल रहे थे। तब भी कपड़े यूँ उड़ रहे थे जैसे झंडे या पताका हों।

काले बालों और गुलाबी गालों वाली उषा अपने दादाजी के लम्बे, ढीले कुरते के साथ संघर्ष कर रही थी। वह ग्यारह या बारह साल की थी। उसका छोटा भाई, सुरेश एक बिस्तर की चादर को पकड़े रखने के लिए पूरा जतन कर रहा था जबकि बिन्या, जो थोड़ी बड़ी थी और उषा की सहेली और पड़ोसी थी, उन्हें एक-एक कर कपड़े थमा रही थी।

फिर जब वे निश्चिंत हो गये कि सब कपड़े दीवार पर हैं और पत्थरों के सहारे मज़बूती से टिके हैं, वे एक समतल पत्थर पर चढ़ गये और वहाँ कुछ देर बैठे रहे, हवा और धूप में, मैदान के पार भुतहा पहाड़ी के खंडहरों को घूरते हुए।

“आज मुझे बाज़ार ज़रूर जाना है,” उषा ने कहा।

“काश, मैं भी आ पाती,” बिन्या ने कहा, “लेकिन मुझे गाय और घर के कामों में

सहायता करनी है। माँ की तबीयत ठीक नहीं।”

“मैं आ सकता हूँ!” सुरेश ने कहा। वह बाज़ार घूमने के लिए हमेशा तैयार रहता था। जो भुतहा पहाड़ी के दूसरी ओर तीन मील दूर था।

“नहीं, तुम नहीं जा सकते,” उषा ने कहा, “तुम्हें लकड़ियाँ काटने में दादाजी की मदद करनी होगी।”

उनके पिता सेना में थे, देश के किसी दूरस्थ इलाके में तैनात और सुरेश और उसके दादाजी उस घर के एकमात्र पुरुष थे। सुरेश आठ साल का था, गोलमटोल और बादाम जैसी आँखों वाला।

“क्या तुम अकेले लौटते हुए डरोगी नहीं?” उसने पूछा।

“मुझे क्यों डरना चाहिए?”

“पहाड़ी पर भूत हैं।”

“मैं जानती हूँ, लेकिन मैं अँधेरा होने से पहले ही लौट आऊँगी। भूत दिन में नहीं आते।”

“क्या खंडहर में बहुत सारे भूत हैं?” बिन्या ने पूछा।

“दादाजी कहते हैं ऐसा। वह कहते हैं कि कई साल पहले—लगभग सौ साल पहले—अंग्रेज़ पहाड़ियों पर रहा करते थे। लेकिन यह एक खराब जगह थी, हमेशा बिजलियाँ गिरती थीं यहाँ और उन्हें अगली पहाड़ी पर जाना पड़ा और दूसरी जगह बनानी पड़ी।”

“लेकिन अगर वे चले गये तो वहाँ कोई भूत क्यों होना चाहिए?”

“क्योंकि- दादाजी कहते हैं—एक भयंकर तूफ़ान के दौरान उनमें से एक घर पर बिजली गिर गयी और उसमें रहने वाले सभी मारे गये। सभी, बच्चों सहित।”

“क्या बहुत सारे बच्चे थे?”

“वहाँ दो बच्चे थे। एक भाई और बहन। दादाजी कहते हैं कि उन्होंने उन दोनों को कई बार देखा है जब भी वह देर रात उन खंडहरों से गुज़रे हैं। उन्होंने उन्हें चाँदनी रात में खेलते देखा है।

“क्या वह डरे नहीं?”

“नहीं। बूढ़े लोग भूत दिखने की परवाह नहीं करते।”

उषा दो बजे दोपहर में बाज़ार के लिए निकली। वह एक घंटे का पैदल रास्ता था। वह खेतों के बीच से गयी थी—जो सरसों के फूलने से पीले दिखने लगे थे, फिर पहाड़ी के साथ होते हुए ऊपर खंडहर तक।

यह रास्ता सीधा खंडहर के बीच से जाता था। उषा उसे अच्छे से जानती थी; साप्ताहिक खरीददारी के लिए बाज़ार जाने के लिए वह अक्सर इसी रास्ते का उपयोग करती थी, या अपनी चाची से मिलने के लिए, जो शहर में रहती थीं।

ढह चुकी दीवारों पर जंगली फूल खिले हुए थे। एक जंगली बेर सीधा फ़र्श पर उग आया था, जो कि कभी एक विशाल हॉल रहा होगा। उसके कोमल, सफ़ेद फूल गिरने लगे थे। छिपकलियाँ पत्थर पर भाग रही थीं, जबकि एक गाने वाली चिड़िया, अपने गाढ़े

बैंगनी परों को नरम धूप में चमकाती, एक खाली खिड़की पर बैठी पूरे दिल से गा रही थी।

उषा खुद में ही गुनगुनाने लगी जब चलते-चलते वह रास्ते पर हल्का-सा लड़खड़ा गयी। जल्दी ही उसने खंडहरों को पीछे छोड़ दिया था। वह रास्ता नीचे की ओर तीव्र ढलान लिये हुए घाटी और उसके छोटे शहर के बिखरे हुए बाज़ार की ओर जाता था।

उषा ने बाज़ार में अपना समय लिया। उसने साबुन और माचिस, मसाले और चीनी खरीदी (इनमें से कोई भी चीज़ गाँव में नहीं मिलती थी, जहाँ कोई दुकान नहीं थी), और दादाजी के हुक्के के लिए नयी पाइप और सुरेश के गणित के सवाल हल करने के लिए एक अभ्यास पुस्तिका। थोड़ा सोचने के बाद उसने कुछ कंचे भी खरीद लिये। फिर वह मोची की दुकान पर गयी ताकि अपनी माँ की चप्पलें सिलवा सके। मोची व्यस्त था इसलिए उसने चप्पलें वहाँ छोड़ दीं और कहा कि वह एक घंटे में वापस आयेगी।

उसके पास अपने बचाये हुए दो रुपये थे, और उन पैसों का इस्तेमाल उसने अपने लिए एक बूढ़ी तिब्बती औरत जो ताबीज और नकली सस्ते गहने बेचती थी, से चमकते भूरे-पीले रंग की मोती की माला खरीदने के लिए किया।

वहाँ वह अपनी चाची लक्ष्मी से मिली जो उसे अपने घर चाय पिलाने के लिए ले गयीं।

उषा ने एक घंटा चाची लक्ष्मी की दुकान के ऊपर बने छोटे फ्लैट पर बिताया और चाची के बायें कन्धे में दर्द और जोड़ों में अकड़न की बातें सुनती रही। उसने गर्म मीठी चाय के दो कप पिये और जब उसने खिड़की के बाहर देखा तो काले बादल पहाड़ों पर घिर आये थे।

उषा मोची के पास भागी गयी और अपनी माँ की चप्पलें लीं। खरीददारी का झोला भरा हुआ था। उसने उसे अपने कन्धे पर रखा और गाँव की ओर चल पड़ी।

विचित्र बात थी कि हवा रुक चुकी थी। पेड़ शान्त थे, एक पत्ता भी हिल नहीं रहा था। घास में झींगुर शान्त थे। कौवे गोल चक्कर काटकर फिर रात के लिए सिन्दूर के पेड़ पर बैठ चुके थे।

"मुझे अँधेरा होने से पहले घर पहुँचना ही होगा," उषा ने खुद से कहा, जब वह रास्ते पर तेज़ कदम बढ़ा रही थी। काले और डरावने बादल भुतहा पहाड़ी पर घिर आये थे। यह मार्च था, तूफ़ान का महीना।

एक तेज़ गड़गड़ाहट पहाड़ी पर प्रतिध्वनित हुई और उषा ने अपने गालों पर वर्षा की पहली भारी बूँद महसूस की।

उसके पास कोई छाता नहीं था; कुछ ही घंटों पहले मौसम बिलकुल साफ़ प्रतीत हो रहा था। अब वह अपने पुराने स्कार्फ़ को अपने माथे के ऊपर बाँधने और शॉल को मज़बूती से कन्धे के चारों ओर लपेटने के अलावा कुछ नहीं कर सकी। अपने खरीददारी के झोले को अपने शरीर के पास चिपका कर, उसने अपनी चाल तेज़ कर दी। वह लगभग दौड़ रही थी। वर्षा की भारी, विशाल बूँदें।

अचानक एक तेज़ चमकती बिजली से पूरी पहाड़ी प्रकाशित हो गयी। खंडहर

अपनी स्पष्ट आकृति के साथ खड़ा था। फिर पूरा अंधकार छा गया। रात घिर चुकी थी।

'मैं तूफ़ान आने से पहले घर नहीं पहुँच पाऊँगी,' उषा ने सोचा। 'मुझे खंडहर में ही शरण लेनी होगी।' वह आगे बस कुछ फीट तक ही देख पा रही थी, लेकिन वह रास्ते को अच्छे से जानती थी और वह दौड़ने लगी।

अचानक, हवा फिर तेज़ हुई और बारिश को तीव्रता से उसके चेहरे के ऊपर डालने लगी। यह ठंडी, चुभने वाली बारिश थी। वह मुश्किल से अपनी आँखें खोल पा रही थी।

हवा अपने पूरे वेग में थी। वह गुनगुना रही थी और सीटियाँ बजा रही थी। उषा को उससे संघर्ष करने की ज़रूरत नहीं पड़ी। वह अब उसके पीछे थी और तीव्र ढलान वाले रास्ते पर और पहाड़ी के शीर्ष पर उसकी मदद कर रही थी।

बिजली दूसरी बार चमकी और उसके बाद एक तेज़ गर्जना हुई। खंडहर उसके आगे फिर उभर आया, कठोर और भयावह।

~

वह जानती थी कि वहाँ एक कोना है, जिस पर एक पुरानी छत बची हुई है। वह कुछ छाया दे सकेगी। यह आगे चलते जाने से बेहतर होगा। अँधेरे में, गरजती हवा में, उसे पहाड़ी की चोटी के किनारे पर पहुँचने के लिए बस थोड़ा-सा रास्ता पार करना था।

हू-हूऊ-हूऊऊऊ, हवा फिर गरजी। उसने जंगली बेर के पेड़ को झूमते, आधा झूमते देखा, उसकी पत्तियाँ ज़मीन पर टूटी पड़ी थीं। टूटी हुई दीवार हवा को रोक पाने के लिए कुछ कर नहीं पा रही थी।

उषा खंडहर हो चुकी इमारत में अपना रास्ता खोजने लगी, उस जगह की अपनी स्मृति और लगातार चमकती बिजली की रोशनी की मदद से। वह दीवार के सहारे चलने लगी, इस उम्मीद में कि उस छत वाले कोने तक पहुँच जायेगी। उसने अपना हाथ एक समतल पत्थर पर रखा और किनारे से निकल गयी। उसके हाथ ने कुछ मुलायम और रोयेंदार चीज़ छूयी। उसने एक चौंकने वाली चीख मारी और अपना हाथ हटा लिया। उसकी चीख का उत्तर एक और चीख ने दिया—आधी गुर्राहट, आधी चीख—और कुछ अँधेरे में लपका।

यह एक जंगली बिल्ली थी। उषा को यह तब पता चला जब उसने उसकी आवाज़ सुनी। यह बिल्ली खंडहरों में रहती थी और उसने कई बार उसे देखा था, लेकिन कुछ पलों के लिए वह बहुत भयभीत हुई थी। अब वह सिर्फ़ दीवार से लगकर तेज़ी से आगे बढ़ रही थी जब तक उसने टूटी टिन की छत पर बारिश की आवाज़ नहीं सुन ली।

जैसे ही वह उसके अन्दर पहुँची, कोने में दुबककर, उसे हवा और बारिश से थोड़ी राहत मिली। उसके ऊपर टिन की चादरेंचीख और झनझनाहट की आवाज़ें निकाल रही थीं, जैसे किसी भी क्षण उड़ जायेंगी। लेकिन उन्हें एक सिन्दूर के पेड़ की मज़बूत फैली हुई शाख ने सँभाला हुआ था।

उषा को याद आया कि उस खाली कमरे के पार एक पुराना चूल्हा था और शायद उसकी अवरुद्ध चिमनी में कोई आश्रय हो। शायद वह इस कोने से अधिक सूखा हो;

लेकिन वह उसे पाने का अभी कोई प्रयास नहीं करेगी। उसके रास्ता भटक जाने की पूरी सम्भावना है।

उसके कपड़े गीले थे और पानी उसके लम्बे काले बालों से चूता हुआ उसके तलवों के पास एक तलैया बना रहा था। उसने अपने पैरों को गर्म रखने के लिए पटका। उसे लगा कि उसने एक हल्की चीख सुनी है—क्या वह फिर बिल्ली थी, या कि एक उल्लू?—लेकिन तूफ़ान की आवाज़ से हर आवाज़ दब गयी थी।

भूतों के बारे में सोचने का समय नहीं था, लेकिन अब जबकि वह वहाँ थी और दोबारा जोखिम उठाने के किसी भी विचार में नहीं थी, उसे दादाजी की सुनायी, खंडहर के बिजली से ध्वस्त होने की कहानी याद आयी। उसने उम्मीद और प्रार्थना की कि वह जब तक वहाँ आश्रय ले रही है तब तक बिजली नहीं गिरे।

बादल पहाड़ी पर गरजे और बिजली तीव्रता से चमकने लगी, बिजली की कौंध के बीच कुछ क्षणों का ही अन्तराल था।

फिर वह सबसे अधिक तीव्रता से चमकी और एक-दो सेकेंड के लिए पूरा खंडहर जगमगा गया। एक नीली रेखा इमारत के फ़र्श के साथ चमक पड़ी, इस किनारे से बाहरी किनारे तक। उषा अपने बिलकुल आगे घूर रही थी। जब उसकी विपरीत दीवार चमकी, उसने देखा कि बेकार पड़े चूल्हे में दुबकी हुई, दो छोटी आकृतियाँ—वे बस बच्चे ही हो सकते थे!

भुतहा आकृतियों ने ऊपर देखा, उषा को घूरा। और फिर सब ओर अँधेरा हो गया।

उषा का हृदय उसके मुँह को आ गया। उसने बिना शक दो भुतहा आकृतियों को कमरे के दूसरे किनारे पर देखा था, और वह अब उस खंडहर में एक मिनट भी और नहीं रहने वाली थी।

वह अपने कोने से भागी, दीवार के उस बड़े छेद की ओर भागी जहाँ से उसने प्रवेश किया था। वह उस खुले रास्ते की तरफ़ आधी ही पहुँची थी कि कोई चीज़—कोई और उससे टकरा कर गिरा। वह लड़खड़ायी, उठी, और फिर किसी और चीज़ से टकरा गयी। उसने एक डरी हुई चीख मारी। कोई और भी चीखा। और फिर एक चीख, एक लड़के की चीख और उषा ने उस आवाज़ को तुरन्त पहचान लिया।

"सुरेश!"

"उषा!"

"बिन्या!"

"यह मैं हूँ!"

"यह हम हैं!"

वे एक-दूसरे की बाँहों में समा गये, इतने चकित और चिन्तामुक्त कि वे बस हँसे जा रहे थे, खिलखिला रहे थे और एक-दूसरे का नाम दोहरा रहे थे।

फिर उषा बोली, "मैंने सोचा कि तुम लोग भूत हो।"

"छत के नीचे आ जाओ," उषा ने कहा।

वे एक कोने में एकत्र हो उत्तेजित होकर चहचहा रहे थे।

“जब अँधेरा बढ़ गया तो हम तुम्हें खोजने निकले,” बिन्या ने कहा, “और फिर तूफ़ान आ गया।”

“क्या हम साथ मिलकर भागें?” उषा ने कहा, “मैं यहाँ अब ज़्यादा समय रुकना नहीं चाहती।”

“हमें इन्तज़ार करना पड़ेगा,” बिन्या ने कहा, “रास्ता एक जगह से टूटा हुआ है। यह अँधेरे में सुरक्षित नहीं होगा, इस बारिश में।”

“फिर हमें सुबह तक इन्तज़ार करना पड़ेगा,” सुरेश ने कहा, “और मुझे भूख लग रही है।”

हवा और बारिश चलती रही, और साथ ही बादल की गर्जन और बिजली की चमक भी, लेकिन अब वे भयभीत नहीं थे। वे एक-दूसरे को सौहार्द और दिलासा दे रहे थे। यहाँ तक कि खंडहर भी डरावने नहीं लग रहे थे।

एक घंटे बाद बारिश रुक गयी जबकि हवा लगातार बह रही थी, और यह बादल को अपने साथ बहा लिये जा रही थी, ताकि बादल की गर्जन दूर होती रहे। फिर हवा भी, बहकर शान्त हो गयी।

सुबह के करीब आते ही गाने वाली चिड़िया ने गीत गाना शुरू कर दिया। उसका मीठा, टूटा हुआ स्वर बारिश से धुले हुए खंडहर को संगीत से भर रहा था।

“आओ चलें,” उषा ने कहा।

“चलो,” सुरेश ने कहा, “मैं भूखा हूँ।”

जैसे उजाला हो रहा था, उन्होंने देखा कि बेर का पेड़ फिर से सीधा खड़ा हो गया था, हालाँकि उसके सारे फूल झड़ चुके थे।

वे खंडहर के बाहर खड़े थे, पहाड़ी के शीर्ष पर, आकाश को गुलाबी होता देखते हुए। हल्की हवा बहने लगी थी।

जब वे खंडहर से थोड़ा दूर आये, उषा ने पीछे देखा और कहा, “क्या वहाँ तुम कुछ देख सकते हो, दीवार के पीछे? ऐसा लग रहा है कि कोई हाथ हिला रहा है।”

“मैं कुछ नहीं देख सकता,” सुरेश ने कहा।

“वह बेर के पेड़ के ऊपर है,” बिन्या ने कहा।

वे उस रास्ते पर थे जो पहाड़ी के ऊपर से जाता था।

“गुड बाय, गुड बाय।”

आवाज़ें हवा में थीं।

“किसने बाय कहा?” उषा ने पूछा।

“मैंने नहीं,” सुरेश ने कहा।

“मैंने नहीं,” बिन्या ने कहा।

मैंने सुना कोई बुला रहा था।”

“यह बस हवा है।”

उषा ने खंडहर की ओर दोबारा मुड़कर देखा। सूरज ऊपर आ चुका था और दीवार

के शीर्ष को छू रहा था। चीड़ की पत्तियाँ चमक रही थीं। वहाँ चिड़िया बैठी गा रही थी।

"आओ चलें," सुरेश ने कहा, "मैं भूखा हूँ।"

"गुड बाय, गुड बाय, गुड बाय, गुड बाय..."

उषा ने उन्हें पुकारते सुना। या यह सिर्फ़ हवा थी।

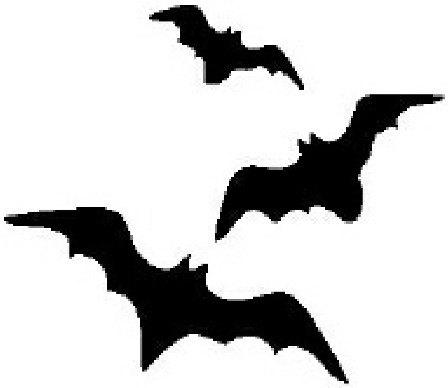

बाग में भूत

घर के पीछे फलों का एक बाग था जहाँ अमरूद, लीची और पपीते के पेड़ दो या तीन बड़े आम के पेड़ों के साथ मिले हुए थे। अमरूद के पेड़ों पर चढ़ना आसान था। लीची के पेड़ ढेर सारी छाया देते थे—इसके अलावा गर्मी में स्वादिष्ट लीचियों के गुच्छे। आम के पेड़ वसन्त में अपने सबसे अधिक आकर्षक रूप में होते थे, जब उनके बौर मादक खुशबू देते थे।

लेकिन एक पुराना आम का पेड़ था, चारदीवारी के पास, जहाँ कोई नहीं, यहाँ तक कि धूकी माली भी नहीं जाता था।

"यह कोई फल नहीं देता," धूकी ने मेरे पूछने पर बताया, "यह एक पुराना पेड़ है।"

"फिर तुम इसे काट क्यों नहीं देते?"

"हम काटेंगे, एक दिन, जब तुम्हारी दादी जी चाहेंगी...।"

बाग के उस हिस्से में सघन खरपतवार उग आये थे। वे धूकी द्वारा निरन्तर गुड़ाई करने से बचे हुए थे।

"कोई उस फलों के बाग के कोने में क्यों नहीं जाता?" मैंने,मिस केल्लनर से पूछा, हमारी अपंग किरायेदार, जो देहरादून में तब से थीं जब वह जवान थीं।

लेकिन वह इस बारे में बात नहीं करना चाहती थीं। अंकल केन ने भी विषय बदल दिया जब भी मैंने इस प्रसंग को उठाया।

इसलिये मैं खुद ही फलों के बागान में घूमने लगा, सतर्कता से बाग के निषिद्ध और उपेक्षित कोने में अपना रास्ता बनाते हुए जब तक धूकी ने पीछे से मुझे आवाज़ नहीं लगायी।

"वहाँ मत जाओ, बाबा," उसने चेतावनी दी, "वह जगह मनहूस है।"

"कोई उस पुराने आम के पेड़ के पास क्यों नहीं जाता?" मैंने दादी जी से पूछा।

उन्होंने बस अपना सिर हिलाया और घूम गयीं। वहाँ ज़रूर कुछ ऐसा था जिसके बारे में लोग चाहते थे कि मैं न जानूँ। इसलिये मैंने अवज्ञा और सबकी उपेक्षा की और दोपहर की निस्तब्धता में जब घर के अधिकांश लोग झपकी ले रहे थे, मैं बाग के कोने में खड़े पुराने आम के पेड़ के पास पहुँचा।

वह एक ठंडी, छायादार जगह थी और काफ़ी अपनी सी लग रही थी। लेकिन वहाँ कोई चिड़िया नहीं थी, कोई गिलहरी तक नहीं। और यह एक विचित्र बात थी। मैं पेड़ के तने से पीठ टिकाये घास पर बैठ गया और सूरज की रोशनी में दमकते घर और बाग को ताकता रहा। जगमगाती गर्म धुँधली रोशनी में मैंने किसी को पेड़ की तरफ़ आते देखा, लेकिन वह धूकी या कोई ऐसा नहीं था, जिसे मैं जानता था।

यह एक गर्म दिन था, लेकिन मुझे अभी ठंड लगनी शुरू हो गयी थी; और फिर मैंने खुद को काँपते पाया जैसे अचानक मुझे बुखार चढ़ आया हो। मैंने ऊपर पेड़ की ओर देखा और मेरे ऊपर की शाखाएँ घूमने लगीं, आहिस्ता-आहिस्ता झूलती हुई। हालाँकि वहाँ बिलकुल हवा नहीं थी और दूसरे सभी पत्ते और शाखाएँ स्थिर थीं।

मुझे महसूस हुआ कि मुझे ठंड से उठकर चले जाना चाहिए लेकिन मुझे उठने में दिक्कत हो रही थी। इसलिये मैं अपने हाथ और घुटने की मदद से घास पर घिसटने लगा, जब तक मैं चमकते सूरज की रोशनी में नहीं आ गया। कँपकँपाहट बन्द हो गयी थी और मैं घर की ओर भागा और जब तक मैं बरामदे में नहीं पहुँच गया, मैंने पलटकर उस आम के पेड़ को नहीं देखा।

मैंने मिस केल्लनर को अपने अनुभव के बारे में बताया।

"क्या तुम डर गये थे?" उन्होंने पूछा।

"हाँ, थोड़ा-सा," मैंने स्वीकार किया।

"और क्या तुमने कुछ देखा?"

"कुछ शाखाएँ हिलीं—मुझे बहुत ठंड लगी—लेकिन वहाँ बिलकुल भी हवा नहीं थी।"

"क्या तुमने कुछ सुना?"

"बस एक हल्की कराहती आवाज़।"

"यह एक पुराना पेड़ है। यह कराहता है जब यह अपनी उम्र महसूस करता है—जैसे कि मैं!"

मैं उस आम के पेड़ के पास फिर कुछ समय के लिए नहीं गया और मैंने उस घटना का ज़िक्र दादी जी या अंकल केन से नहीं किया। मैं अब तक यह समझ गया था कि यह विषय उनके लिए निषिद्ध है।

~

बचपन में मैं हमेशा ही सुनसान जगहों को खोजता रहता था—उजाड़ बगीचे और फलों के बाग, सुनसान घर, झाड़ियों के झुंड या बंजर जगह, शहर के बाहर का मैदान, जंगल के किनारे। ऐसे ही बँगले के पीछे के अपने एक संधान में, लैन्टाना झाड़ियों के बीच से

अपना रास्ता बनाते हुए मैं एक बड़े पत्थर के टुकड़े से टकरा गया, और गिरने के कारण मेरी एड़ियाँ मुड़ गयीं। थोड़ी देर मैं घास पर बैठा अपने पैरों की मालिश करता रहा। जब दर्द थोड़ा कम हुआ, तो मैंने उस पत्थर के टुकड़े को करीब से देखा और यह देखकर आश्चर्यचकित हुआ कि यह एक कब्र का पत्थर है। यह पूरी तरह लताओं से ढँका था; ज़ाहिर था कि सालों से कोई इसके करीब नहीं आया। मैंने पत्थर को उखाड़ा और कुछ मेरे हाथ में आ गया। कब्र पर कुछ अस्पष्ट से अक्षरों में लिखा था, घास और काई से आधा छिपा हुआ। मैं एक नाम पढ़ पाया—रोज़—लेकिन कुछ और भी लिखा था।

मैं वहाँ थोड़ी देर बैठा, अपनी खोज के बारे में सोचता हुआ और आश्चर्यचकित होता हुआ कि क्यों 'रोज़' को उस एकान्त जगह में दफ़नाया गया होगा, जबकि कब्रगाह बहुत दूर नहीं थी। उसे क्यों नहीं उसके सगे- सम्बन्धियों के बीच दफ़नाया गया? क्या उसने यह इच्छा की थी? और क्यों?

सिर्फ़ मिस केल्लनर मेरे सवालों का उत्तर देने के लिए तैयार दिखती थीं, और ये वहीं थीं जिनके पास मैं गया, जब वह अपनी आरामकुर्सी पर चकोतरे के पेड़ के नीचे बैठी थीं—वही आरामकुर्सी जिस पर से वह कभी नहीं हिलती थीं बस उस समय के अतिरिक्त जब उन्हें आया या उनके रिक्शावाले लड़के गोद में उठाकर बिस्तर या स्नानघर ले जाते थे। मैं विकलांग मिस केल्लनर को कभी भूल नहीं सकता जो अपनी आरामकुर्सी में बगीचे में बैठी, पूरे धैर्य से जीर्ण-शीर्ण ताश की गड्डी से खेलती रहतीं—और मेरे साथ हमेशा धैर्य से पेश आतीं। जब भी मैं उनके खेल में अपने पड़ोसियों या रिश्तेदारों या उनके खुद के इतिहास से सम्बन्धित अन्तहीन प्रश्नों द्वारा बाधा डालता। एक बच्चा होने के बावजूद भी मुझे अतीत मंत्रमुग्ध करता था। मेरा मतलब देशों का इतिहास नहीं; व्यक्तिगत इतिहासों से था, लोगों के जीवन जीने के तरीके और वे क्यों खुश या नाखुश थे, और उन्होंने क्यों अकारण ही कभी बहुत ही गलत या खतरनाक काम किये।

"मिस केल्लनर," मैंने पूछा, "उस घर के पीछे जंगल में किसकी कब्र है?"

उन्होंने अपने नाक पर चढ़े बड़े चश्मे के किनारे से मुझे देखा, "तुम यह कैसे उम्मीद करते हो कि मुझे पता होगा? क्या मैं ऐसी लगती हूँ कि दीवारें चढ़कर पुरानी कब्रों को खोजती फिरूँ? क्या तुमने अपनी दादी से पूछा है?"

"दादीजी मुझे कुछ नहीं बतायेंगी। और अंकल केन ऐसे दिखते हैं कि वह सब जानते हैं जबकि वह कुछ नहीं जानते।"

"तो मुझे कैसे पता होना चाहिए?"

"आप यहाँ बहुत समय से हैं।"

"सिर्फ़ बीस साल से। यह तब हुआ जब मैं यहाँ इस घर में नहीं आयी थी।"

"क्या हुआ?"

"ओह, तुम परीक्षा लेते हो। तुम्हें सब कुछ क्यों जानना है?"

"यह नहीं जानने से अच्छा है।"

"क्या तुम सच में जानना चाहते हो? कई बार अच्छा होता है कि हम नहीं जानें।"

"कभी-कभी, शायद...लेकिन मैं जानना चाहूँगा। 'रोज़' कौन थी?"

“तुम्हारे दादाजी की पहली पत्नी”

“ओह यह बात तो बहुत आश्चर्यजनक है। मैंने अपने दादाजी की पहली शादी के बारे में नहीं सुना। लेकिन वह उस एकान्त जगह में क्यों दफ़नायी गयी हैं? कब्रगाह में क्यों नहीं?”

“क्योंकि उन्होंने आत्महत्या कर ली थी। और उन दिनों आत्महत्या करने वालों को किसी कब्रगाह में ईसाई तरीके से नहीं दफ़नाया जाता था। क्या अब तुम्हारी जिज्ञासा शान्त हुई?”

लेकिन मेरी और ज़्यादा जानने की भूख बढ़ती जा रही थी, “और उन्होंने आत्महत्या क्यों की?”

“मैं सच में नहीं जानती, बच्चे। कोई क्यों करता होगा? क्योंकि वह खुश नहीं होंगी, जीवन से तंग आ गयी होंगी, या किसी बात से परेशान रही होंगी।”

“आप तो जीवन से नहीं थकीं, क्या आप थकी हैं? जबकि आप चल नहीं सकतीं और आपकी सारी उँगलियाँ मुड़ी हुई हैं...”

“अशिष्ट मत बनो, नहीं तो तुम्हें मेरे भंडार से कोई स्वादिष्ट चीज़ नहीं मिलेगी, मेरी उँगलियाँ लिखने और तुम जैसे छोटे लड़कों की रीढ़ पर चुभोने के लिए एकदम सही हैं।” और उन्होंने अपनी उँगलियाँ मुझे चुभो दीं जिससे मैं चीख उठा। “नहीं, मैं जीवन से थकी नहीं हूँ—अब तक नहीं—लेकिन लोग अलग तरह से बने होते हैं, तुम जानते हो। और तुम्हारे दादाजी अब हमारे साथ नहीं हैं, यह बताने के लिए कि क्या हुआ था। और फिर उन्होंने दोबारा शादी कर ली—तुम्हारी दादी से...”

“क्या वह दादाजी की पहली पत्नी के बारे में जानती थीं?”

“मुझे नहीं लगता। वह तुम्हारे दादाजी से बहुत बाद में मिलीं। लेकिन उन्हें इन सब के बारे में बात करना पसन्द नहीं।”

“और ‘रोज़’ ने कैसे आत्महत्या की?”

“मुझे कुछ नहीं पता।”

“आप बिलकुल जानती हैं, मिस केल्लनर। आप मुझे धोखा नहीं दे सकतीं। आप सब कुछ जानती हैं!”

“मैं यहाँ नहीं थी, मैंने तुम्हें बताया।”

“लेकिन आपने इस बारे में सब कुछ सुना है। और मुझे पता है कि उन्होंने कैसे किया। उन्होंने ज़रूर खुद को उस आम के पेड़ से लटका लिया होगा—बगीचे के आखिरी पेड़ से, जिससे सब दूर भागते हैं। मैंने आपको बताया था कि मैं वहाँ एक दिन गया था, और वहाँ छाया में बहुत ठंड और अकेलापन था। मैं डर गया था, आप जानती हैं।”

“हाँ,” मिस केल्लनर ने दर्द भरी आवाज़ में कहा, “वह ज़रूर बहुत अकेली रही होंगी, बेचारी। वह बहुत स्थिर नहीं थीं, मुझे बताया गया था। अक्सर अकेली भटकती रहती थीं, जंगली फूल चुनती, खुद में गुनगुनाती, कभी गुम भी हो जातीं और देर गये घर लौटतीं। वह पुराना गीत क्या था? रेतीली हवा में एकाकी...” अपनी कर्कश आवाज़ में आगे बताने से पहले वह एक पुराने कथागीत का हिस्सा गाने लगीं, “तुम्हारे दादाजी उसे

बहुत चाहते थे। वह एक क्रूर व्यक्ति नहीं थे। वह उसकी विचित्र हरकतों को बहुत सहते लेकिन कभी-कभी उनका धैर्य जवाब दे जाता और वह उसे डाँटते और एक या दो बार उसे कमरे में बन्द भी कर दिया था। यह बहुत डराने वाला होता, क्योंकि वह चिल्लाना शुरू कर देती थीं। कमरे में बन्द करना एक गलती थी। किसी को बन्द मत करो, बच्चे... उसके अन्दर कुछ हावी हो रहा था। वह कभी-कभी उग्र हो जाती थी।"

"आप यह सब कैसे जानती हैं, मिस केल्लनर?"

"तुम्हारे दादाजी कभी-कभी आते थे और मुझे अपनी मुश्किलें बताते थे। मैं तब दूसरे घर में रह रही थी, सड़क से थोड़ा नीचे। बेचारे, 'रोज़' के साथ उनका समय बहुत मुश्किल भरा था। वह उसे रांची, मानसिक रोगियों के अस्पताल में भेजने के बारे में विचार कर रहे थे कि एक दिन 'रोज़' को आम के पेड़ से लटका पाया। उसकी आत्मा उड़ चुकी थी, उस नीली चिड़िया के पास जो वह हमेशा से बनना चाहती थी।"

उसके बाद, मैं उस आम के पेड़ के पास नहीं गया, मुझे वह खतरनाक लगा जैसे उसने वास्तव में उस स्याह घटना में सहयोग दिया हो। बेचारा निर्दोष पेड़, असामान्य मनुष्यों की भावनाओं की सज़ा झेलता! लेकिन मैं उस उपेक्षित कब्र पर दोबारा ज़रूर गया और खरपतवार साफ़ की ताकि उसकी लिखावट साफ़ तौर पर दिखने लगे—'रोज़, हेनरी की प्रिय पत्नी—' (उसके बाद मेरे दादाजी का उपनाम लिखा था)। और जब धूकी नहीं देख रहा था, मैंने एक लाल गुलाब बगीचे से तोड़ा और उसे कब्र पर रख दिया।

एक दोपहर, जब दादीजी अपनी ब्रिज पार्टी में थीं और अंकल केन घूम रहे थे, मैंने पीछे के बरामदे से सटे भंडारगृह को छान मारा, पुरानी स्क्रैपबुक और मैगज़ीन को उलटता-पलटता रहा। किताबों के ढेर के पीछे मुझे एक पुराना ग्रामोफ़ोन और बहुत सलीके से रखा ग्रामोफ़ोन रिकॉर्ड का एल्बम, और एक स्टील की सुइयों का बक्सा मिला। मैं ग्रामोफ़ोन को बैठक में ले गया और एक रिकॉर्ड बजाने की कोशिश की। उसकी आवाज़ बिलकुल ठीक थी। तो मैंने कुछ और रिकॉर्ड बजाये। वे सभी बीते सालों के गाने थे, 1920 और 30 में प्रख्यात हुए टेनोर और बरिटोंस द्वारा गाये रूमानी कथा गीत। दादी जी संगीत नहीं सुनती थीं और यह ग्रामोफ़ोन बहुत समय से उपेक्षित था। अब, बहुत सालों में पहली बार कमरे में संगीत फैला हुआ था। एक अकेला, मैं तुम्हें फिर देखूँगा, क्या मुझे याद करोगे? सिर्फ़ एक गुलाब...

सिर्फ़ एक गुलाब
तुम्हें देने के लिए
सिर्फ़ एक गीत,
मंद होता हुआ,
सिर्फ़ एक मुस्कान
याद रखने के लिए

जब यह मधुर प्रेमगीत बज रहा था, एक आकृति कमरे के करीब आती प्रतीत हुई।

पहले वह काली हुई। फिर हल्की गुलाबी चमक कमरे में फैल गयी, और फिर एक मुस्कुराती हुई उदास औरत सफ़ेद कपड़ों में, चलती हुई नहीं लगभग तैरती-सी, मेरी ओर

बढ़ रही थी। वह कमरे के बीच में रुक गयी और मुझे देखती हुई लग रही थी। उसने पुराने ज़माने की लम्बी, चोगेनुमा पोशाक पहन रखी थी और उसके बाल उसी तरह से सज्जित थे जैसा मैंने पुरानी फ़ोटो में देखा था।

जब गाना खत्म हुआ, वह आत्मा गायब हो गयी। कमरा फिर से सामान्य था। मैंने ग्रामोफ़ोन और रिकॉर्ड रख दिया। मैं डरने से ज़्यादा परेशान था, और मैं अतीत की पुरानी चीज़ों को फिर से जीवित नहीं करना चाहता था।

लेकिन उस रात सपने में मैंने उस सुन्दर उदास औरत को फिर देखा। वह बगीचे में झूला झूल रही थी, कभी खुद, कभी अन्य प्रेत नर्तकों के साथ, उसने मेरे सपने में ही मुझे इशारा किया, मुझे अपने साथ सम्मिलित होने का आमन्त्रण दिया लेकिन मैं बरामदे की सीढ़ियों पर खड़ा रहा, जब तक वह नाचती दूर नहीं चली गयी और अन्त में गायब हो गयी।

और सुबह जब मैं जागा, मुझे एक लाल गुलाब, ओस में भीगा, अपने तकिये के पास रखा मिला।

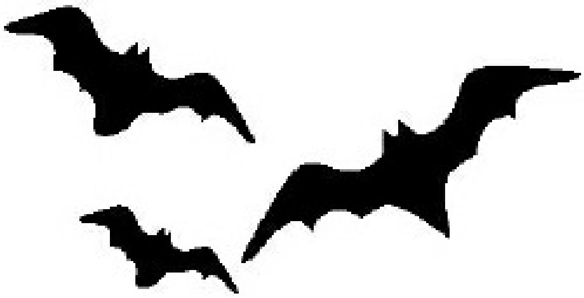

परियों की पहाड़ी पर

वह नन्ही हरी बत्तियाँ जिन्हें मैं परी टिब्बा पर टिमटिमाते देखता था—उसका कोई वैज्ञानिक आधार भी होगा। मैं इसके लिए निश्चित था। अँधेरे के बाद हम बहुत-सी ऐसी चीज़ें देखते या सुनते हैं जो रहस्यमयी या अतार्किक लगती हैं। और फिर दिन के उजाले में हम पाते हैं कि उस जादू या रहस्य की एक परिभाषा ज़रूर है।

मैं उन बत्तियों को कभी-कभी देखता था, देर रात में, जब मैं शहर से जंगल के किनारे पर बने अपने कॉटेज में लौटा करता था। वे इतनी तेज़ी से चलती थीं कि कोई टॉर्च या लालटेन थामे व्यक्ति नहीं चल सकता। और चूँकि परी टिब्बा पर कोई सड़क नहीं थी, वे बत्तियाँ कोई साइकिल या गाड़ी का लैम्प नहीं हो सकती थीं। किसी ने मुझे बताया कि चट्टानों में फास्फोरस है और सम्भवतः यह कथन देर रात को चमकती उन रोशनियों के लिए सही माना जा सकता था। शायद, लेकिन मैं सहमत नहीं था।

उन छोटे लोगों से मेरा सामना दिन के उजाले में हुआ।

अप्रैल में एक सुबह, तड़के, मैंने परी टिब्बा के शीर्ष पर चढ़कर खुद पता करने की सोची। हिमालय की तलहटी में वह वसन्त का मौसम था। पौधों का रस बढ़ रहा था—पेड़ों में, घास में,जंगली फूलों में, मेरी अपनी शिराओं में। मैंने सिन्दूर के जंगल से गुज़रता हुआ रास्ता लिया जो नीचे पहाड़ी की तलहटी की नन्ही धारा तक जाता था और वहाँ से ऊपर परी टिब्बा की खड़ी चोटी पर, परियों की पहाड़ी।

ऊपर चढ़ना बहुत संघर्षपूर्ण था। रास्ता ढलान के नीचे धारा के पास खत्म हो गया था। मुझे जंगली बेरियों और घास से भरे पहाड़ी पत्थरों को पकड़ कर ऊपर चढ़ना पड़ा। देवदार की नुकीली पत्तियाँ, ज़मीन की फिसलन, पैरों को जमने में दिक्कत दे रही थी। लेकिन आखिरकार मैं ऊपर पहुँच गया—एक घास का मैदान जहाँ देवदार के पेड़ झालर की तरह लगे थे और कुछ जंगली फल के पेड़ जिन पर उजले फूल लगे थे।

वह एक सुन्दर जगह थी, लेकिन मुझे गर्मी लग रही थी और पसीना आ रहा था। मैंने अपने लगभग सारे कपड़े उतार लिये और फल के पेड़ के नीचे लेट गया। चढ़ाई बहुत

थकाने वाली थी। लेकिन ताज़ी हवा ने मुझे राहत दी जो देवदारों के बीच हल्के से गुनगुना रही थी। घास, पीले फूलों से छितराई हुई, झींगुर और टिड्डों की आवाज़ से भरी हुई थी।

थोड़ी देर बाद मैं उठा और मैंने उस नज़ारे को निहारा। उत्तर में अपने पुराने लाल पत्थरों से बने कॉटेज के साथ खेतिहर ज़मीन थी तो दक्षिण में विशाल घाटी और एक चाँदी-सी चमकती धारा गंगा की ओर बहती हुई। पश्चिम में दूर तक फैली पहाड़ियाँ इधर-उधर कहीं जंगल और उनके बीच एक छोटा सा गाँव था।

मेरी उपस्थिति से परेशान, एक हिरण मैदान से होते हुए सामने वाले ढलान पर भाग गया। लम्बी पूँछ वाली नीलकंठ चिड़िया का दल सिन्दूर के पेड़ से उड़कर, टीले से होते हुए, सिन्दूर के अन्य पेड़ों के समूह पर जाकर बैठ गया।

मैं अकेला था, हवा और आकाश के साथ अकेला। लगभग महीनों, शायद सालों से इस तरफ़ कोई इन्सान नहीं आया था। मुलायम, हरी घास आमन्त्रित करती दिख रही थी। मैं सूरज की रोशनी से गर्म हुई धरती पर लेट गया। मेरे वज़न से दबे और घायल, घास में उग रहे कैटमिंट और क्लोवर के पौधे अपनी भीनी-भीनी खुशबू छोड़ने लगे। लाल-काली चित्तियों वाला लेडीबर्ड कीड़ा मेरे पैर पर चढ़ा और मेरे शरीर का संधान करने लगा। सफ़ेद तितलियों का एक समूह मेरे आस-पास चक्कर काट रहा था।

मैं सो गया।

मुझे अन्दाज़ा नहीं कि मैं कब तक सोया रहा। जब मैं जागा, तो एक विचित्र लेकिन राहत देने वाली उत्तेजना अपने अंगों में महसूस की, जैसे उन पर गुलाब की पत्तियाँ हौले-हौले फेरी जा रही हों।

मेरी सारी सुस्ती दूर हो गयी थी, मैंने अपनी आँखें खोलीं तो एक नन्ही लड़की को देखा—या वह कोई औरत थी—लगभग दो इंच लम्बी, पालथी मारकर मेरे सीने पर बैठी और एकाग्रचित्त होकर मेरा अध्ययन करती हुई। उसके लम्बे, काले बाल खुले हुए थे। उसकी त्वचा का रंग शहद जैसा था। उसके पुष्ट नन्हे वक्ष बलूत के छोटे फलों जैसे थे। उसके हाथ में एक पीला फूल था, जो उसकी हथेली से बड़ा था और वह उस फूल को मेरे शरीर पर फेर रही थी।

मुझे पूरे शरीर में गुदगुदी-सी हो रही थी। मेरे पूरे शरीर में कामुक खुशी की अनुभूति दौड़ गयी।

एक नन्हा लड़का या क्या वह आदमी था और वह भी नग्न। अब उस परी समान लड़की के साथ शामिल हो गया था और उन्होंने एक-दूसरे का हाथ पकड़ा और मेरी आँखों में देखा, मुस्कुराते हुए। उनके दाँत नन्हे मोतियों की तरह थे, उनके होंठ खुबानी के फूल की मुलायम पंखुड़ियों से थे। क्या वे प्रकृति के जीव थे, फूल परियाँ, जिनको मैंने अक्सर सपने में देखा था।

मैंने अपना सिर उठाया और देखा कि मेरे आस-पास हर तरफ़ नन्हे लोगों का झुंड है। वे मुलायम और सौम्य जीव मेरे पैरों, हाथों और मेरे शरीर को हल्के-हल्के सहला रहे थे। उनमें से कुछ मुझे ओस और फूलों के रस और कुछ अन्य नरम खुशबुओं से नहला रहे थे। मैंने अपनी आँखें फिर बन्द कर लीं। शुद्ध शारीरिक आनन्द की एक लहर ने मुझे घेर लिया। मुझे इस तरह की अनुभूति पहले कभी नहीं हुई थी। यह अनन्त थी, मुझे खुद में

समेटती हुई। मेरे शरीर के अंग पानी में बदल गये थे। आकाश मेरे चारों ओर घूम रहा था और मैं ज़रूर बेहोश हो गया था।

जब मैं जागा, शायद एक घंटे बाद, वे नन्हे लोग चले गये थे। मधुलवंग की खुशबू हवा में ठहरी हुई थी। सिर पर एक तेज़ गर्जन ने मुझे ऊपर देखने को बाध्य किया। काले बादल जमा हो गये थे, बारिश की चेतावनी देते हुए। क्या बादलों की गरज ने उन्हें डरा दिया जिससे वे पत्थरों और जड़ों के नीचे बने अपने आशियाने में छुप गये थे? या वह एक अनजान नवागंतुक के साथ खेलते हुए बस थक गये थे? वे शरारती थे; क्योंकि जब मैंने चारों ओर अपने कपड़े खोजे, मुझे वे कहीं नहीं मिले।

एक आतंक की लहर मुझमें दौड़ गयी। मैं यहाँ-वहाँ दौड़ा, झाड़ियों और पेड़ की शाखाओं के पीछे देखता हुआ, लेकिन कोई फ़ायदा नहीं हुआ। मेरे कपड़े परियों के साथ गायब हो चुके थे—अगर वे सच में परियाँ थीं!

बारिश होने लगी थी। सूखे पत्थरों पर बड़ी बूँदें गोलों की तरह बरसने लगी थीं। फिर ओले पड़ने लगे और ढलान बर्फ़ से ढँक गयी। वहाँ कोई छाया नहीं थी। नग्न, मैं धारा तक कैसे भी संघर्ष करके पहुँचा। वहाँ मुझे देखने वाला कोई नहीं था—सिर्फ़ एक जंगली पहाड़ी बकरी के अलावा जो विपरीत दिशा में भागी जा रही थी। हवा के झोंके, बारिश और ओले मेरे चेहरे और शरीर पर फेंक रहे थे। हाँफते और काँपते हुए, मैंने एक लटकते हुए पत्थर के नीचे शरण ली, जब तक तूफ़ान गुज़र नहीं गया। तब तक शाम हो गयी थी और मैं अपने कॉटेज के लिए जाते रास्ते पर चढ़ चुका था, हतप्रभ लंगूरों के झुंड को छोड़कर बिना किसी और का सामना किये हुए, जो मुझे देखकर उत्तेजित होकर बतियाने लगे थे।

मैं लगातार काँप रहा था, इसलिए सीधा बिस्तर में घुस गया। मैं एक गहरी, बिना सपने की नींद में पूरी दोपहर, शाम और रात सोता रहा और दूसरी सुबह तेज़ बुखार के साथ जागा।

यंत्रवत मैंने कपड़े पहने, अपने लिए थोड़ा नाश्ता बनाया और सुबह के काम निबटाने की कोशिश की। जब मैंने शरीर का तापमान देखा, वह 104 था, इसलिए मैंने एक ब्रूफेन की गोली निगली और वापस बिस्तर में घुस गया।

मैं दोपहर देर तक सोता रहा, जब तक डाकिये की दस्तक ने मुझे नहीं जगाया। मैंने अपनी चिट्ठियाँ बिना खोले ही मेज़ पर रख दीं—एक अनुल्लंघनीय अनुष्ठान को तोड़ते हुए—और वापस बिस्तर में घुस गया।

~

बुखार लगभग एक हफ़्ता रहा और मुझे कमज़ोर और शक्तिहीन कर गया। मैं चाहता भी तो परी टिब्बा पर दोबारा नहीं चढ़ सकता था। लेकिन मैं अपनी खिड़की से बेरंग पहाड़ी पर तैरते बादल देखता। वह उजाड़ प्रतीत होते हुए भी विचित्र रूप से बसा हुआ नज़र आता। जब वह अँधेरे में डूबता, मैं नन्ही हरी बत्तियों के आने का इन्तज़ार करता, लेकिन ऐसा प्रतीत होता था कि उन्होंने मुझे यह देखने से वंचित कर दिया है।

और इसलिये मैं अपनी मेज़ पर लौट आया, मेरा टाइपराइटर, मेरे अखबार के आलेख और मेरी चिट्ठियाँ। वह मेरे जीवन का एक एकाकी समय था। मेरी शादी टूट गयी थी, मेरी पत्नी को उच्च स्तरीय रहन-सहन पसन्द था और जंगलों में बने एक दूरस्थ कॉटेज में एक असफल लेखक के साथ रहने से नफ़रत। वह मुम्बई में अपना एक सफल करियर बना रही थी। मैं हमेशा से पैसे बनाने को लेकर आधे मन से सोच पाता था, जबकि उसे हमेशा अधिक-से-अधिक की चाह थी। उसने मुझे छोड़ दिया—मेरी किताबों और मेरे सपनों के साथ...

परी टिब्बा की वह विचित्र घटना, क्या वह एक सपना थी? क्या मेरी अतिसक्रिय कल्पना ने उन आभासी आत्माओं को वास्तविक किया था, ऊपर हवा में रहने वाले वे सिद्ध? या वे ज़मीन के नीचे रहने वाले लोग थे, पहाड़ियों की गहरी खोह में रहने वाले? अगर मुझे अपना मानसिक सन्तुलन बनाये रखना था तो यही सही था कि मैं रोज़ की उबाऊ जीवन पद्धति को अपनाऊँ—शहर जाकर किराने का सामान खरीदना, चूती हुई छत की मरम्मत कराना, बिजली का बिल जमा करना और उन पुराने बैंक के चेक जमा करना जो मेरे नाम आये थे। यह सभी दैनिक दिनचर्या के कार्य-कलाप जो जीवन को रंगहीन और उबाऊ बनाते हैं।

सच तो यह है कि जिसे सामान्यतः हम जीवन कहते हैं वह बिलकुल भी जीने लायक नहीं है। वे नियमित और स्थायी जीवन प्रक्रिया जिसे हमने जीवन पद्धति की तरह स्वीकार कर लिया है, वास्तव में जीवन का अभिशाप है। वे हमें क्षुद्र और एकरस चीज़ों से बाँधते हैं और उससे छुटकारा पाने के लिए और एक ज़्यादा बेहतर और पूर्ण अस्तित्व पाने के लिए हम कुछ भी करने को तैयार रहेंगे, लेकिन अगर यह सम्भव नहीं हुआ, तो कुछ घंटों के लिए ही इसे शराब, नशीली दवाओं, निषिद्ध शारीरिक सम्बन्धों और यहाँ तक कि गोल्फ़ खेलकर भी भुलाते हैं। इसलिये परियों के साथ भूमिगत हो जाना मुझे असीम सुख देने वाला था। वे नन्हे लोग जिन्होंने मानवजाति के संहारक रवैये से बचकर धरती माँ की शरण ली है, तितलियों और फूलों से नाज़ुक हैं। सभी सुन्दर चीज़ें आसानी से नष्ट कर दी जाती हैं।

मैं अपनी खिड़की पर घिरते अंधकार में बैठा, इन आवारा खयालों को लिख रहा था, जब मैंने उन्हें आते देखा—हाथों में हाथ डाले, कुहरे में लिपटे हुए, इन्द्रधनुष के चमकदार रंगों से सराबोर। इन्द्रधनुष ने उनके लिए परी टिब्बा से मेरी खिड़की तक एक पुल बना दिया था।

मैं उनके साथ उनके गुप्त ठिकाने या ऊपर हवा में जाने को तैयार था—दुनिया की इस जकड़न भरी कैद से दूर जहाँ हम मशक्कत करते हैं...

आओ, परियो, मुझे ले चलो, उसी परिपूर्णता को फिर से महसूस करने के लिए जैसा मैंने उस गर्म दिन में महसूस किया था।

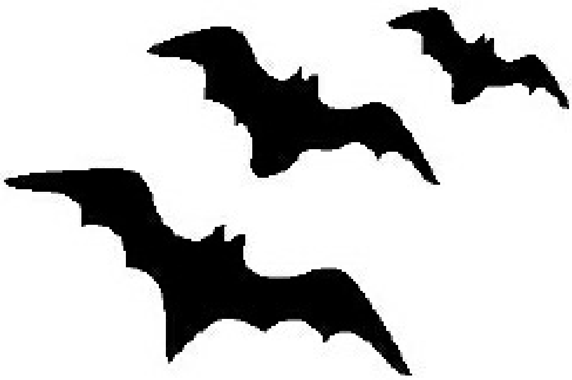

क्या एस्ट्ले लौटेगा?

उस घर को अंडरक्लिफ कहा जाता था, क्योंकि वह वहीं स्थित था—एक चोटी के नीचे। जो आदमी गया था—उस घर का मालिक—रॉबर्ट एस्ट्ले था। और जो आदमी पीछे रह गया था—घर का पुराना रखवाला—प्रेम बहादुर था।

एस्ट्ले बहुत साल पहले चला गया था। वह चालीस के आस-पास की उम्र तक कुँवारा था जब उसने अचानक एक दिन निर्णय लिया कि वह रोमांच, रूमानी प्रेम और दूरस्थ जगहों की चाह रखता है और उसने अपने घर की चाभी प्रेम बहादुर को दे दी—जो उसके परिवार की सेवा तीस साल से कर रहा था—और यात्रा पर निकल पड़ा।

किसी ने उसे श्रीलंका में देखा। किसी से सुना गया कि वह बर्मा में मोगोक के माणिक की खान में है। फिर वह जावा के संडा जलडमरुमध्य को पार करते दिखा। फिर उसके निशान मिलने बन्द हो गये। सालों बीत गये। हिलस्टेशन पर बना वह घर खाली रहा।

लेकिन प्रेम बहादुर अब भी वहीं था, आउटहाउस में रहता हुआ।

हर दिन वह अंडरक्लिफ खोलता, सभी कमरों के फ़र्नीचर को झाड़ता, पोंछता, यह निश्चित करता कि बिस्तर की चादरें और तकिये के गिलाफ़ साफ़ हों और एस्ट्ले के ड्रेसिंग गाउन और चप्पलों को जगह पर रखता।

पहले जब एस्ट्ले यात्रा के बाद या पहाड़ियों पर एक लम्बी सैर के बाद घर लौटता था तो वह नहाना पसन्द करता और अपना गाउन और चप्पलें बदलता था, चाहे कोई भी पहर हो। प्रेम बहादुर अब भी उन्हें तैयार रखता था। वह इस बात के लिए निश्चित था कि एक दिन रॉबर्ट लौटेगा।

एस्ट्ले ने खुद उससे ऐसा कहा था।

“मेरे लिए सब कुछ तैयार रखना, प्रेम, पुराने दोस्त। मैं शायद एक साल, या दो साल

या उससे भी देर से लौटूँ, लेकिन मैं लौटूँगा ज़रूर, मैं तुमसे वादा करता हूँ। हर महीने की पहली तारीख को मैं चाहता हूँ कि तुम मेरे वकील, मिस्टर कपूर के पास जाओ। वह तुम्हें तुम्हारा वेतन और मरम्मत या अन्य कामों में खर्च करने के लिए जितने पैसों की ज़रूरत होगी, देंगे। मैं चाहता हूँ कि तुम इस घर को चुस्त-दुरुस्त रखो!"

"क्या आप वापस आते हुए पत्नी को लायेंगे, साहिब?"

"ईश्वर, नहीं! यह विचार किसने तुम्हारे दिमाग़ में भरा?"

"मैंने सोचा, शायद—क्योंकि आप चाहते थे कि घर तैयार रहे..."

"मेरे लिए तैयार, प्रेम। मैं नहीं चाहता कि मैं घर वापस लौटूँ और यह पुराना घर मुझे ढहता हुआ मिले।"

और इसलिये प्रेम घर की देखभाल करता रहा—हालाँकि एस्ट्ले की कोई खबर नहीं थी। उसे क्या हो गया? यह रहस्य लोगों के बीच एक चर्चा का विषय बन गया था, जब भी वे मॉल में मिलते और बाज़ार में दुकानदार एस्ट्ले को याद किया करते, क्योंकि वह एक ऐसा आदमी था जो आज़ादी से खर्च करता था।

उसके सम्बन्धियों को अब भी उसके ज़िन्दा होने का भरोसा था। कुछ ही महीने पहले एक भाई आया था—एक भाई जिसकी फ़र्म कनाडा में थी और वह भारत में बहुत दिन नहीं रहने वाला था। उसने वकील के पास थोड़ी और राशि रखवा दी और प्रेम से कहा कि वह पहले की तरह पैसे लेना जारी रखे। वेतन से प्रेम की कुछ ज़रूरतें पूरी होतीं। इसके अलावा वह इस बात के लिए निश्चिंत था कि रॉबर्ट लौटेगा।

कोई और आदमी होता तो उसने घर और ज़मीन की उपेक्षा की होती, लेकिन प्रेम बहादुर ने नहीं। घर के अनुपस्थित मालिक के लिए उसके मन में सच्चा आदर था। प्रेम उम्रदराज था—अब लगभग साठ का हो गया था और बहुत मज़बूत नहीं रह गया था, साँस की बीमारी और छाती की अन्य समस्याओं से पीड़ित था—लेकिन वह रॉबर्ट को एक लड़के और एक जवान व्यक्ति दोनों रूपों में याद रखे हुए था। वे पहाड़ों पर कई बार शिकार और मछली मारने के लिए साथ गये थे। वे सितारों के नीचे सोये, सर्द पहाड़ी धाराओं में नहाये और एक ही खाना पकाने के बर्तन में खाना खाया। एक बार, एक छोटी नदी पार करते हुए, अचानक आयी बाढ़ में वे धारा के साथ नीचे बहा लिये गये, वर्षा ऋतु के दौरान बिना किसी चेतावनी के पानी का रेला जो गरजते हुए नीचे घाटियों में आया। साथ मिलकर उन्होंने खुद की सुरक्षा के लिए संघर्ष किया। वापस हिल-स्टेशन लौटकर रॉबर्ट एस्ट्ले ने सबसे कहा कि प्रेम ने उसकी जान बचायी जबकि प्रेम भी इस बात पर उतना ही दृढ़ था कि वह अपने जीवन के लिए रॉबर्ट का ऋणी है।

~

इस साल मानसून जल्दी आया और देर से खत्म हुआ। यह पूरे सितम्बर जारी रहा और प्रेम बहादुर की खाँसी बढ़कर बदतर हो गयी और साँस लेना और भी ज़्यादा मुश्किल हो गया।

वह बरामदे में अपनी चारपाई पर लेटा बगीचे को देखता रहता जो उसके नियन्त्रण

से बाहर होने लगा था। उलझे हुए डेहलिया, सर्प गेंदा और कॉन्वोवलस के फूल। सूरज आखिरकर निकल आया। हवा दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व की ओर स्थानान्तरित हो गयी थी और बादलों को उड़ा ले गयी थी।

प्रेम बहादुर ने अपनी चारपाई उठाकर बगीचे में डाल ली और धूप में लेटा, हुक्का फूँक रहा था, जब उसने रॉबर्ट एस्ट्ले को गेट पर खड़ा देखा।

उसने उठना चाहा लेकिन उसके पैरों ने उसका साथ नहीं दिया। हुक्का उसके हाथ से छूटकर गिर गया।

एस्ट्ले बगीचे को पार करता हुआ आया और बूढ़े रखवाले के सामने खड़ा हो गया, उसे देखकर मुस्कुराता हुआ। वह उस समय से एक दिन भी उम्रदराज नहीं दिख रहा था, जब प्रेम बहादुर ने उसे अन्तिम बार देखा था।

"तो आखिरकार आप आ गये," प्रेम ने कहा।

"मैंने कहा था, मैं लौटूँगा।"

"बहुत साल बीत गये लेकिन आप बदले नहीं हैं।"

"तुम भी नहीं, बूढ़े दोस्त।"

"मैं बूढ़ा, बीमार और कमज़ोर हो गया हूँ।"

"तुम अब ठीक हो जाओगे, इसलिये मैं आया हूँ।"

"मैं घर खोल देता हूँ," और उसने पाया कि वह बहुत आसानी से उठ पा रहा है।

"यह ज़रूरी नहीं," एस्ट्ले ने कहा।

"लेकिन आपके लिए सब तैयार है!"

"मैं जानता हूँ। मैंने सुना है कि तुमने सब कुछ कितनी अच्छी तरह से सँभाला। आओ फिर, एक साथ चलकर सब कुछ अन्तिम बार देखते हैं। हम रुक नहीं सकते, तुम जानते हो।"

प्रेम थोड़ा उलझन में पड़ गया, लेकिन उसने सामने का दरवाज़ा खोला और रॉबर्ट को बैठक से होते हुए सीढ़ियों से ऊपर शयन कक्ष तक ले गया। रॉबर्ट ने ड्रेसिंग गाउन और चप्पलें देखीं और बूढ़े आदमी के कन्धे पर सौहार्द से अपना हाथ रखा।

जब वह नीचे लौटे और धूप में गये तो प्रेम खुद को देखकर आश्चर्यचकित रह गया—या यूँ कहें कि अपने ठठरी शरीर को—चारपाई पर पड़े हुए। हुक्का वहीं ज़मीन पर था, जहाँ वह गिरा था।

प्रेम ने चकित होकर एस्ट्ले को देखा।

"लेकिन वह कौन है—वहाँ लेटा हुआ।"

"यह तुम हो। अब सिर्फ़ एक खोल, खाली आवरण। वास्तविक तुम मेरे साथ खड़े हो।"

"आप मेरे लिए आये हैं?"

"मैं नहीं आ सका जब तक तुम तैयार नहीं थे। जहाँ तक मेरी बात है मैंने अपना आवरण काफ़ी पहले छोड़ दिया, लेकिन तुम यहाँ टिकने के लिए दृढ़ थे, इस घर को

सलामत रखने के लिए। क्या अब तुम तैयार हो?"

"और यह घर?"

"यहाँ दूसरे लोग रहेंगे। लेकिन आओ, यह मछली मारने जाने का समय है..."

एस्ट्ले ने प्रेम की बाँह पकड़ी और वे दोनों देवदार के नीचे छनकर आती सूरज की रोशनी को पार करते हुए हमेशा के लिए उस जगह को छोड़ गये।

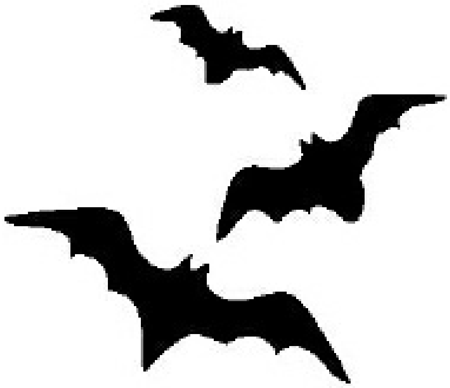

पुरस्कार

वे बहुत देर तक जगे हुए थे, पुराने रिज़ बार में पीते हुए और 1 बजे रात तक हर कोई नशे में अच्छी तरह धुत्त था। गणेश अपनी चमकती नीली ज़ेन कार में जैसे-तैसे घर लौटा। विक्टर अपनी पुरानी मॉरिस माइनर चला रहा था, जो अचानक ही रुक गयी और उसे टैक्सी में जाने के लिए बाध्य होना पड़ा। नन्दू, प्रोपराइटर, अपने कॉटेज में लँगड़ाते हुए गया, पैर का बढ़ता दर्द गठिये के हमले की भविष्यवाणी कर रहा था। बेगम तारा जिन्होंने सौ से ज़्यादा पुरानी फिल्मों में अभिनय किया, उस साइकिल रिक्शा पर चढ़ गयीं जिसका चालक नहीं था और यह बात उनके लिए कोई महत्त्व भी नहीं रखती थी, क्योंकि वह तुरन्त ही नींद में डूब गयीं। बारटेंडर रात में गायब हो गया। सिर्फ़ रूमानी युवा उपन्यासकार, राहुल वहाँ खड़ा रहा, आश्चर्यचकित कि सब कहाँ चले गये और उसे पीछे क्यों छोड़ दिया गया।

कमरे भरे हुए थे, होटल में एक भी अतिरिक्त बिस्तर नहीं था, क्योंकि यह पीक सीज़न था और हिल-स्टेशन के होटल बहुत ज़्यादा भरे हुए थे। कमरे के लड़के और रसोई का स्टाफ़ अपने आवास पर लौट गये थे। सिर्फ़ रात के चौकीदार की सीटी कभी-कभी सुनी जा सकती थी, जब सेवानिवृत्त हवलदार जगह की रखवाली करता घूमता।

युवा लेखक को यह महसूस हो रहा था कि उसे इस तरह छोड़कर उसके साथ अच्छा नहीं किया गया, बल्कि वह थोड़ा नफ़रत से भरा था। वह पार्टी की जान था—या उसने ऐसा सोचा—और सबको यह बताते हुए कि उसकी नयी किताब के लिए उसे कितनी मोटी रकम अग्रिम राशि के रूप में मिली थी और उसे 'बुकर' पुरस्कार मिलने की कितनी सम्भावना थी। उसने लोगों की जम्हाई नहीं देखी; और अगर देखी भी तो उसे बार-बार ऑक्सीज़न की कमी होना समझा। इस 'बार' का नाम इसके एक ग्राहक द्वारा 'हॉरिज़ॉन्टल-बार' रखा गया था, क्योंकि हॉरिज़ॉन्टल का अर्थ है चित्त और इसके कुछ ग्राहकों में यह प्रवृत्ति देखी गयी थी कि वे शराब पीकर गलीचे पर ही चित्त हो जाते थे—

उसी गलीचे पर जिस पर सैवॉय के ड्यूक (शासक) सौ साल पहले गुज़र गये थे।

राहुल का फ़र्श पर बेसुध होने का कोई इरादा नहीं था, लेकिन पी गयी शराब ने उसके लिए कहीं लेटना बहुत ज़रूरी कर दिया था। बिलियर्ड खेलने की मेज़ सही होती लेकिन बिलियर्ड के कमरे में ताला लगा था। वह गलियारे में लड़खड़ाता रहा, एक भी सोफ़ा या आरामकुर्सी उसे नज़र नहीं आयी। अन्ततः उसे एक दरवाज़ा मिला जो खुला हुआ था और वह एक विशाल भोजन कक्ष था, जहाँ बस एक बल्ब जल रहा था।

पुराना पियानो बहुत आमन्त्रित करता नहीं प्रतीत हो रहा था, लेकिन लम्बी भोजन की मेज़ साफ़ कर दी गयी थी, सिर्फ़ एक करी के दागों से सना मेज़पोश था जो नाश्ते में फिर से काम चलाने के लिए छोड़ दिया गया था। राहुल ने किसी तरह खुद को मेज़ पर चढ़ा लिया और फैल गया। वह एक सख्त बिस्तर था और वहाँ पहले से बिखरा ब्रेड का चूरा उसकी सौम्य त्वचा को चुभ रहा था लेकिन वह इसकी परवाह करने के लिए बहुत थका हुआ था। एकदम उसके ऊपर जलता वह हल्की रोशनी वाला बल्ब भी उसे परेशान कर पाने में अक्षम था। हालाँकि कमरे में बिलकुल हवा नहीं थी, बल्ब हल्का हिल रहा था जैसे किसी अदृश्य हाथ ने उसे धीरे से हिला दिया हो।

वह एक घंटे के लिए सो गया, गहरी, बिना सपने की नींद और फिर उसे संगीत, आवाज़, पदचापों और हँसी का हल्का-सा आभास हुआ। कोई पियानो बजा रहा था। कुर्सियाँ पीछे खींची जा रही थीं। गिलास खनक रहे थे। चाकू और छुरी भोजन की प्लेटों पर बज रहे थे।

राहुल ने अपनी आँखें खोलीं तो पाया कि एक दावत चल रही है। उसी मेज़ पर—जिस मेज़ पर वह लेटा हुआ था—अब अनेक प्रकार के भोजन से मेज़ भरी पड़ी थी और भोजन करने वाले उसकी उपस्थिति से बिलकुल अनजान थे। पुरुषों ने पुराने ज़माने की पोशाक—ऊँचे कॉलर वाले सूट और बो टाई पहन रखी थी; स्त्रियों ने तंग चोली वाली लम्बी झालरदार पोशाक पहन रखी थी जो उनके सीने को उदारता से औरों के लाभार्थ प्रदर्शित कर रही थी। अपनी पुरानी आदत के अनुसार, राहुल के हाथ स्वतः ही अपने सबसे करीबी युवती के वक्ष तक पहुँच गये और पहली बार उसे एक झन्नाटेदार थप्पड़ नहीं पड़ा तो इसकी सीधी वजह थी कि उसके हाथ, अगर वह वहाँ थे भी तो हिल नहीं रहे थे।

किसी ने कहा, "भुना हुआ सूअर का मांस—मैं इसके इन्तज़ार में था!" और चाकू और छुरी राहुल की जांघ में गड़ा दी।

वह चिल्लाया, या चिल्लाने की कोशिश की, लेकिन किसी ने सुना नहीं; वह अपनी आवाज़ भी सुन नहीं सका। उसने पाया कि वह अपना सिर उठाकर अपने पूरे शरीर को देख सकता है, और उसने देखा कि उसके खुद के पैरों की जगह सूअर के पैर हैं।

किसी ने उसे पलट दिया और एक टुकड़ा काटा।

"सूअर के मांस का सबसे मुलायम पैर," उसकी बायीं ओर से एक स्त्री ने कहा।

एक काँटा उसके पृष्ठ भाग में गड़ा। फिर एक भीमकाय व्यक्ति, सिर पर टोपी लगाये, काटने वाला एक चाकू हाथ में लिये उस पर झुका। उसने एक चौड़ा, सफ़ेद एप्रन पहन रखा था और उस पर बड़े अक्षरों में लिखा हुआ था 'जूरी का अध्यक्ष'। चाकू लैम्प

की रोशनी में चमक रहा था।

राहुल चीखा और मेज़ पर से कूदा। वह पियानो के पास गिर पड़ा, खुद को सँभाला और पार्टी में आये लोगों को छोड़ता, भोजन कक्ष से बाहर भागा।

वह निर्जन गलियारे में दौड़ा, हर दरवाज़े को पीटता हुआ। लेकिन कोई उसके लिए खुला नहीं। आखिरकार कमरा नम्बर 12 ए—होटल 13 की संख्या इस्तेमाल करना नहीं पसन्द करते—का दरवाज़ा खुल गया। हाँफता और बुरी तरह काँपता हुआ हमारा नायक कमरे में लपका और दरवाज़े की कुंडी अन्दर से लगा ली।

यह एक सिंगल रूम था, जिसमें सिंगल बेड लगा था। बेड की चादर थोड़ी अस्तव्यस्त लगी, राहुल ने उस पर ध्यान नहीं दिया। बस वह इस बुरे सपने का अन्त चाहता था जो वह देख रहा था और थोड़ा सोना चाहता था। अपने जूते फेंकता वह पूरे कपड़ों में बिस्तर पर चढ़ गया।

वहाँ वह लगभग पाँच मिनट लेटा रहा, जब उसे यह एहसास हुआ कि वह बिस्तर पर अकेला नहीं था, उसके पास कोई और भी लेटा हुआ था, चादर से ढँका। राहुल ने बिस्तर के बगल वाला लैम्प जला लिया। कोई हिला नहीं, शरीर स्थिर रहा। चादर पर, बड़े अक्षरों में ये शब्द लिखे थे, “अगली बार बढ़िया भाग्य रहे।”

उसने चादर खींची और अपने मृत शरीर को घूरता रहा।

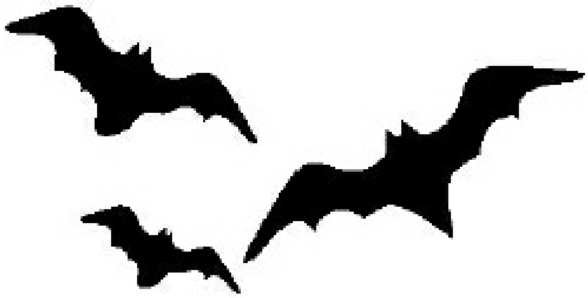

बिल्ली की आँखें

उसकी आँखें सुनहरे रंग की प्रतीत होतीं जब उन पर सूरज की रोशनी पड़ती। और जैसे ही सूरज पहाड़ों के ऊपर डूबता, आकाश में लाल गहरे घाव छोड़ता, किरण की आँखों में सुनहरे रंग से भी ज़्यादा कुछ होता। उनमें क्रोध था; क्योंकि उसकी अध्यापिका ने अपने कथन द्वारा उसका हृदय छलनी कर दिया था—हफ़्तों से चले आ रहे अपमान और व्यंग्य की तो अब अति ही हो गई थी।

किरण अपनी कक्षा की सब लड़कियों में सबसे गरीब थी और ट्यूशन ले पाने में अक्षम थी जो कि लगभग अनिवार्य हो गया था, अगर कोई उत्तीर्ण होना और दूसरी कक्षा में जाना चाहता था। “तुम्हें नौवीं में एक साल और बिताना होगा,” अध्यापिका ने कहा। “और अगर तुम्हें यह पसन्द नहीं तो तुम दूसरे स्कूल में जा सकती हो—ऐसा स्कूल जहाँ यह बात मायने नहीं रखती कि तुम्हारी शर्ट फटी है और ट्यूनिक पुरानी है और जूते जवाब देने वाले हैं।” अध्यापिका ने अपने बड़े-बड़े दाँत दिखाये, जो कि अच्छे स्वभाव की निशानी की तरह प्रदर्शित किये गये थे और बाकी लड़कियों ने भी उनका अनुसरण करते हुए अपने दाँत दिखाये। चापलूसी, अध्यापिका की निजी संस्था में पाठ्यक्रम का एक हिस्सा बन गयी थी।

घिरते अँधेरे में घर लौटते हुए किरण की दो सहपाठिनें उसके साथ थीं।

“वह एक नीच बूढ़ी औरत है,” आरती ने कहा, “उसे किसी की नहीं बस खुद की परवाह है।”

“उसकी हँसी मुझे गधे के रेंकने जैसी लगती है,” सुनीता ने कहा जो ज़्यादा सही थी।

लेकिन किरण वास्तव में सुन नहीं रही थी। उसकी आँखें दूर किसी जगह पर टिकी हुई थीं, जहाँ देवदारों की झलक दिखाई दे रही थी, रात्रि के आकाश में जो हर क्षण चमकदार होता जा रहा था। चाँद निकल रहा था, पूरा चाँद, चाँद जो किरण के लिए कुछ खास मायने रखता था, जो उसके खून को दौड़ाता और उसकी त्वचा चटकती, उसके

बाल चमकते और जगमगाते। उसके कदम हल्के होते प्रतीत हो रहे थे, उसके अंग बहुत ही भव्य लग रहे थे जब वह बहुत ही नज़ाकत और आराम से पहाड़ी के रास्ते पर चली जा रही थी।

अचानक उसने अपनी सहपाठिनों को सड़क के एक मोड़ पर छोड़ दिया।

"मैं जंगल से होते हुए छोटे रास्ते से जा रही हूँ," उसने कहा।

उसकी सहपाठिनें उसके इस तरह के आकस्मिक व्यवहार की अभ्यस्त हो चुकी थीं। उन्हें पता था कि वह अँधेरे में अकेले होने से नहीं डरती। लेकिन किरण के तेवर ने उन्हें थोड़ा सहमा दिया और अब वे एक-दूसरे का हाथ पकड़े, खुले रास्ते से तेज़ी से घर की ओर बढ़ने लगीं।

छोटा रास्ता किरण को सिन्दूर के जंगल के मध्य से ले गया। सिन्दूर के पेड़ों की टेढ़ी-मेढ़ी, शापित शाखाएँ रास्ते पर वक्र छाया फेंक रही थीं। एक सियार चाँद को देख हूआँ-हूआँ कर रहा था। कीटभक्षी रात्रि चिड़िया झाड़ियों में से बोली। किरण तेज़ चलने लगी, डर से नहीं, बल्कि किसी चीज़ की जल्दबाज़ी में और उसकी हाँफती साँसें तेज़ी से चलने लगीं। जब वह गाँव की बाहरी सीमा पर स्थित अपने घर पहुँची तो चमकते चाँद की रोशनी से पहाड़ी का किनारा नहा गया था।

रात के खाने को मना करती हुई वह सीधे अपने छोटे से कमरे में पहुँची और झटके से खिड़की खोल दी। चाँद की किरणें खिड़की की चौखट और उसकी बाज़ुओं पर पड़ रही थीं जो कि पहले से ही सुनहरे रोमकूपों से भरे हुए थे। उसके मज़बूत नाखूनों ने खिड़की की चौखट की सड़ी हुई लकड़ी के टुकड़े-टुकड़े कर दिये।

लहराती हुई पूँछ और खड़े हुए कान लिये सुनहरी आँखों वाला चीता तेज़ी से खिड़की के बाहर आ गया। घर के पीछे के खुले खेत को पार करता हुआ वह अँधेरे में गुम हो गया।

थोड़ी देर बाद उसने दबे मंद कदमों से जंगल पार कर लिया।

हालाँकि चाँद टिन की छतों पर बहुत तीव्रता से चमक रहा था, चीता जानता था कि छाया कहाँ सघन होगी और उसके साथ बहुत ही खूबसूरती से एकाकार हो रहा था। कभी-कभार साँस लेने के कारण जो हल्की रूखी खाँसी उसे हो रही थी, उसके अलावा वह कोई आवाज़ नहीं कर रहा था।

अध्यापिका लेडीज क्लब के रात्रि भोज से लौट रही थीं, जिसे 'किटेन क्लब' कहा जाता था, जो पति के क्लब से जुड़ाव को परास्त करने की एक कोशिश थी। अब भी सड़क पर कुछ लोग थे और कोई भी अध्यापिका पर ध्यान देने से खुद को रोक नहीं पाया, जिनकी आकृति एक स्टीम रोलर मशीन जैसी थी। किसी ने उस शिकारी को न देखा, न सुना जो सड़क के किनारे उतर कर चलता हुआ आया और अध्यापिका के घर की सीढ़ियों पर बैठ गया। वह वहाँ शान्ति से बैठा रहा, इन्तज़ार करता हुआ, एक आज्ञाकारी स्कूल की लड़की की तरह।

जब अध्यापिका ने चीते को देखा, उनके हाथ से उनका बैग छूट कर गिर गया और उन्होंने चिल्लाने के लिए अपना मुँह खोला; लेकिन उनकी आवाज़ बाहर नहीं आ सकी। न ही अब उनकी ज़ुबान का फिर कोई इस्तेमाल हो सकता था, चिकन बिरयानी खाने के लिए या अपने विद्यार्थियों पर ज़हर उगलने के लिए, क्योंकि चीता उनके कंठ पर छलाँग

लगाकर उनका गला मरोड़ कर उन्हें झाड़ियों में खींच कर ले जा चुका था।

~

सुबह जब आरती और सुनीता स्कूल के लिए निकलीं तो वे हमेशा की तरह किरण के घर के पास रुकीं और उसे पुकारा।

किरण धूप में बैठी अपने लम्बे, काले बालों में कंघी कर रही थी।

“क्या तुम आज स्कूल नहीं जा रहीं, किरण?” लड़कियों ने पूछा।

“नहीं, आज मुझे जाने की ज़रूरत नहीं,” किरण ने कहा। वह आलस महसूस कर रही थी लेकिन आनन्दित थी, एक सन्तुष्ट बिल्ली की तरह।

“अध्यापिका खुश नहीं होंगी,” आरती ने कहा, “क्या हम उन्हें कहें कि तुम बीमार हो।”

“इसकी ज़रूरत नहीं पड़ेगी,” किरण ने कहा और उन्हें अपनी एक रहस्यमयी मुस्कान दी, “मुझे उम्मीद है कि आज छुट्टी होने वाली है।”

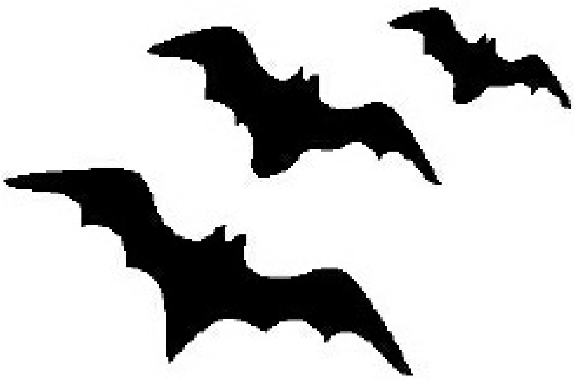

सुज़ैना के सात पति

स्थानीय लोगों में वह मकबरा 'सात बार विवाहित की कब्र' के नाम से प्रसिद्ध था। अक्सर लोग उसे नीली दाढ़ी वाले की कब्र समझ लेते थे, जिसने अपनी कई बीवियों की हत्या कर दी थी, जब उसकी बीवियों ने उसके ताले लगे कमरे का राज़ जानने की कोशिश की थी। पर यह मकबरा सुज़ैना एना-मारिया यीट्स का था और इस कब्र का शिलालेख (जो कि लैटिन भाषा में था) उन सभी लोगों का शोक व्यक्त करता था, जिन्हें उसकी उदारता से लाभ हुआ था, उस सूची में कई स्कूल, अनाथालय और सड़क के दूसरी तरफ़ वाला गिरिजाघर भी शामिल था। आस-पास किसी और कब्र के कोई चिन्ह नहीं थे और यह मुमकिन है कि उसके सभी पति दिल्ली टीले के नीचे स्थित पुराने राजपुर श्मशान में दफ़नाये गये होंगे।

मैं तब अपनी किशोरावस्था में ही था, जब मैंने पहली बार उस खंडहर को देखा था, जो किसी ज़माने में एक विशाल और शानदार हवेली रही होगी। उजाड़ और शान्त, उसके सभी रास्ते घास-फूस से ढँके हुए थे और फूलों की क्यारियाँ, घने जंगल के बीच खो गयी थीं। ग्रैंड ट्रंक रोड के किनारे स्थित था वह दो मंज़िला मकान। अब वहाँ कोई नहीं रहता था, और वह रहस्य से घिरा भयावह मकान दुष्ट आत्माओं का निवास माना जाता था।

दरवाज़े के बाहर, ग्रैंड ट्रंक रोड के ऊपर, हज़ारों गाड़ियाँ तेज़ी से गुज़र जाती थीं—कार, ट्रक, बस, ट्रैक्टर, बैलगाड़ी—पर कुछ ही का ध्यान उस पुरानी हवेली या उसके मकबरे पर जाता था, क्योंकि वे मुख्य सड़क से काफ़ी अन्दर नीम, आम और पीपल के वृक्षों से ढँके थे। एक बहुत ही विशाल और पुरातन, पीपल का पेड़ मकान के अवशेष के बीच खड़ा था, ठीक उसी तरह उस मकान का गला घोंटता हुआ जैसे उस मकान की मालकिन ने अपने किसी प्रेमी का घोंटा था।

कहा जाता था कि सुज़ैना ने कई शादियाँ की थीं और जब भी वह अपने पतियों से ऊब जाती थी तो उन्हें मार देती थी और उसकी दुष्ट आत्मा आज भी उस सुनसान बगीचे

में रहती है। मैंने मकबरे का निरीक्षण किया था, खंडहर भी देखा था, झाड़ियों और जंगली गुलाबों के पेड़ों के बीच से गुज़रा था लेकिन इस रहस्यमयी युवती की आत्मा से कभी मेरा सामना नहीं हुआ था। शायद उस समय मैं इतना निश्छल और मासूम था कि दुष्ट आत्माओं ने मुझे परेशान नहीं किया। दुष्ट तो वह रही होगी, अगर उसके बारे में प्रचलित कहानियाँ सच थीं तो।

उस उजाड़ हवेली के तहखानों में खजाना छुपे होने की अफ़वाह थी—सुज़ैना की बेशुमार दौलत। पर किसी में भी नीचे जाने की हिम्मत नहीं थी, क्योंकि कहा जाता था कि तहखाने में नागों का एक परिवार रहता था और उस दबे हुए खजाने की पहरेदारी करता था। क्या वह सच में एक बहुत अमीर औरत थी और क्या वह खजाना अभी भी वहाँ दबा हुआ था? मैं यह सवाल नौशाद से पूछता था—जो एक बढ़ई था और पूरी उम्र हवेली के पास ही रहा था, उसके पिता ने इस हवेली और पुरानी दिल्ली के कई और बड़े घरों के लिए फर्नीचर और फिटिंग का काम किया था।

"लेडी सुज़ैना के नाम से वह जानी जाती थी और अपनी दौलत के लिए उसके पास कई रिश्ते आते थे।" नौशाद याद करते हुए कहता। "वह बिलकुल कंजूस नहीं थी। दिल खोल कर खर्च करती थी, शान से अपने महलनुमा घर में रहती थी, कई घोड़े और गाड़ियाँ थीं उसके पास। हर शाम जब वह रोशनआरा बगीचों में घोड़े पर सवार होकर गुज़रती, तो सबकी निगाहें बस उसी पर टिकी होती थीं, क्योंकि वह जितनी दौलतमंद थी उतनी ही खूबसूरत भी थी। सभी युवक उसे चाहते थे और वह उनमें से सबसे अच्छे युवक को चुन सकती थी। कई दौलत के लालच से आते थे। वह उन्हें हतोत्साहित नहीं करती थी। कुछ थोड़े समय के लिए उसका ध्यान आकृष्ट करते पर बहुत जल्दी ही वह उनसे ऊब जाती। उसका कोई भी शौहर ज़्यादा समय तक उसकी दौलत का आनन्द नहीं उठा पाया।

"आज कोई भी उस खंडहर में जाने को तैयार नहीं, जहाँ एक समय में हँसी और कहकहे गूँजा करते थे। वह ज़मींदारनी थी, काफ़ी ज़मीन की मालकिन, और मुस्तैदी से अपनी सम्पत्ति की देखभाल करती थी। वह दयावान थी अगर समय पर सब अपना किराया दे दें, पर अगर कोई समय पर किराया न दे पाये तब वह क्रूर बन जाती थी।

"उसे दफ़न हुए पचास वर्षों से अधिक हो गये, पर आज भी लोग उसके बारे में भय से बात करते हैं। उसकी आत्मा अतृप्त है, और ऐसा कहा जाता है कि वह अक्सर अपने पूर्व वैभव के स्थान पर आती है। उसे इस दरवाज़े से गुज़रते हुए या बगीचे में घुड़सवारी करते हुए या अपनी गाड़ी राजपुर रोड पर चलाते हुए अक्सर देखा गया है।"

"और उन सब पतियों का क्या हुआ," मैंने पूछा।

"ज़्यादातर रहस्यमय ढंग से मारे गये। डॉक्टर भी कुछ नहीं समझ पाये। टॉमकिन्स साहब बहुत पीते थे। वह उनसे जल्दी ही ऊब गयी। उसे कहते हुए सुना गया था कि एक शराबी पति बोझ होता है। वह एक दिन शराब सेवन से मर ही जाता, पर वह अधीर थी और उससे पीछा छुड़ाना चाहती थी। आपने धतूरे की झाड़ियाँ देखी हैं? हमेशा से ही इस मैदान में वे उगती आयी हैं।"

"बेल्लाडोन्ना?" मैंने पूछा।

"जी हुज़ूर वही। बस शराब में थोड़ी-सी मिलाने से वह हमेशा के लिए सो गया।"

"तब तो वह बहुत संवेदनशील थी।"

"ओह, बिलकुल साहब। एक साहब, जिनका मुझे नाम नहीं पता, घर के पीछे वाले हौज़—जिसमें नीलकमल उगते थे, डूब गये। पर उसने अर्धमृत होने पर ही उन्हें गिराया। उसके हाथ बड़े और ताकतवर थे, लोग कहते हैं।"

"फिर वह उनसे शादी ही क्यों करती थी? क्या वह सिर्फ़ पुरुष मित्र नहीं रख सकती थी?"

"उन दिनों में नहीं हुज़ूर। सम्मानजनक समाज यह बर्दाश्त नहीं करता था। न ही भारत में और न पश्चिम में इसकी अनुमति होती थी।"

"वह गलत समय में पैदा हुई थी," मैंने कहा।

"सच कह रहे हैं, साहब। और यह मत भूलिये कि उनमें से ज़्यादातर उसकी दौलत के लालच में उससे शादी करना चाहते थे। इसलिए हमें उन पर ज़्यादा दया नहीं करनी चाहिए।"

"उसे तो बिलकुल दया नहीं आई उन पर।"

"उसमें दया नहीं थी। खास कर तब जब उसे पता चला कि वे उससे क्या चाहते थे। साँपों के ज़िन्दा रहने की ज़्यादा उम्मीद थी।"

"उसके बाकी पति कैसे विदा हुए इस दुनिया से?"

"कर्नल साहब ने अपनी राइफल साफ़ करते हुए गलती से खुद को गोली मार ली। एक दुर्घटना मात्र, हुज़ूर। हालाँकि कुछ लोग कहते थे कि बिना उन्हें बताये उसने उनकी बन्दूक में गोलियाँ भर दी थीं। उसकी छवि ही ऐसी बन गयी थी कि जब वह निर्दोष भी होती तब भी लोग उस पर शक करते थे। पर वह हमेशा पैसे देकर मुसीबत से बच जाती थी। अगर आप के पास दौलत हो तो कुछ भी मुश्किल नहीं।"

"और चौथा पति?"

"ओह, उसकी प्राकृतिक मौत हुई थी। उस साल हैजा फैला था और उसी से उसकी मौत हो गयी। हालाँकि तब भी कुछ लोग कहते थे कि आर्सेनिक की भारी मात्रा की एक खुराक से भी वैसे ही लक्षण उत्पन्न होते हैं। खैर मृत्यु प्रमाण-पत्र पर हैजा लिखा था। और जिस डॉक्टर ने वह प्रमाण-पत्र बनाया था, उसका अगला पति वही था।"

"वह डॉक्टर था तो वह अपने खाने-पीने का तो ध्यान रखता ही होगा?"

"वह एक साल टिका।"

"क्या हुआ?"

"एक नाग ने उसे काट लिया।"

"पर वह तो उसकी ख़राब किस्मत थी, है न? अब इसके लिए सुज़ैना को ज़िम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता।"

"नहीं हुज़ूर, लेकिन वह नाग उनके शयन कक्ष में था। उनके बिस्तर के पाये से लिपटा। और जब रात को उसने कपड़े बदले तो उसने उसे काट लिया। वह मर चुका था,

जब एक घंटे बाद सुज़ैना कमरे में आयी। साँप उसकी बात सुनते थे। न वह उन्हें क्षति पहुँचाती थी न ही वे उसे काटते थे।”

“और उन दिनों कोई विषहर औषधि नहीं होती थी। डॉक्टर भी मर गया। छठा पति कौन था?”

“एक बहुत रूपवान पुरुष। नील के बगीचों का मालिक। वह कंगाल हो गया था जब नील का व्यापार बन्द हुआ। सुज़ैना की मदद से वह खोयी हुई सम्पत्ति पाना चाहता था। पर हमारी सुज़ैना मैडम—वह अपनी दौलत बाँटने में यकीन नहीं करती थी।”

“और इस नील के बगीचों के मालिक को उसने कैसे मारा?”

“कहते हैं कि उसे तेज़ नशे वाली शराब पिलाई, और जब वह बेहोश पड़ा था, तो उसने उसके कानों में खौलता हुआ सीसा डालकर, उसे उस रास्ते पर भेज दिया जहाँ एक दिन हम सब जायेंगे।”

मैंने कहा, “ऐसी मौत में दर्द नहीं होता।”

“पर हुज़ूर एक बहुत भयानक कीमत, सिर्फ़ इसलिए कि अब आपकी ज़रूरत नहीं...”

हम धूल भरे हाईवे पर टहल रहे थे, शाम की हवा का आनन्द लेते हुए और कुछ समय बाद हम रोशनआरा बगीचों में पहुँच गये, उन दिनों में दिल्ली का बहुत ही प्रचलित और लोकप्रिय मिलने का स्थान।

“तुमने अब तक मुझे छह पतियों के मरने की कहानी बतायी नौशाद। पर उसके तो सात पति थे न?”

“आह, सातवाँ एक बहादुर नौजवान न्यायाधीश था, जो ठीक यहीं मरा था हुज़ूर। एक रात वे इन्हीं बगीचों से अपनी गाड़ी में गुज़र रहे थे जब मेमसाब की गाड़ी पर कुछ डाकुओं ने हमला कर दिया। उसकी रक्षा करते हुए, उस नौजवान को तलवार द्वारा घातक घाव लगा।”

“यह तो उसकी गलती नहीं थी, नौशाद।”

“नहीं हुज़ूर, पर याद रखिए कि वह एक न्यायाधीश था और हमलावर—जिनमें से एक के रिश्तेदार को उसने सज़ा सुनाई थी, बदला लेना चाहते थे। हैरानी की बात यह है कि कुछ दिन बाद ही उनमें से दो को मेमसाब ने नौकरी दी। अब आप खुद अपना निर्णय ले सकते हैं।”

“और भी थे क्या?”

“पति नहीं। पर एक जांबाज, एक किस्मत का सिपाही आया था। लोग कहते हैं, ‘उसने उसका खजाना ढूँढ लिया।’ और वह उसी खजाने के साथ दबा हुआ है, इस उजाड़ घर के तहखाने में। उसकी हड्डियाँ बिखरी हुई हैं सोने-चाँदी और बेशकीमती जवाहरातों के बीच। आज भी नाग उनकी रक्षा करते हैं। वह कैसे मरा यह आज तक एक रहस्य है।”

“और सुज़ैना? उसका क्या हुआ?”

“उसने एक लम्बी ज़िन्दगी जी। कम-से-कम इस ज़िन्दगी में तो उसे अपने गुनाहों

की सज़ा नहीं मिली। उसके अपने बच्चे नहीं थे, पर उसने एक अनाथालय खोला और उदारता से गरीबों, स्कूलों और कई संस्थानों, जिनमें से एक विधवाओं के लिए था, को दान दिया। एक रात नींद में उसकी मौत हो गयी।"

"एक ज़िन्दादिल विधवा" मैंने कहा, "जैसे 'ब्लैक विडो स्पाइडर' एक प्रकार की मकड़ी जिसका डंक ज़हरीला होता है और जो अपने साथी को खा जाती है।"

सुज़ैना का मकबरा ढूँढने मत जाना, कुछ समय पहले वह गायब हो गया, उसकी हवेली के खंडहर के साथ। एक शानदार नयी इमारत उसी जगह पर बन गयी पर उससे पहले कई मज़दूर और ठेकेदार साँप के काटने से मर गये। कभी-कभी वहाँ रहने वाले लोग कहते हैं कि एक दुष्ट आत्मा वहाँ रहती है जो अक्सर गाड़ियों को रुकवाती है, खास कर वह जिसमें केवल एक पुरुष हो। एक या दो लोग रहस्यमय तरीके से गायब भी हुए हैं।

और सूरज ढलने के बाद, एक पुरानी घोड़ा-गाड़ी रोशनआरा बगीचों से गुज़रती हुई कभी-कभी दिख जाती है। अगर आपको दिखे, तो उस पर ध्यान मत देना। रुककर उस सुन्दर युवती के किसी सवाल का कोई जवाब तो बिलकुल मत देना जो परदों के पीछे से मुस्कुरा रही होगी। वह अब तक अपने आखिरी शिकार की तलाश में है।

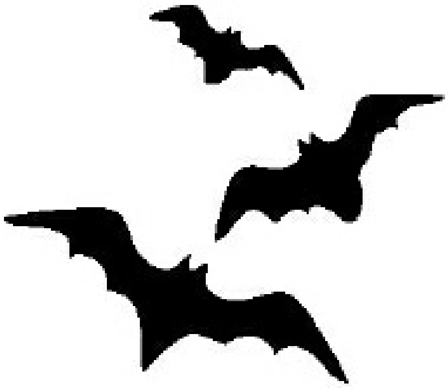

जिन्न की मुसीबत

मेरे दोस्त जिम्मी की सिर्फ़ एक बाँह है। उसने दूसरा हाथ तब खो दिया जब वह पच्चीस साल का युवक था। उसके एक हाथ खो देने की कहानी पर विश्वास करना थोड़ा मुश्किल है, लेकिन मैं कसम खाता हूँ कि यह बिलकुल सच है।

जिम्मी एक जिन्न था और सम्भवतः अब भी है। अब एक जिन्न वास्तव में हमारी तरह इन्सान नहीं होता। एक जिन्न दूसरी दुनिया का आत्मिक प्राणी होता है जो जीवन भर के लिए एक इन्सान का शरीर धारण कर लेता है। जिम्मी एक वास्तविक जिन्न था और उसके पास जिन्न का उपहार था कि वह अपनी बाँह को अपनी इच्छा के अनुसार लम्बा कर पाने में सक्षम था। अधिकांश जिन्न अपनी बाँह को बीस से तीस फीट तक लम्बा कर लेते हैं। जिम्मी चालीस फीट तक लम्बा कर सकता था। उसकी बाँह आकाश में या दीवार के ऊपर या ज़मीन के साथ चल सकती थी, जैसे कि एक सुन्दर लहराता हुआ साँप हो।

मैंने उसे एक आम के पेड़ के नीचे फैला हुआ देखा, पेड़ के ऊपर से पके आम तोड़ने में खुद की सहायता करते हुए। उसे आमों से प्यार था। वह एक जन्मजात भुक्खड़ था और शायद यह उसकी लोलुपता थी, जिसने उसे विलक्षण उपहारों का दुरुपयोग करने की ओर बढ़ाया था।

हम उत्तर भारत के एक हिल-स्टेशन पर स्थित स्कूल में साथ थे। जिम्मी विशेषकर बास्केटबॉल में अच्छा था। वह इतना समझदार था कि अपनी बाँह को ज़्यादा लम्बा नहीं करता था, क्योंकि वह नहीं चाहता था कि कोई और जाने कि वह एक जिन्न था। बॉक्सिंग रिंग में वह सामान्यतः अपनी लड़ाइयाँ जीत जाता था। उसके प्रतिद्वंद्वी उसकी अद्भुत पकड़ से कभी नहीं छूटते प्रतीत होते थे। वह उन्हें नाक पर मारना जारी रखता जब तक कि वह रिंग से रक्तरंजित और बेसुध होकर लौट नहीं जाते थे।

यह अर्द्ध वार्षिक परीक्षा का समय था, जब मैं जिम्मी के राज़ से जा टकराया। हमें

अलजेब्रा का एक बहुत ही मुश्किल प्रश्नपत्र मिला था लेकिन मैं सही उत्तर से कुछ पन्ने भरने में कामयाब रहा था और अगले पृष्ट पर आगे लिखने जा ही रहा था कि मैंने ध्यान दिया कि मेरी मेज़ पर किसी का हाथ है। पहले मुझे लगा कि यह परीक्षक का हाथ है। लेकिन जब मैंने ऊपर देखा, वहाँ मेरे अतिरिक्त कोई और नहीं था। क्या यह वह लड़का हो सकता था जो बिलकुल मेरे पीछे बैठा था? नहीं, वह अपने प्रश्नपत्र में लीन था और उसका हाथ उसके पास था। उसी बीच मेज़ पर के हाथ ने मेरी उत्तरपुस्तिका के पन्नों को पकड़ा और सावधानी से आगे बढ़ गया। उसके अवतरण का पीछा करते हुए मैंने पाया कि वह एक अद्भुत लम्बाई और लचीलेपन वाली बाँह से जुड़ा है। वह चोरी से मेज़ के नीचे घूमा और फ़र्श पर रेंगता हुआ, और यह सब करते हुए खुद को समेटता हुआ, तब तक अपनी सामान्य लम्बाई तक पहुँच गया था। इसका मालिक बेशक वही था, जो कभी अलजेब्रा में अच्छा नहीं था।

मुझे मेरे उत्तर दूसरी बार लिखने पड़े, लेकिन परीक्षा के बाद मैं सीधा जिम्मी के पास गया, उससे कहा कि मुझे उसका खेल पसन्द नहीं आया और उसका भंडाफोड़ कर देने की धमकी दी। उसने मुझसे अनुनय किया कि मैं यह बात किसी को नहीं जानने दूँ, आश्वासन दिया कि वह वास्तव में अपनी सहायता नहीं कर सका था और यह प्रस्ताव रखा कि जब भी मैं चाहूँगा वह मेरी सेवा के लिए हाज़िर रहेगा। जिम्मी को दोस्त के रूप में पाना मेरे लिए भी ललचाने वाला था, क्योंकि ज़ाहिर है कि अपनी लम्बी पहुँच की वजह से वह बहुत उपयोगी होगा। मैं चोरी के पन्नों के मसले को भूलने के लिए सहमत हो गया और हम सबसे अच्छे दोस्त बन गये।

मुझे यह जानने में ज़्यादा समय नहीं लगा कि जिम्मी का उपहार एक रचनात्मक सहायता से अधिक अवरोधक ही है। ऐसा इसलिए था कि जिम्मी के पास निम्न दर्जे का दिमाग था और वह यह नहीं जानता था कि अपनी शक्तियों का सही उपयोग कैसे करे। वह कदाचित ही तुच्छ चीज़ों से ऊपर उठ पाता था। वह अपनी लम्बी बाँह का उपयोग मिठाई की दुकान, कक्षा में, छात्रावास में करता था और जब हमें सिनेमा देखने की अनुमति मिलती तो वह इसे हॉल के अँधेरे में इस्तेमाल करता।

अब जिन्न के साथ यह समस्या है कि लम्बे, काले बालों वाली स्त्रियाँ उनकी कमज़ोरी हैं। जितने लम्बे और काले बाल हों, जिन्न के लिए उतना बढ़िया है और अगर जिन्न अपनी मनचाही स्त्री को वश में करने में कामयाब हुआ तो वह नष्ट होने लगती है और उसकी सुन्दरता का क्षय होने लगता है। उसका सब कुछ बर्बाद हो जाता है, सिर्फ़ सुन्दर लम्बे, काले बालों के अलावा।

जिम्मी इस तरह किसी को वश में करने के लिए बहुत छोटा था, लेकिन वह लम्बे, काले बालों को छूने और उन पर हाथ फेरने से खुद को रोक नहीं पाता था। उसकी इस सनक की तुष्टि के लिए सिनेमा सबसे बढ़िया जगह थी। उसकी बाँह लम्बी होनी आरम्भ हो जाती, उसकी उँगलियाँ सीटों की पंक्ति के साथ बढ़तीं रास्ता तलाशतीं और उसका लम्बा अंग गलियारे में अपना काम करता रहता जब तक उस सीट के पीछे नहीं पहुँच जाता, जहाँ उसकी प्रशंसा का पात्र बैठा होता। उसके हाथ उसके काले बालों को बहुत ही कोमलता से सहलाते और अगर लड़की को कुछ महसूस होता और वह अपने चारों ओर देखती, तो जिम्मी का हाथ सीट के पीछे गायब हो जाता और वहाँ साँप की केंचुली की

तरह पड़ा रहता, फिर से प्रहार करने के लिए।

दो या तीन साल बाद कॉलेज में, जिम्मी का पहला शिकार उसके ध्यानाकर्षण की वजह से मारा गया। वह अर्थशास्त्र की व्याख्याता थी, देखने में बहुत सुन्दर नहीं थी लेकिन उसके बाल काले और चमकदार, लगभग उसके घुटनों तक पहुँचते थे। वह अक्सर उनकी चोटियाँ बना कर रखती थी, लेकिन एक सुबह जिम्मी ने उसे देखा, जब उसने अभी सिर धोया ही था और उसके बाल चारपाई पर बिखरे हुए थे, जिस पर वह झुकी हुई थी। जिम्मी खुद को और ज़्यादा वश में नहीं रख सका। उसकी आत्मा, उसके व्यक्तित्व का मूलतत्व उस औरत के शरीर में घुस गया और अगले दिन वह व्याकुल, बुखार-सा महसूस करती हुई और उत्तेजित थी। वह खा नहीं पा रही थी और कोमा में चली गयी और कुछ दिनों में ही हड्डियों का ढाँचा भर रह गयी। जब वह मरी तो उसके अन्दर त्वचा और हड्डी के अलावा कुछ नहीं बचा था, लेकिन उसके बालों ने अपना लुभावना रूप नहीं छोड़ा था।

मैंने इस दुःखद घटना के बाद जिम्मी को टालने के लिए बहुत दर्द झेला। मैं यह प्रमाणित नहीं कर सकता था कि वह उस स्त्री की दुःखद मृत्यु का कारण है, लेकिन अपने हृदय में मैं इस बात के लिए निश्चित था, क्योंकि जिम्मी से मिलने के बाद मैं जिन्न के बारे में बहुत कुछ पढ़ चुका था और उनके तरीकों को जानता था।

हमने कुछ सालों तक एक-दूसरे को नहीं देखा। और फिर पिछले साल पहाड़ों पर छुट्टियाँ बिताते हुए मैंने पाया कि हम दोनों एक ही होटल में ठहरे हुए हैं। मैं उसे नज़रअन्दाज़ नहीं कर पाया और जब हमने कुछ बियर साथ पी ली तो मुझे यह महसूस होने लगा कि शायद मैंने जिम्मी को गलत समझा है और वह एक गैर ज़िम्मेदार जिन्न नहीं है जो मैंने समझ लिया था। शायद कॉलेज की व्याख्याता किसी रहस्यमय रोग की वजह से मरी जो सिर्फ़ कॉलेज की व्याख्याताओं पर ही आक्रमण करता था और जिम्मी का उससे कोई लेना-देना नहीं था।

हमने मुख्य व्यस्त सड़क के ठीक नीचे के एक घास के टीले पर दोपहर का भोजन और कुछ बोतल बियर पीने की सोची। दोपहर ढलने लगी थी और मैं बियर के प्रभाव की वजह से सो गया था। जब जागा तो पाया कि जिम्मी बहुत उत्तेजित दिख रहा था।

“क्या बात है?” मैंने पूछा।

“वहाँ ऊपर, देवदार के पेड़ के नीचे,” उसने कहा। “सड़क के ठीक ऊपर। क्या तुम उन्हें देख नहीं सकते?”

“मैं दो लड़कियों को देख रहा हूँ,” मैंने कहा, “तो क्या?”

“वह जो बायें है। क्या तुमने उसके बालों पर ध्यान नहीं दिया?”

“हाँ, वे बहुत लम्बे और सुन्दर हैं और—अब देखो जिम्मी, बेहतर होगा कि तुम खुद पर नियन्त्रण रखो” लेकिन उसका हाथ पहले ही नज़र से ओझल हो चुका था, उसकी बाँह पहाड़ी के किनारे और सड़क के पार रेंग रही थी।

मैंने देखा कि वह हाथ किन्हीं झाड़ियों से निकलकर और सावधानी से उस काले केशों वाली लड़की की ओर बढ़ रहा था। जिम्मी समय बिताने के अपने इस प्रिय कार्य में इतना व्यस्त था कि वह हॉर्न का बजना भी नहीं सुन पाया। सड़क के मोड़ से एक तेज़

मर्सिडीज बेंज ट्रक चला आ रहा था।

जिम्मी ने ट्रक देखा लेकिन उसके लिए समय नहीं बचा था कि वह अपनी बाँह को खींच कर सामान्य कर सके। वह सड़क की पूरी चौड़ाई पर पड़ा हुआ था और जब ट्रक इसके ऊपर से गुज़रा, वह दर्द से छटपटाया और तड़पा जैसे कि एक घायल अजगर हो।

इससे पहले कि ट्रक चालक या मैं चिकित्सक को लाते, बाँह (जो कुछ भी उसका शेष बचा था) अपने साधारण आकार में लौट चुकी थी। हम जिम्मी को अस्पताल ले गये और चिकित्सकों को यह ज़रूरी लगा कि उसका हाथ काट दिया जाये। ट्रक चालक जो इस बात को लगातार दोहरा रहा था कि जिस बाँह पर उसने गाड़ी चढ़ायी, वह कम-से-कम तीस फीट लम्बी थी, उसे शराब पीकर गाड़ी चलाने के जुर्म में हिरासत में ले लिया गया।

कुछ हफ़्तों बाद मैंने जिम्मी से पूछा, “तुम इतने अवसाद में क्यों हो? तुम्हारे पास अब भी एक हाथ है। क्या वह भी उसी तरीके से प्रतिभा सम्पन्न नहीं?”

“मैंने कभी जानने की कोशिश नहीं की,” उसने कहा, “और अब मैं कोशिश भी नहीं करूँगा।”

वह बेशक दिल से अब भी एक जिन्न था और जब भी किसी लम्बे बालों वाली लड़की को देखता, वह बहुत ही भयानक रूप से अपने एक बढ़िया हाथ को प्रयोग करने के लिए ललचाता और उसके सुन्दर बालों को सहलाना चाहता था। लेकिन उसने अपना सबक सीख लिया था। बिना किसी वरदान के एक इन्सान बनना ज़्यादा सही था, बनिस्पत एक जिन्न या एक अति प्रतिभाशाली के जिसके पास कई उपहार हों।

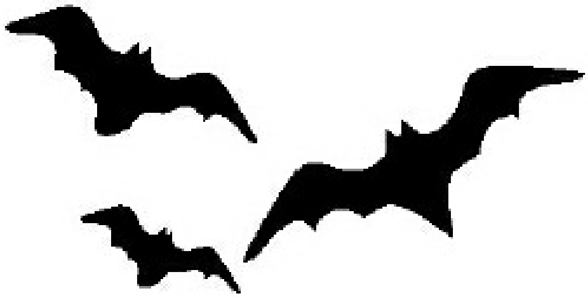

भूत-बँगला

यह दादीजी थीं जिन्होंने निर्णय लिया कि हमें घर बदल लेना चाहिए।

और यह सब एक प्रेत की वजह से था, एक शरारती भूत जिसने सबका जीना मुश्किल कर दिया था।

प्रेत अक्सर पीपल के पेड़ पर रहते हैं और यही वह जगह थी जहाँ हमारे प्रेत का घर था—पीपल के पेड़ की पुरानी शाखाओं पर जो कि चारदीवारी से बाहर बढ़ गयी थीं और एक तरफ़ बगीचे में फैली थीं और दूसरी तरफ़ सड़क पर।

बहुत सालों तक प्रेत वहाँ बहुत आनन्द से रहा है, बिना घर में किसी को तंग किये हुए। मुझे लगता है कि सड़क के ट्रैफिक ने उसे व्यस्त रखा था। कभी जब कोई ताँगा गुज़र रहा होता तो वह घोड़े को डरा देता होगा और इस वजह से छोटी घोड़ा गाड़ी दूसरी दिशा में डगमगा जाती।

कभी-कभी वह कार या बस के इंजन में घुस जाता, जिससे वह तुरन्त ही बन्द हो जाता और वह साहिबों के सिर से सोला टोपी उड़ा देता, जो कोसते और आश्चर्य करते कि कैसे अचानक हवा बही और उतनी ही तेज़ी से गायब भी हो गयी। हालाँकि प्रेत खुद का अनुभव करा सकते हैं और उन्हें सुना भी जा सकता है, वह इन्सानों की आँखों से अदृश्य था।

रात में लोग उस पीपल के पेड़ के नीचे से गुज़रना टालते। यह कहा जाता था कि अगर आप पेड़ के नीचे जम्हाई लेंगे तो प्रेत आपके गले के अन्दर कूद जायेगा और आपकी पाचन क्रिया को नष्ट कर देगा। हमारा माली मनफूल, जो हमेशा छुट्टियाँ लेता रहता, अपने पेट की सभी समस्याओं के लिए प्रेत को ज़िम्मेदार ठहराता। एक बार जम्हाई लेते समय मनफूल अपने मुँह के आगे हाथ रखना भूल गया और प्रेत बिना किसी दिक्कत के अन्दर आ गया।

लेकिन उसने हमें अकेला छोड़ रखा था, जब तक पीपल का पेड़ काट नहीं दिया गया।

यह हमारी गलती नहीं थी, सिर्फ़ इस बात के अलावा कि दादाजी ने पी.डब्ल्यू.डी. को पेड़ काटने की अनुमति दी थी, जो हमारी ज़मीन पर था। वे सड़क को चौड़ा करना चाहते थे और पेड़ और हमारी दीवार का थोड़ा-सा हिस्सा रास्ते में आ रहा था; इसलिए दोनों को हटाना पड़ा। किसी भी सूरत में भूत तक पी.डब्ल्यू.डी. पर हावी नहीं हो सकता था।

लेकिन मुश्किल से एक दिन बीता होगा, जब हमने पाया कि पेड़ से वंचित प्रेत ने बँगले में अपना आवास बनाने का निर्णय लिया है।

और चूँकि एक अच्छे प्रेत को अपने अस्तित्व का औचित्य साबित कराने के लिए बुरा बनना होता है, उसे घर में हर तरह का उपद्रव करते बहुत देर नहीं लगी।

उसने शुरुआत दादीजी का चश्मा छुपाने से की, जब भी वह उसे उतारतीं।

“मुझे यकीन है कि मैंने चश्मा ड्रेसिंग टेबल पर रखा था,” वह बड़बड़ायीं।

कुछ देर बाद यह बड़े ही जोखिम के साथ बरामदे में सजे जंगली सूअर के खतरनाक सिर के थूथन पर सन्तुलित किया गया था। घर का एकमात्र लड़का होने की वजह से मुझ पर सबसे पहले इल्ज़ाम आया; लेकिन एक या दो दिन बाद, चश्मा फिर से गायब हो गया और इस बार जब तोते के पिंजरे की सलाखों में झूलता मिला तो सब सहमत हो गये कि यह किसी और का काम है।

परेशान होने वालों में अगले दादाजी थे। वह एक सुबह बगीचे में गये तो उन्होंने पाया कि उनके कीमती मीठे मटर के फूल उखड़े हुए हैं और ज़मीन पर पड़े हैं। अंकल केन इस बात पर कायम रहे कि बुलबुलों ने फूलों को नष्ट किया है, लेकिन हमें नहीं लगता था कि बुलबुलें सूरज के उगने से पहले सभी फूलों को खत्म कर सकती थीं।

अंकल केन खुद भी जल्दी ही प्रताड़ित होने वाले थे। वह सोने में माहिर थे और एक बार जब वह बिस्तर पर जाते तो उन्हें उठाये जाने से नफ़रत थी। इसलिये जब वह नाश्ते की मेज़ पर नींद भरी आँखों के साथ दुःखी नज़र आये, तो हमने उनसे पूछा कि वह स्वस्थ महसूस कर रहे हैं या नहीं।

“मैं कल रात एक झपकी भी नहीं ले सका,” उन्होंने शिकायत की, “हर बार जब मैं सोने को होता, बिस्तर की चादर बिस्तर से कोई खींच देता। मुझे उसे ज़मीन पर से उठाने के लिए दर्जनों बार उठना पड़ा।” उन्होंने मुझे कष्ट से घूरा, “तुम कल रात कहाँ सोये थे, बच्चे?”

“दादाजी के कमरे में,” मैंने कहा।

“यह सही है,” दादाजी ने कहा, “और मेरी नींद हल्की है। मैं उठ गया होता अगर यह नींद में चल रहा होता।”

“यह पीपल के पेड़ का भूत है,” दादी माँ ने दृढ़तापूर्वक कहा, “यह घर में आ चुका है। पहले मेरा चश्मा, फिर मीठी मटर और अब केन के बिस्तर की चादर! मुझे चिन्ता है कि वह आगे पता नहीं क्या करने वाला है?”

हमें बहुत ज़्यादा दिन नहीं सोचना पड़ा। उसके बाद आपदाओं का एक हफ़्ता गुज़रा। मेज़ से गुलदान गिरने लगे, तोते के पंख चाय की केतली में मिलने लगे, जबकि

तोता खुद आधी रात में गुस्से में कर्कश आवाज़ें निकालता रहा। खिड़कियाँ जो बन्द की गयी थीं, खुली मिलीं और खुली खिड़कियाँ बन्द। अंकल केन को अपने बिस्तर में कौवे का घोंसला मिला और जब अंकल केन उसे खिड़की से बाहर फेंक रहे थे तो दो कौवों ने उन पर आक्रमण कर दिया।

जब मेबेल आंटी रहने आयीं, चीज़ें और बिगड़ गयीं। ऐसा लगा कि प्रेत ने उन्हें तुरन्त ही नापसन्द कर दिया। वह एक अधीर और शीघ्र उत्तेजित होने वाली युवती थीं, एक द्वेषपूर्ण भूत के लिए बिलकुल सही शिकार। किसी तरह उनका टूथपेस्ट दादा जी के शेविंग क्रीम के ट्यूब से बदल गया; और जब वह बैठक में आयीं, मुँह से झाग निकालते हुए तो हम अपनी जान बचाकर भागे। अंकल केन यह चिल्लाते हुए कि आंटी को रेबीज़ हो गया।

दो दिनों बाद मेबेल आंटी ने शिकायत की कि एक चकोतरे से उनकी नाक पर मारा गया है जो कि बेवजह भंडारघर के ताक से उछला और कमरे को पार करते हुए उन्हें पूरे वेग से आ लगा। उनकी घायल और फूली हुई नाक इस आक्रमण की गवाही दे रही थी।

"हमें यह घर छोड़ना ही होगा," दादीजी ने कहा, "अगर हम ज़्यादा दिन यहाँ रहे तो केन और मेबेल दोनों को नर्वस ब्रेकडाउन हो जायेगा।"

"मुझे लगा मेबेल आंटी का बहुत पहले ही नर्वस ब्रेकडाउन हो गया है," मैंने कहा।

"तुम्हें क्या मतलब," मेबेल आंटी मुझे काटने दौड़ीं।

"कोई बात नहीं, मैं घर बदलने को लेकर सहमत हूँ," मैंने उत्तेजना से कहा, "मैं अपना गृहकार्य भी नहीं कर पाता। स्याही की बोतल हमेशा खाली मिलती है।"

"कल रात सूप में स्याही थी," अंकल केन ने शिकायत की।

"हमें जाना ही होगा, मुझे लगता है," दादाजी ने कहा, "यह भले ही कुछ हफ़्तों के लिए हो। शायद भूत चला जाये। मेरे भाई का घर बार्लोगंज में है। वह उसे कुछ महीनों तक नहीं इस्तेमाल कर रहा है। हम अगले हफ़्ते ही चले जायेंगे।"

और इस तरह कुछ दिनों और कई आपदाओं के बाद, हमने घर बदल लिया।

फ़र्नीचर और भारी सामानों से भरी बैलगाड़ी आगे भेज दी गयी। हमारी पुरानी फोर्ड गाड़ी की छत बैग और रसोई के बर्तनों से भरी थी। सब किसी तरह कार में अंट गये, दादा जी ने चालक की सीट पकड़ी।

"क्या तोता सामान के रैक पर बाहर है," दादाजी ने कहा।

"नहीं," दादी माँ ने कहा, "वह मनफूल के साथ बैलगाड़ी पर है।"

दादाजी ने कार रोकी, बाहर निकले और छत के ऊपर देखा।

"ऊपर कोई नहीं है," उन्होंने अन्दर आकर इंजन चालू करते हुए कहा, "मैंने सोचा कि तोता बोल रहा है।"

दादाजी हमें लेकर सड़क पर कुछ फ़र्लांग ही चले थे जब दबी हँसी फिर से शुरू हो गयी, शुद्ध हिन्दी में बकबक करती हुई। हम सबने उसे सुना और समझा कि वह क्या कह रहा था। वह प्रेत था जो खुद से बातें कर रहा था।

"चलो—आओ चलें!" उसने आनन्दित होते हुए कहा, "नया घर—एक नया घर!

कितना मज़ा आयेगा... मुझे कितना मज़ा आने वाला है!”

गणपत की कहानी

भिखारी पूरी तरह से एक प्रगतिशील समुदाय का हिस्सा हैं और यह किसी के लिए भी आश्चर्यजनक नहीं था जब नगर निगम ने भीख माँगने पर टैक्स लगाने की घोषणा की।

मैं जानता हूँ कि कुछ भिखारी औसतन एक चपरासी या बाबू से ज़्यादा कमा लेते हैं। मैं यह भी जानता था कि वह लँगड़ा आदमी जो मेरे पीपलनगर आने से कई साल पहले से ही शहर में अपनी बैसाखी के सहारे घूमता था, हर महीने अपने घर मनी ऑर्डर भिजवाता था। भीख माँगना धंधा बन गया था और शायद यही कारण था कि नगर निगम को इस पर टैक्स लगाना उचित लगा, और वैसे भी नगर निगम की तिजोरियों को फिर भरे जाने की ज़रूरत थी।

बूढ़ा गणपत, जो अपने कूबड़ के कारण सीधा नहीं खड़ा हो पाता था, उसे यह बिलकुल रास नहीं आया और उसने मेरे सामने अपनी असहमति जताई। “अगर मुझे पहले पता होता यह होने वाला है तो मैं कोई और व्यवसाय चुनता।”

गणपत राम भिखारियों का नवाब था। मैंने कहीं सुना था कि पहले वह एक अमीर आदमी था, जिसके कई घर और एक यूरोपियन पत्नी थी। जब उसकी बीवी उसके सारे पैसे लेकर, अपना सामान बाँध वापस यूरोप चली गयी तो उसका मानसिक सन्तुलन बिगड़ गया और फिर वह कभी उस सदमे से नहीं उबर पाया। उसका स्वास्थ्य बिगड़ता ही चला गया और अन्ततः बैसाखी के सहारे चलने की नौबत आ गयी। वह कभी सीधे पैसे नहीं माँगता था। पहले वह अभिवादन करता था, फिर मौसम या बढ़ती महँगाई पर टिप्पणी और उसके बाद तब तक आस लगाये बगल में खड़ा रहता था जब तक उसे पैसे न मिल जायें।

उसकी कहानी मुझे काफ़ी हद तक सच लगती थी, क्योंकि जब भी वह किसी पढ़े-लिखे व्यक्ति को देखता तो उससे फर्राटेदार अंग्रेज़ी में बात करता था। सफ़ेद दाढ़ी और

चमकती आँखों वाला गणपत, उन भिखारियों में से नहीं था जो आने-जाने वाले लोगों को भगवान की दुहाई देते हैं। गणपत एक चुटकुला सुनाकर लोगों को हँसाने में ज़्यादा यकीन रखता था। कुछ लोगों का यह भी कहना था कि यह सब केवल एक नाटक है और असल में वह एक जासूस या पुलिसवाला है, पर वह अपने काम के लिए इतना समर्पित है कि अगले पाँच साल तक भिखारी बना रहेगा।

"देखो गणपत," एक दिन मैंने उससे कहा, "मैंने तुम्हारे बारे में कई कहानियाँ सुनी हैं और मैं नहीं जानता उनमें से कौन-सी सच है। यह कूबड़ तुम्हें कैसे मिला?"

"यह एक बहुत लम्बी कहानी है।" मेरी उत्सुकता देखकर वह खुश होते हुए बोला, "और पता नहीं आप यकीन करेंगे भी या नहीं। हर किसी से मैं निःसंकोच बात नहीं करता।"

उसने मेरी उत्सुकता बढ़ा अपना काम कर दिया था। मैंने कहा "मैं तुम्हें चार आना दूँगा अगर तुम अपनी कहानी सुनाओगे। यह कैसा रहेगा?"

अपनी दाढ़ी सहलाते हुए उसने मेरे प्रस्ताव के बारे में सोचा। "ठीक है," उसने धूप में ज़मीन पर बैठते हुए कहा। मैं पास ही एक कम ऊँची दीवार पर बैठ गया। "पर यह लगभग बीस साल पहले की घटना है और मेरी यादें कुछ धुँधली हो गयी हैं।"

उन दिनों (गणपत ने कहा) मैं एक नवविवाहित नौजवान था। मेरे पास कई एकड़ ज़मीन थी, हम बहुत अमीर तो नहीं थे पर बहुत गरीब भी नहीं थे। बाज़ार में अपनी फसल बेचने मुझे पाँच मील दूर अपने बैलों के साथ गाँव की धूल भरी सड़क से जाना पड़ता था। लौटते हुए रात हो जाती थी।

हर रात, मैं एक पीपल के पेड़ के पास से गुज़रता। लोग कहते थे कि उस पर भूत रहता है। मैं कभी उस भूत से नहीं मिला था और उस पर यकीन नहीं करता था पर लोगों ने बताया था कि उस भूत का नाम बिपिन था। उधर कई वर्ष पहले डकैतों ने उसे पीपल के पेड़ से लटका कर मार डाला था। तब से उस पेड़ में उसका भूत रहता था और अगर कोई आदमी डकैत जैसा दिखता तो वह उसे खूब पीटता था। शायद मैं धूर्त दिखता था क्योंकि एक रात बिपिन ने मुझे पकड़ने का निर्णय लिया। वह पेड़ से कूदा और सड़क के बीच, मेरा रास्ता रोक कर खड़ा हो गया।

"तुम," वह चिल्लाया, "अपनी बैलगाड़ी से नीचे उतरो। मैं तुम्हें मारने वाला हूँ।"

"मुझे झटका तो लगा पर उसकी बात मानने का कोई कारण नहीं दिखा।"

"मेरा मरने का कोई इरादा नहीं। तुम खुद बैलगाड़ी पर आओ।"

"यह हुई न मर्दों वाली बात।" बिपिन चिल्लाया और कूदकर गाड़ी पर मेरे बगल में आकर खड़ा हो गया, "पर एक वजह बताओ कि मैं तुम्हें न मारूँ।"

"मैं डकैत नहीं हूँ।" मैंने कहा।

"पर तुम डकैत जैसे दिखते हो। मेरे लिए दोनों बातें समान हैं।"

"तुम्हें बाद में बहुत पश्चाताप होगा अगर तुमने मुझे मार डाला। मैं एक गरीब आदमी हूँ और मेरी बीवी मुझ पर निर्भर है।"

"तुम्हारे पास गरीब होने का कोई कारण नहीं।" बिपिन ने गुस्से से कहा।

"तो मुझे अमीर बना सकते हो तो बना दो।"

"अच्छा तो तुम्हें नहीं लगता कि मेरे पास तुम्हें अमीर बनाने की शक्ति है? क्या तुम मुझे चुनौती दे रहे हो?"

"हाँ" मैंने कहा "मैं तुम्हें मुझे अमीर बनाने की चुनौती दे रहा हूँ।"

"तब गाड़ी आगे बढ़ाओ।" बिपिन चिल्लाया। "मैं तुम्हारे साथ तुम्हारे घर चल रहा हूँ।" बिपिन को अपने बगल में बैठाये, मैं बैलगाड़ी गाँव में ले आया।

"तुम्हारे अलावा कोई और मुझे नहीं देख पायेगा।" बिपिन ने मुझे बताया, "एक और बात, मैं हर रात तुम्हारे साथ सोऊँगा, और किसी को भी इस बात का पता नहीं चलना चाहिए। अगर तुमने किसी को भी मेरे बारे में बताया तो मैं तुम्हें उसी समय मार डालूँगा।"

"चिन्ता मत करो।" मैंने कहा, "मैं किसी को नहीं बताऊँगा।"

"अच्छा है। मैं तुम्हारे साथ रहने के लिए उत्सुक हूँ। पीपल के पेड़ पर मैं बहुत अकेलापन महसूस कर रहा था।"

इस तरह बिपिन मेरे साथ रहने लगा। हर रात वह मेरे साथ सोता था और हमारी अच्छी बनती थी। वह अपनी बात का पक्का था। हर कल्पनीय और अकल्पनीय स्त्रोत से पैसे आने लगे और मैं उससे ज़मीन और मवेशी खरीदने लगा। किसी को भी हमारी साझेदारी के बारे में नहीं पता था, हालाँकि दोस्त और रिश्तेदार अचंभित थे कि इतना पैसा कहाँ से आ रहा है। मेरी बीवी बहुत नाराज़ थी, क्योंकि रात को मैं उसके साथ नहीं सोता था। मैं उसे भूत के साथ एक ही बिस्तर में कैसे सोने दे सकता था और बिपिन इस ज़िद्द पर अड़ा था कि वह मेरे साथ ही सोयेगा। शुरू में, मैंने अपनी बीवी से कहा कि मेरी तबियत ठीक नहीं है और मैं बाहर बरामदे में सोऊँगा। फिर मैंने उसे कहा कि कोई हमारी गायें चुराना चाहता है और रात में मुझे उन पर नज़र रखनी होगी। बिपिन और मैं गौशाला में सोने लगे।

रात में कई बार वह मेरी जासूसी करती यह सोचकर कि मैं उसे धोखा दे रहा हूँ पर हर बार वह मुझे अकेला सोता हुआ पाती। जब वह मेरे इस अजीब व्यवहार को नहीं समझ पायी तो उसने अपने परिवार से बात की। वे लोग मेरे पास आये और मुझसे इसका कारण पूछने लगे।

इसी समय मेरे रिश्तेदार भी मुझसे मेरी बढ़ती पूँजी के स्त्रोत की पूछताछ करने लगे। मामा, चाचा और सभी दूर के रिश्तेदार एक दिन मेरे ऊपर टूट पड़े और मुझसे पूछने लगे कि इतना पैसा कहाँ से आ रहा है।

"क्या तुम लोग चाहते हो, मैं मर जाऊँ?" मैंने खीज कर उनसे पूछा "अगर मैं तुम्हें अपनी दौलत का राज़ बताऊँगा तो मैं ज़रूर मर जाऊँगा।"

पर इसे एक बहाना समझकर वे हँसने लगे। उन्हें लगा, मैं सारी दौलत अपने पास ही रखना चाहता हूँ। मेरी बीवी के रिश्तेदार सोच रहे थे कि मुझे कोई दूसरी औरत मिल गयी है। मैं उन सबके सवालों से इतना परेशान हो गया कि एक दिन मैंने उन्हें सच बता दिया। उन्हें भी सच पर यकीन नहीं हुआ (किसे होता है) पर उन्हें विचार करने के लिए

एक मुद्दा मिल गया और उस समय वे चले गये।

पर उस रात बिपिन मेरे साथ सोने नहीं आया। मैं अकेला ही गायों के साथ सोया। अगली रात भी वह नहीं आया। मैं डर रहा था कि वह नींद में मुझे मार डालेगा पर ऐसा प्रतीत होता था कि वह मुझे अपने हाल पर छोड़ अपने रास्ते चला गया था। मुझे यकीन हो गया था कि मेरी किस्मत ने अब मेरा साथ छोड़ दिया है और मैं फिर अपनी बीवी के साथ सोने लगा।

अगली बार जब मैं बाज़ार से गाँव वापस लौट रहा था बिपिन फिर पीपल के पेड़ से कूदा।

"धोखेबाज़ दोस्त!" बैलों को रोकते हुए वह चिल्लाया, "तुम्हें जो चाहिए था मैंने दिया, फिर भी तुमने मुझे धोखा दिया।"

"मुझे माफ़ कर दो" मैंने कहा, "अगर तुम चाहो तो मेरी जान ले सकते हो"

"नहीं। मैं तुम्हें मार नहीं सकता।" उसने कहा, "हम बहुत दिनों तक दोस्त रहे हैं, पर मैं तुम्हें इसकी सज़ा ज़रूर दूँगा।"

एक लकड़ी उठाकर, उसने मुझे ज़ोर-ज़ोर से तीन बार पीठ पर मारा और मेरी पीठ झुक गयी।

"उसके बाद" गणपत अपनी कहानी खत्म करते हुए बोला, "मैं फिर कभी सीधा खड़ा नहीं हो पाया। बीस साल से मैं अपाहिज हूँ। मेरी बीवी मुझे छोड़कर अपने परिवार के पास वापस चली गयी। मैं खेत में काम करने में असमर्थ था। मैंने अपना गाँव छोड़ दिया और कई सालों तक एक शहर से दूसरे शहर भीख माँगता भटकता रहा। इस तरह मैं पीपलनगर आया और यहीं रुक गया। यहाँ के लोग बाकी शहरों से ज़्यादा उदार हैं, शायद इसलिए क्योंकि उनके पास उतनी दौलत नहीं।"

उसने मुस्कुराकर मेरी ओर देखा, अपने चार आने के इन्तज़ार में।

"तुम मुझसे अपनी कहानी पर यकीन करने की उम्मीद नहीं कर सकते।" मैंने कहा, "पर यह एक अच्छी कहानी थी। यह रहे तुम्हारे पैसे।"

"नहीं, नहीं" गणपत पीछे हटते हुए बोला, "अगर आपको मेरी कहानी पर यकीन नहीं तो पैसे आप ही रखो। मैं आपसे केवल चार आने के लिए झूठ नहीं बोलूँगा।"

उसने मुझे ज़बर्दस्ती पैसे थमाये और "गुड डे" कहकर लँगड़ाता हुआ चला गया।

मुझे पूरा यकीन था कि वह मुझसे एक झूठी कहानी कह रहा था पर आप कुछ कह नहीं सकते...शायद वह सच में बिपिन के भूत से मिला था। और उसको चार आने देने में ही समझदारी थी, क्योंकि हो सकता है वह सी.आई.डी. का ही आदमी हो।

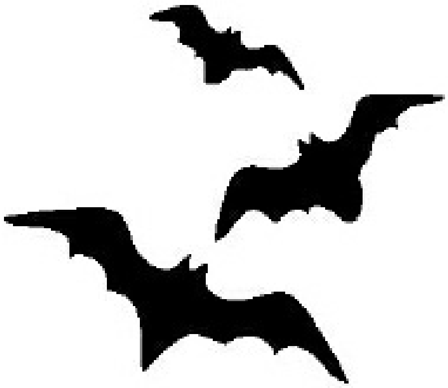

हवा की सरगोशी

मार्च शायद पहाड़ों के लिए सबसे असुविधाजनक महीना है। वर्षा ठंडी होती है और अक्सर हिम वृष्टि और ओले पड़ते हैं और उत्तर से आती हवा पहाड़ी रास्तों को भयंकर ताकत से चीरती आती है। जो थोड़े से लोग सर्दियाँ हिल-स्टेशन पर बिताते हैं, आग के पास बने रहते हैं। अगर वे आग का खर्च वहन नहीं कर सकते तो बिस्तर पर रहते हैं।

मैंने पाया कि वृद्ध मिस मैकेन्ज़ी तीन-चार पानी की बोतलों के साथ बिस्तर पर सिकुड़ी हुई हैं। मैने शयनकक्ष में पड़ी इकलौती आरामकुर्सी ली और कुछ समय तक मैं और मिस मैकेन्ज़ी तूफ़ान को सुनते रहे और बिजली की क्रीड़ा देखते रहे। बारिश टिन की छत पर भयानक शोर कर रही थी और हमें एक-दूसरे को सुन सकने के लिए अपनी आवाज़ें बहुत ऊँची करनी पड़ रही थीं। पहाड़ियाँ वर्षा की बूँदों से भरी खिड़कियों से देखने की वजह से बहुत धुँधली और अस्पष्ट लग रही थीं। हवा दरवाज़ों को पीटती, घुसने के लिए आतुर थी; वह चिमनी में उतर आयी थी, लेकिन वहाँ अटकी, घुटी हुई, गरगराती अपना विरोध दर्ज कर रही थी।

"चिमनी में एक भूत है और वह बाहर नहीं आ पा रहा," मैंने कहा।

"फिर उसे वहीं रहने दो," मिस मैकेन्जी ने कहा।

एक चमकदार बिजली की कौंध ने विपरीत दीवार को रोशन किया तो कुछ क्षणों के लिए मुझे खंडहर के ढेर नज़र आये जिनके बारे में मैं नहीं जानता था।

"तुम जली हुई पहाड़ियों को देख रहे हो," मिस मैकेन्जी ने कहा। "जब भी तूफ़ान आता है तो वहाँ बिजली गिरती है।"

"शायद वहाँ पत्थरों में लौह भंडार है," मैंने कहा।

"मैं नहीं जानती, लेकिन यही वजह है कि वहाँ बहुत दिनों से कोई नहीं रहा।

लगभग हर घर जो बनाया गया बिजली की चपेट में आकर जल गया।”

“मुझे लगा, मैंने अभी खंडहर देखे।”

“कुछ नहीं बस मलबा है। जब वे पहली बार पहाड़ों पर रहने आये तो उन्होंने यह स्थल चुना था। बाद में वे उस जगह पर चले गये जहाँ अभी शहर बसा है। जली हुई पहाड़ियाँ हिरण और तेंदुओं और बन्दरों—और बेशक इनके भूतों के लिए छोड़ दी गयीं।”

“ओह, तो यह भी भुतहा है।”

“ऐसा वे कहते हैं। ऐसी शामों में। लेकिन तुम भूत पर भरोसा नहीं करते, क्या करते हो?”

“नहीं, क्या आप करती हैं?”

“नहीं, लेकिन तुम समझोगे कि वह ऐसा क्यों कहते हैं कि पहाड़ी भुतहा है, जब तुम उसकी कहानी सुनोगे। सुनो।”

मैंने सुना लेकिन शुरू में मैं कुछ नहीं सुन सका, बस हवा और बारिश की आवाज़ के अलावा। फिर मिस मैकेन्जी की साफ़ आवाज़ सभी तत्वों की आवाज़ से ऊँची हो गयी और मैंने उन्हें कहते सुना—

“...यह बदनसीब प्रेमियों की पुरानी कहानी है, बस यह सच है। मैं रॉबर्ट से उसके माता-पिता के घर में कुछ हफ़्तों पहले ही मिली थी जब यह घटना घटी। वह अट्ठारह साल का था, लम्बा, जीवन और पौरुष से भरा हुआ। उसका यहीं जन्म हुआ था, लेकिन उसके माता-पिता यह उम्मीद रखते थे कि रॉबर्ट के पिता की सेवानिवृत्ति के बाद वे इंग्लैंड लौट जायेंगे। उसके पिता न्यायाधीश थे, मुझे लगता है—लेकिन इसका इस कहानी से कोई सम्बन्ध नहीं।

“उनकी योजना उस तरह से कार्यान्वित नहीं हो सकी, जैसा वे चाहते थे। तुम समझ सकते हो, रॉबर्ट प्यार में पड़ गया। किसी अंग्रेज़ लड़की के नहीं, ध्यान दो, लेकिन एक पहाड़ी लड़की के, जली हुई पहाड़ियों के पीछे गाँव के ज़मींदार की बेटी के। आज के समय में यह बात बहुत सामान्य है। पच्चीस साल पहले, ऐसी बात सुनने में भी नहीं आती थी। रॉबर्ट को टहलना पसन्द था और वह जंगल के बीच लम्बी पैदल यात्रा के लिए निकला हुआ था, जब उसने उस लड़की को देखा बल्कि सुना। यह बाद में कहा गया कि वह उसकी आवाज़ के प्यार में पड़ गया था। वह गा रही थी और गीत—मंद और मधुर और उसके कानों के लिए अजनबी—उसके दिल में अटक गया। जब उसने उस लड़की के चेहरे की झलक देखी, वह मायूस नहीं हुआ। वह जवान और खूबसूरत थी। उसने उसे देखा और उसकी हतप्रभ दृष्टि को एक हल्की, क्षणिक मुस्कान दी।

“बेचैन रॉबर्ट ने गाँव में पता किया, लड़की के पिता का पता लगाया और बिना किसी ज़्यादा झमेले के शादी के लिए उसका हाथ माँगा। उसे शायद लगा कि एक साहब का ऐसा अनुरोध अस्वीकार नहीं किया जायेगा। लेकिन यह बात भी थी कि यह उसका बड़प्पन था क्योंकि उसकी जगह कोई और जवान लड़का होता तो उस लड़की को जंगल में ही मोह लेने की कोशिश करता। लेकिन रॉबर्ट प्यार में था और इसलिए अपने व्यवहार में बिलकुल अतार्किक।

“बेशक लड़की के पिता को उस प्रस्ताव से कुछ लेना-देना नहीं था। वह ब्राह्मण था और अपने परिवार का नाम अपनी एकमात्र लड़की की शादी एक विदेशी से करके नष्ट नहीं करना चाहता था। रॉबर्ट ने उसके पिता के साथ बहस नहीं की, न ही उसने अपने माता-पिता को कुछ कहा, क्योंकि उसे पता था कि उनकी प्रतिक्रिया सदमे और बेचैनी की होगी। वे अपने सामर्थ्य के अनुसार वह सब कुछ करेंगे जो उसके इस पागलपन पर विराम लगाये।

“लेकिन रॉबर्ट ने जंगल में घूमना जारी रखा—तुम वहाँ देखो—सिन्दूर और देवदार के पेड़ों की सघन पट्टी और उसका हमेशा उस लड़की से सामना होता, जब वह चारा या ईंधन बटोर रही होती। ऐसा लगता था कि वह उसके ध्यान देने से बुरा नहीं मान रही और चूँकि रॉबर्ट उसकी भाषा थोड़ी बहुत जानता था, वह जल्दी ही अपनी भावना उसके सामने व्यक्त करने में सक्षम हुआ। वह लड़की शुरू में थोड़ी सतर्क ज़रूर थी, लेकिन उस लड़के की संज़ीदगी ने उसके आत्मसंयम को ध्वस्त कर दिया। आखिरकार, वह भी युवा थी—एक समर्पित युवा पुरुष से बिना उसकी पृष्ठभूमि के बारे में ज़्यादा विचार किये प्रेम कर पाने के लिए पूरी तरह युवा। वह जानती थी कि उसके पिता इसे रोकने के लिए कुछ भी करेंगे। इसलिये उन्होंने साथ भागने की ठानी। यह रूमानी है न, नहीं? लेकिन ऐसा ज़रूर हुआ। सिर्फ़ वे जीवन भर प्रसन्नतापूर्वक साथ नहीं रह पाये।”

“क्या उनके माता-पिता उनके पीछे आये?”

“नहीं। वे जली हुई पहाड़ी की एक तबाह इमारत के पीछे मिलने के लिए राज़ी हुए—ये खंडहर जो तुमने अभी देखे; ये बहुत नहीं बदले हैं, बस इनके ऊपर तब थोड़ी-सी छत हुआ करती थी। उन्होंने घर छोड़ दिया और पहाड़ियों के रास्ते बिना किसी परेशानी के आगे बढ़े। मिलने के बाद उन्होंने वह छोटा रास्ता लेने का विचार किया जो धारा के साथ जाता था जब तक कि मैदान तक नहीं पहुँच जायें। उसके बाद—लेकिन कौन जानता है कि उन्होंने क्या योजना बनायी थी, भविष्य के कौन से सपने उन्होंने बुने थे? उनके खंडहर पहुँचते ही तूफ़ान आ गया। उन्होंने टपकती हुई छत के नीचे आश्रय लिया। वह ऐसा ही एक तूफ़ान था—तेज़ हवा और बारिश और ओले की तीव्र बौछार, और लगभग हर मिनट चमकती और गिरती बिजली। वे ज़रूर पूरे गीले हो गये होंगे, ध्वस्त इमारत के कोने में साथ दुबके हुए, जब बिजली गिरी। कोई नहीं जानता कि यह कब हुआ। लेकिन अगली सुबह उनके जले हुए शरीर पुराने भवन के जीर्ण पीले पत्थर पर मिले।”

मिस मैकेन्जी ने बोलना बन्द कर दिया और मैंने यह ध्यान दिया कि मेघों की गर्जना थोड़ी दूर से आती लग रही थी और बारिश भी कम हो गयी थी; लेकिन चिमनी अब भी खाँस रही थी और अपना गला साफ़ कर रही थी।

“यह सही है, इसका हर शब्द,” मिस मैकेन्जी ने कहा, “लेकिन जहाँ तक जली पहाड़ी के प्रेतग्रस्त होने का प्रश्न है, यह अलग बात है। मुझे भूतों का कोई अनुभव नहीं हुआ है।”

“जो भी हो, आपको आग की ज़रूरत है, उन्हें चिमनी से दूर रखने के लिए,” मैंने जाने के लिए उठते हुए कहा “मेरे पास बरसाती और छाता है, और मेरा अपना कॉटेज दूर

नहीं है।”

अगली सुबह जब मैंने जली हुई पहाड़ियों तक का ढलवाँ रास्ता लिया, आकाश साफ़ था जबकि हवा अब भी कठोर थी, यह अब बिलकुल भी खतरनाक नहीं थी। एक घंटे की चढ़ाई मुझे पुराने खंडहर तक ले आयी—वह अब कुछ भी नहीं बस पत्थरों का ढेर था, जैसा कि मिस मैकेन्जी ने कहा था। दीवार का एक हिस्सा बचा था और अलाव का एक कोना। घास और खरपतवार फ़र्श पर उग आये थे और वसन्ती गुलाब और चट्टानों पर उग आने वाला जंगली सैक्सोफ्रेज़ पौधा मलबे पर खिल रहा था।

‘कहाँ शरण ली होगी उन्होंने,’ मैंने सोचा, ‘जब हवा ने उन्हें चीरा होगा और आसमान से आग गिरी होगी।’ मैंने ठंडे पत्थरों को छुआ, इस अधूरी उम्मीद के साथ कि उन पर मनुष्य के स्पर्श की ऊष्मा के कुछ अंश मुझे मिल जायें। मैंने सुना, किसी प्राचीन प्रतिध्वनि की प्रतीक्षा में, आवाज़ की कोई लौटती तरंग जो कि मुझे मृत प्रेमियों की आत्माओं के करीब ले जाये; लेकिन वह सिर्फ़ हवा थी, लुभावने देवदारों के बीच खाँसती हुई।

मुझे लगा कि मैंने हवा में आवाज़ें सुनीं, और शायद मैंने सुना, क्योंकि क्या यह हवा शाश्वत मृतक की आवाज़ नहीं है?

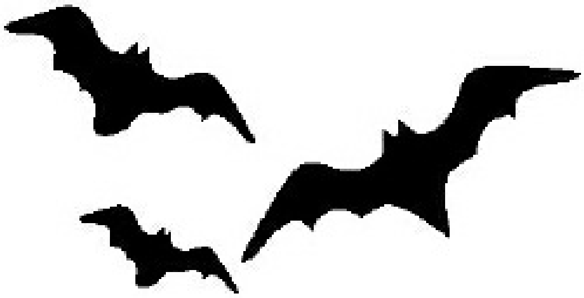

सैवॉय होटल का भूत

वह किसका भूत था, जिसे राम सिंह (सेवॉय होटल का बारटेंडर) ने पिछली रात देखा था? लम्बे, काले चोगे में एक आकृति जो होटल की मंद रोशनी वाली दहलीज़ में खड़ी थी और फिर पुराने बरामदे की परछाईं में चली गयी। राम सिंह ने आकृति का पीछा किया लेकिन बरामदे में कोई नहीं था और कोई दरवाज़ा या खिड़की नहीं थी जिसके माध्यम से वह इन्सान (अगर वो इन्सान था) बाहर जा सकता था।

राम सिंह पियक्कड़ नहीं था; या उसने ऐसा कहा। वह कल्पनाशील भी नहीं था।

“क्या तुमने इस इन्सान को देखा है—यह भूत—पहले?” मैंने पूछा।

“हाँ, एक बार। पिछली सर्दियों में, जब मैं नृत्य कक्ष (बाल रूम) से गुज़र रहा था। मैंने सुना कोई पियानो बजा रहा है। नृत्य कक्ष के दरवाज़े पर ताला लगा हुआ था और मैं अन्दर नहीं जा सकता था, न ही कोई और। मैं किनारे खड़ा हुआ और एक खिड़की से देखता रहा, और वह यह आदमी—एक कनटोपे वाली आकृति, मैं उसका चेहरा नहीं देख सका—वह पियानो के सामने स्टूल पर बैठा था। मैंने वहां संगीत बजता सुना और मैंने खिड़की पर हल्का सा खटखटाया। आकृति मेरी ओर घूमी, लेकिन कनटोपा खाली था, वहाँ कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था! मैं अपने कमरे में दौड़ा और दरवाज़ा बन्द कर लिया। हमें वह पियानो बेच देना चाहिए, सर। वहाँ उसे बजाने वाला कोई नहीं था सिवाय भूत के।”

मसूरी के इस पुराने होटल की लगभग हर कहानी में असम्भव चीज़ों का तत्व था तब भी जब वे तथ्यों से समर्थित थे। पहले वाले मालिक, मिस्टर मैकक्लिंटौक की नकली नाक थी—नन्दू के अनुसार, उन्होंने इसे पहले कभी नहीं देखा था। इसलिए मैंने बूढ़े नेगी से जानना चाहा, जो पहले इस होटल में रूम ब्वॉय के तौर पर काम करने 1932 में आया था (मेरे जन्म से कुछ साल पहले) और जो लगभग सात सालों बाद और दो पत्नियों के बाद प्रमुख कार्यालय देखने लगा। नेगी कहता है कि यह बिलकुल सही है।

“मैं रोज़ मैकक्लिंटौक को रात में अन्तिम चीज़ के तौर पर कोको का कप देता था।

मैं उनका कमरा छोड़ने के बाद फुर्ती से किसी खिड़की के पीछे जाता और उन्हें देखता जब तक वह बिस्तर पर नहीं चले जाते थे। बत्ती बन्द करने से पहले अन्तिम काम वह करते थे, अपनी नकली नाक हटाना और उसे बिस्तर के बगल वाली मेज़ पर रखना। वह कभी भी उसे पहनकर नहीं सोते थे। मुझे लगता था इससे उन्हें परेशानी होती थी जब भी वह करवट बदलते या अपने चेहरे के बल सोते। सुबह पहला काम, अपनी चाय का कप लेने के बाद, वह उसे फिर पहन लेते। एक महान आदमी, मैकक्लिंटौक साहब।”

“लेकिन उन्होंने अपनी नाक खोयी कैसे?” मैंने पूछा।

“पत्नी ने काट ली,” नन्दू ने कहा।

“नहीं, सर,” नेगी ने कहा, जिसकी सच बोलने की मिसाल दी जाती थी, “वह प्रथम विश्व युद्ध के दौरान जर्मन गोली द्वारा घायल हुए। उन्हें क्षतिपूर्ति के तौर पर विक्टोरिया क्रॉस मिला था।”

“और जब वह मरे, क्या उन्होंने अपनी नाक पहन रखी थी?” मैंने पूछा।

“नहीं, सर,” बूढ़े नेगी ने कहा, थोड़ा साँस लेते हुए उसने अपनी कहानी जारी रखी, “एक सुबह जब मैं साहब के लिए चाय का कप लेकर गया, मैंने पाया कि वह मृत पड़े थे, बिना नाक के! वह बिस्तर के बगल वाली मेज़ पर पड़ी हुई थी। मुझे लगा, मुझे उसे वहीं छोड़ देना चाहिए, लेकिन मैकक्लिंटौक साहब अच्छे आदमी थे। मैं यह बर्दाश्त नहीं कर सकता था कि पूरी दुनिया उनकी नकली नाक के बारे में जाने, इसलिये मैंने उसे वापस उनके चेहरे पर लगा दिया और मैनेजर को सूचना दी। एक प्राकृतिक मौत, अचानक दिल का दौरा। लेकिन मैंने यह बात निश्चित की कि वह अपने ताबूत में जुड़ी हुई नाक के साथ जायें।”

हम सब सहमत हुए कि नेगी सहयोगी के तौर पर एक अच्छा आदमी था, खासकर संकट के समय में।

ऐसा माना जाता है कि मैकक्लिंटौक के भूत ने होटल के गलियारों को ग्रसित कर रखा है, लेकिन मेरा उससे अब भी सामना होना बाकी था। क्या भूत ने अपनी नाक पहन रखी थी? बूढ़ा नेगी ऐसा नहीं सोचता है (नकली नाक के मानव निर्मित होने के कारण) लेकिन उसने भूत को करीब से नहीं देखा था, बल्कि दो विशाल देवदारों के बीच की जगह पर ‘बीयर गार्डन’ के किनारे पर।

काफ़ी लोग जो ‘राइटर्स बार’ में घुसते हैं, बहुत ही गये-गुज़रे और बेहाल लगते हैं और कई बार मुझे ज़िन्दा लोगों और मृत लोगों में अन्तर करने में मुश्किल आती। लेकिन सच्चे भूत वे होते हैं जो अपनी शराब का भुगतान किये बिना वहाँ से रफ़ूचक्कर हो जाते हैं।

किपलिंग से मुलाकात

मैं विक्टोरिया और अल्बर्ट संग्रहालय के इंडियन सैक्शन में एक बेंच पर बैठा था जब एक लम्बा, झुका हुआ, वृद्ध भद्रपुरुष मेरी बगल में बैठ गया। मैंने उस पर एक उड़ती हुई नज़र डाली, उसकी साँवली आकृति, घनी मूँछें और कमानीदार ऐनक। उसके चेहरे में कुछ बहुत ही परिचित और परेशान करने वाला था और मैं उसे दोबारा देखने से खुद को रोक नहीं पाया।

मैंने ध्यान दिया कि वह मुझे देखकर मुस्कुरा रहा था।

"क्या तुम मुझे पहचानते हो?" उसने हल्की मधुर आवाज़ में पूछा।

"बेशक, तुम परिचित दिख रहे हो," मैंने कहा, "क्या हम कहीं मिले हैं?"

"शायद। लेकिन अगर मैं तुम्हें परिचित लग रहा हूँ तो कोई बात तो है। इन दिनों की समस्या यह है कि लोग अब मुझे नहीं जानते—मैं एक परिचित हूँ, बस इतना ही। पुराने विचारों के लिए खड़ा बस एक नाम।"

थोड़ा परेशान होकर मैंने पूछा, "तुम क्या करते हो?"

"मैं कभी किताबें लिखता था। कविता और कहानियाँ...तुम कहो, किनकी किताबें पढ़ते हो तुम?"

"ओह, मौघम, प्रीस्टले, थर्बर। और पुराने लेखकों में बेनेट और वेल्स..." मैं झिझका, कोई महत्त्वपूर्ण नाम तलाशने के लिए और मैंने एक छाया देखी, एक उदास छाया, मेरे साथी के चेहरे पर छा गयी।

"ओह हाँ, और किपलिंग," मैंने कहा, "मैं रुडयार्ड किपलिंग को बहुत ज़्यादा पढ़ता हूँ।"

उनका चेहरा एकदम चमक गया और मोटे लेंस वाले चश्मे के पीछे आँखें एकदम जीवंत हो उठीं।

“मैं किपलिंग हूँ,” उन्होंने कहा।

मैंने उन्हें चकित होकर ताका। और फिर यह अनुभव कर कि वह खतरनाक भी हो सकता है, मैं निर्बलता से मुस्कुराया और कहा, “ओह हाँ?”

“तुम शायद मुझ पर विश्वास नहीं करते हो। मैं मृत हूँ, बेशक।”

“मैंने यही सोचा।”

“और तुम भूत में विश्वास नहीं करते हो?”

“किसी नियम की तरह नहीं।”

“लेकिन तुम्हें उससे बात करने में कोई आपत्ति तो नहीं, अगर वह साथ आता है?”

“मुझे कोई आपत्ति नहीं है, लेकिन मैं कैसे जान पाऊँगा कि तुम किपलिंग हो? मैं यह कैसे मान लूँ कि तुम ढोंगी नहीं हो?”

“सुनो, फिर:

जब मेरा स्वर्ग खून में बदल जायेगा,
जब अँधेरा मेरे दिन पर छा जायेगा,
बहुत दूर, लेकिन सबसे वफ़ादार, प्रतीक्षारत होगा
वह पुराना तारा जिसे मैंने दूर कर दिया।
मैंने खुद को चाहा, और
मैं न जी सका और न मर ही पाया।”

“एक बार,” उन्होंने कहा, मुझे बाँह से पकड़ते हुए और मेरी आँख में सीधा झाँकते हुए। “एक बार जीवन में मैंने तारा देखा लेकिन मैंने उसे जाने का संकेत किया।”

“आपका तारा अब तक नहीं टूटा है,” मैंने कहा, अचानक द्रवित होते हुए, अचानक इस बात के लिए पूरी तरह आश्वस्त होते हुए कि मैं किपलिंग की बगल में बैठा हूँ, “एक दिन जब यहाँ विदेश में जोखिम की नयी भावना होगी, हम आपको फिर से खोज लेंगे।”

“इतने लम्बे समय तक उन्होंने मुझे इतना तिरस्कृत क्यों किया?”

“आप बहुत युद्धप्रिय थे। मुझे लगता है—बहुत ज़्यादा ही साम्राज्य के वफ़ादार। आप अपने हित के लिए बहुत अधिक देशभक्त थे।”

वह थोड़ी पीड़ा में दिखे। “मैं कभी भी बहुत राजनैतिक नहीं था,” उन्होंने कहा, “मैंने 600 से ज़्यादा कवितायें लिखीं और उनमें से दर्जन भर को ही आप राजनैतिक कह सकते हैं। मुझे इस बात के लिए कोसा गया कि मैं गोरों के उत्तरदायित्व के मुद्दे की बीन बजाता रहता हूँ लेकिन मेरा एकमात्र उद्देश्य था अपने पाठकों को साम्राज्य का दर्शन करवाना—और मैं विश्वास करता था कि साम्राज्य एक बढ़िया और महान चीज़ है। क्या किसी चीज़ पर विश्वास करना गलत है? मैं कभी भी राजनैतिक मुद्दों में गहराई से नहीं गया, यह सच है। तुम्हें ज़रूर याद होना चाहिए, भारत में मेरे सात साल मेरी जवानी के साल थे। मैं अपने बीसवें साल में था, थोड़ा अपरिपक्व अगर तुम्हें अच्छा लगे, और भारत में मेरा रुझान एक लड़के का रुझान था। अभियान मुझे किसी भी और चीज़ से ज़्यादा

प्रभावित करते थे। तुम्हें यह समझना चाहिए।”

“किसी ने भी अभियान या भारत को इतनी विविधता से वर्णित नहीं किया। मैं किम के साथ खुद को महसूस करता हूँ। वह ग्रैंड ट्रंक रोड पर जहाँ भी जाता है, बनारस के मन्दिरों में, सहारनपुर के फल के बगीचों में, हिमाच्छादित हिमालय पर किम के पास कविता के रंग और गति है।”

उन्होंने एक आह भरी और एक उदास झलक उनकी आँखों में तैर गयी।

“मैं ज़रूर पूर्वाग्रही हूँ, बेशक,” मैंने कहना जारी रखा, “मैंने अपना अधिकांश जीवन भारत में बिताया है—तुम्हारे भारत में नहीं, लेकिन एक भारत जिसके पास अब भी वे अधिकतर रंग और वातावरण हैं जिन्हें आपने उकेरा था। आप जानते हैं, मिस्टर किपलिंग, आप अब भी रेल के डिब्बे के तीसरी क्लास में बैठकर सबसे निराले लोगों के समूह से मिल सकते हैं। आप अब भी वही स्वागत, गरिमा और साहस पायेंगे जो लामा और किम ने अपनी यात्राओं में पाया था।”

“और ग्रैंड ट्रंक रोड? क्या यह अब भी लोगों के एक लम्बे जुलूस जैसा है?”

“एकदम वैसा तो नहीं,” मैंने थोड़ा उदास होते हुए कहा, “अब बस यह मोटर गाड़ी का जुलूस भर है। बेचारे लामा ट्रक के नीचे आ जायें अगर वह ग्रैंड ट्रंक रोड पर अपनी कल्पनाओं में अधिक खो जायें। समय बदल चुका है। उदाहरण के लिए शिमला में मिसेज हॉक्सबीस जैसे लोग अब और नहीं हैं।”

किपलिंग की आँखों में दूर जाने का भाव था। शायद वह खुद को फिर से एक लड़के जैसा अनुभव कर रहे थे। शायद वह पहाड़ और राजपूताना की लाल धूल देख पा रहे थे। शायद वह अपने प्रसिद्ध पात्रों मलवनी और ओर्थेरिस से निजी वार्तालाप कर रहे थे, या शायद वह अपनी किताब द जंगल बुक के सियोन्स भेड़िये के झुंड के साथ शिकार कर रहे था। लंदन ट्रैफिक की आवाज़ शीशे के दरवाज़े के भीतर से हम तक आ रही थी, लेकिन हमें सिर्फ़ बैलगाड़ी के पहिये और बाँसुरी का दूर से आता संगीत सुनायी दे रहा था।

वह खुद से बात कर रहे थे, अपनी ही एक कहानी के अंश को दोहराते हुए। “और दिन की हवा का आखिरी झोंका किसी अनदेखे गाँव से आता हुआ गीली लकड़ी का धुआँ, उपले, ज़मीन के नीचे की टपकन, और देवदार के निर्जीव पत्तों की गंध लाता था। यह हिमालय की सच्ची गंध थी और अगर एक बार यह एक आदमी के खून में उतर आती है तो वह आदमी आखिरकार, सब कुछ भूल जायेगा और पहाड़ों पर मरने के लिए लौट जायेगा।”

एक धुँध हम दोनों के बीच उठ आयी प्रतीत होती थी—और क्या वह सड़कों से आयी थी?—और जब वह साफ़ हुई, किपलिंग जा चुके थे।

मैंने द्वारपाल से पूछा कि क्या उसने थोड़े झुके कन्धे वाले और चश्मा पहने एक लम्बे इन्सान को जाते देखा है।

“नहीं,” द्वारपाल ने कहा, “पिछले दस मिनट से किसी को नहीं देखा।”

“क्या थोड़ी देर पहले इस तरह का कोई और गैलरी में आया था?”

“ऐसा कोई नहीं जो मुझे याद हो। आपने उस आदमी का नाम क्या बताया था?”

“किपलिंग,” मैंने कहा।

“नहीं जानता उसे।”

“क्या तुमने कभी द जंगल बुक्स पढ़ी है?”

“नाम परिचित लग रहा है। टार्ज़न जैसी कहानियाँ, यही था न?”

मैं संग्रहालय से निकल आया और सड़क पर बहुत देर तक घूमता रहा, लेकिन मुझे किपलिंग कहीं नहीं दिखे। क्या वह लंदन ट्रैफिक का शोर था जो मैं सुन रहा था या सतलुज नदी घाटियों में शोर करती बह रही थी।

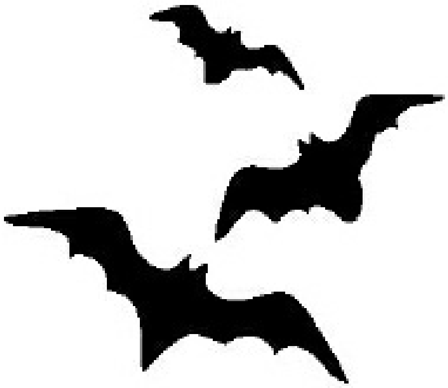

डैफ़ोडिल का किस्सा

वह मार्च का कुहरे वाला दिन था जब मैं बेकर स्ट्रीट पर भटक रहा था, अपनी बरसाती की ज़ेबों में हाथ डाले, एक सूती स्कार्फ़ को अपने गले में बाँधे, और अपने पैरों में दो जोड़ी मोज़े डाले। बी.बी.सी. ने मुझे उत्तर भारत के ग्रामीण जीवन पर एक वक्तव्य देने के लिए अधिकृत किया था और बेकर स्ट्रीट पर कुहरे में भटकते, वक्तव्य के बारे में सोचते, मुझे यह महसूस हुआ कि मैं भारत या किसी भी जगह के ग्राम्य जीवन के बारे में नहीं जानता।

सच है कि मैं गोबर के उपले के धुएँ की गंध और चमेली की खुशबू और मिट्टी के घर की दीवारों पर चढ़ता बाढ़ का पानी याद कर सकता था, लेकिन मैं गाँव की चुनाव प्रक्रिया या फसल चक्र या गन्नों की कीमतों के बारे में अधिक नहीं जानता था। मैं पीछे मुड़कर और इंडिया हाउस जाकर सारे तथ्य और आँकड़े प्राप्त करने के बारे में सोच ही रहा था जब मैंने यह महसूस किया कि मैं बेकर स्ट्रीट से कहीं आगे निकल गया था।

अपने खयालों में खोया मैं रीजेंट पार्क में भटक रहा था और मुझे बाहर जाने का रास्ता नहीं मिल रहा था?

एक लम्बा भद्र पुरुष, लम्बा स्याह लबादा पहने फूलों की क्यारी पर झुका हुआ था। उसके पास जाकर मैंने पूछा, “कृपया ज़रा ध्यान देंगे, सर—क्या आप मुझे बता सकते हैं कि यहाँ से कैसे निकलूँ?”

“तुम अन्दर कैसे आये थे?” उसने अधीर आवाज़ में पूछा, और जब वह घूमा और मेरी तरफ़ चेहरा घुमाया, मुझे एक झटका लगा। उसने एक नुकीली शिकारी की टोपी पहन रखी थी और दूसरे हाथ में एक आवर्धक शीशा (मैग्नीफाइंग ग्लास) था। एक लम्बा, घुमावदार पाइप उसके मादक होंठों पर अटका था। उसके जबड़े स्टील जैसे थे और उसकी आँखों में आक्रामक भाव था—वे किसी दवा के नशीले प्रभाव से चमक रहे थे।

“ओह ईश्वर!” मैंने आश्चर्य से कहा, “आप शरलॉक होम्स हैं!”

“और आप सर,” उन्होंने उत्तर दिया, अपने लबादे की सरसराहट के साथ, “आप अभी भारत से आये हैं, बेरोज़गार, और रेडियो में एक भाषण देने वाले हैं।”

“आप यह सब कैसे जानते हैं?” मैं हकलाया, “आपने पहले मुझे कभी नहीं देखा। मुझे लगता है कि आपको मेरा नाम भी पता है?”

“स्पष्ट है, मेरे प्रिय बॉन्ड। बी.बी.सी. का जो समाचार पत्र तुम्हारे हाथ में है, जिस पर तुमने लिखा है, तुम्हारे इरादों को दिखाता है। तुम अपने बारे में अनिश्चित हो, इसलिए तुम टीवी के व्यक्तित्व नहीं हो सकते। लेकिन तुम्हारे स्वर में दमखम है। निश्चित ही रेडियो। तुम्हारा नाम लिफ़ाफ़े पर है जिसके ऊपरी आवरण को तुमने पलट रखा है। यह बॉन्ड है, लेकिन आप निश्चित ही जेम्स नहीं हैं—आप उस किस्म के नहीं हैं! तुम बेरोज़गार ही होगे नहीं तो तुम बाग में क्या कर रहे होते, जबकि बाकी लोग कार्यालय, खेत, और कारखानों में खट रहे हैं?”

“और तुम्हें कैसे पता चला कि मैं भारत से हूँ?” मैंने थोड़ा नाराज़गी से कहा।

“तुम्हारे उच्चारण ने तुम्हें धोखा दे दिया,” होम्स ने एक मुस्कान के साथ कहा।

मैं घूमकर जाने ही वाला था, जब उसका रोकता हुआ हाथ मेरे कन्धे पर पड़ा।

“एक पल रुकिये,” उन्होंने कहा, “शायद तुम सहायता कर सकते हो। मैं वाटसन पर चकित हूँ। उसने वादा किया था कि वह पन्द्रह मिनट पहले ही यहाँ मौज़ूद होगा। उसकी पत्नी ने उसको घर पर रोक लिया होगा। शादी मत करना बॉन्ड। औरत बुद्धि को चूस लेती है।”

“मैं किस तरह से तुम्हारी सहायता कर सकता हूँ?” मैंने पूछा, इस बात पर खुश होते हुए कि उस महान आदमी ने मुझे स्वीकार करते हुए विश्वास में लिया था।

“इस पर एक नज़र डालो,” होम्स ने फूलों की क्यारी की बगल में घुटनों के बल बैठते हुए कहा, “क्या तुमने किसी विचित्र चीज़ पर ध्यान दिया?”

“कोई डैफ़ोडिल के फूल नोच रहा है,” मैंने कहा।

“बहुत अच्छा, बॉन्ड! तुम्हारी परखने की शक्ति वाटसन से अच्छी है। अब मुझे बताओ, तुम्हें और क्या दिख रहा है?”

“ज़मीन थोड़ी रौंदी हुई है, बस यही।”

“किस तरह से?”

“एक इन्सान का पैर। ऊँची एड़ी के जूते में। और...एक कुत्ता भी था यहाँ, वह कंद को खोदने में मदद कर रहा था।”

“तुमने तो मुझे चकित कर दिया, बॉन्ड। तुम उससे तेज़ निकले जितना मैंने सोचा था कि तुम होगे। अब क्या मैं तुम्हें समझाऊँ कि यह सब किस बारे में है? तुम समझ सकते हो, पिछले एक हफ़्ते से कोई इस बाग से डैफ़ोडिल के फूल चुरा रहा है और अधिकारियों ने मुझे इस मामले से निबटने के लिए कहा है। मुझे लगा था कि हम अपने अपराधी को आज पकड़ लेंगे।”

मैं थोड़ा निराश था, “तो फिर यह कोई खतरनाक काम नहीं?”

“आह, मेरे प्रिय बॉन्ड, वे दिन बीत गये जब राज्य की राजकुमारियाँ हीरा खो देती

थीं और महारानियाँ माणिक। वहाँ अब कोई राज्य की राजकुमारियाँ नहीं और महारानी माणिक नहीं खरीद सकतीं—अगर वह फास्ट फूड के व्यापार में नहीं चली गयी हों। सबसे सफल अपराधी अब शेयर बाज़ार में काम करते हैं। और स्कॉटलैंड यार्ड, लंदन की पुलिस मेरे अस्तित्व में अब विश्वास ही नहीं करती!"

"मैं यह सुनकर बहुत दुःखी हूँ," मैंने कहा, "लेकिन आपको क्या लगता है कि डैफ़ोडिल कौन चुरा रहा है?"

"ज़ाहिर है कि यह कोई ऐसा है जिसके पास एक कुत्ता है। कोई ऐसा जो कुत्ते को रोज़ सुबह की सैर पर ले जाता है। वह एक औरत की ओर इशारा करता है। यह माना जा सकता है कि लंदन की एक औरत अक्सर एक छोटा कुत्ता रखती है—और, जानवर के पैरों के निशान जाँचने पर, यह नन्हे पेकिंस या छोटे पौमेरियन की जाति लगती है। अगर तुम उस लैम्प पोस्ट पर गीले धब्बे को देखो तो तुम्हें यह अन्दाज़ा होगा कि वह बहुत लम्बा नहीं हो सकता है। इसलिये मैं यह प्रस्ताव रखता हूँ, बॉन्ड कि हम खुद को इस झाड़ीदार किनारे के पीछे छुपा लेते हैं और अपराधी के अपराध स्थल पर आने का इन्तज़ार करते हैं। यह निश्चित है कि वह आज सुबह फिर आयेगी। वह पिछले हफ़्ते से डैफ़ोडिल चुरा रही है और अफ़ीम पीने की तरह डैफ़ोडिल चुराना भी एक आदत बन जाती है।"

होम्स और मैं झाड़ी के पीछे छुपे हुए थे और एक लम्बी प्रतीक्षा के लिए तैयार थे। आधे घंटे के बाद, हमारे धीरज का फल मिला। एक वृद्ध लेकिन स्वस्थ औरत स्मार्ट हरा टोप लगाये, जो मारग्रेट थैचर जैसी दिख रही थी, घास पर होते हुए हमारी ओर आ रही थी, उसके पीछे एक छोटा उजला पौमेरियन जाति का कुत्ता चला आ रहा था। होम्स सही था! मैंने पहले से भी ज़्यादा उसकी प्रतिभा को सराहा। हम इन्तज़ार करते रहे जब तक वह कुत्ता और औरत डैफ़ोडिल के कंद को ढीली मिट्टी से खोदने नहीं लगे, फिर होम्स झाड़ी में से लपका।

"आह! हमने तुम्हें पा लिया," उसने उसकी ओर उछलते हुए इतनी तेज़ी से कहा कि वह चीखी और डैफ़ोडिल के फूल हाथ से गिर गये। मैं प्रमाण जुटाने के लिए झुका, लेकिन मेरे प्रयत्न का फल मुझे उग्र पौमेरियन द्वारा पिछवाड़े में काट कर मिला।

होम्स उस स्त्री को रोकने के लिए सिर्फ़ उसके हाँफते सीने का आवर्धक शीशे से निरीक्षण कर रहा था। मुझे नहीं पता कि उसे किस चीज़ ने ज़्यादा डराया—पकड़े जाने ने, या फिर गम्भीर दिखती मुखाकृति द्वारा अपने पाइप, लबादे और शिकारी की टोपी के साथ उसका अवलोकन करने ने।

"अब कहें, मैडम," उसने दृढ़ता से कहा, "आप क्यों हमारे महामहिम के डैफ़ोडिल चुरा रही थीं?"

उसने रोना शुरू कर दिया—हमेशा एक स्त्री का सबसे बड़ा बचाव—और मुझे लगा होम्स नरम पड़ जायेगा। ऐसा वह हमेशा करता था, जब किसी रोती हुई स्त्री से सामना होता था। और यह मिसेज थैचर नहीं थीं; वह आक्रामक हो गयी होतीं।

"मैं उपकार मानूँगा, बॉन्ड, अगर तुम बाग के सहायक को बुलाओगे," उसने कहा।

मैं दूर स्थित एक ग्रीन हाउस तक भागा और थोड़ी देर खोजने के बाद मुझे माली

मिला। “डैफ़ोडिल चुरा रही थी, क्या वास्तव में?” उसने पूछा, दोगुनी तेज़ी से दौड़ते हुए, एक हाथ में खतरनाक दिखता हुआ पाँचा लिये हुए।

लेकिन जब वह डैफ़ोडिल की क्यारी के पास पहुँचा, हमें चोर कहीं नहीं मिला। होम्स भी कहीं दिख नहीं रहा था। स्पष्ट था कि वे साथ गये हैं, मुझे उलझन में डालते हुए। मैं सन्देह और शर्म से घिर गया, लेकिन फिर मैंने देखा कि डैफ़ोडिल के कंद घास पर बिखरे हुए हैं।

“होम्स ज़रूर उसे पुलिस के पास ले गये होंगे,” मैंने कहा।

“होम्स,” माली ने दोहराया, “और होम्स कौन है?”

“शरलॉक होम्स, बेशक। वह प्रसिद्ध जासूस। तुमने उनके बारे में सुना नहीं है?”

माली ने मुझ पर एक सन्देह-भरी दृष्टि डाली।

“शरलॉक होम्स, इह? और तुम डॉक्टर वाटसन होगे, मेरा खयाल है?”

“बेशक, नहीं,” मैंने क्षमा माँगने के अन्दाज़ में कहा, “मेरा नाम बॉन्ड है।”

यह माली के लिए पर्याप्त था। उसने बाग में पहले भी पागल देखे थे। वह घूमा और ग्रीन हाउस की दिशा में गुम हो गया।

अन्ततः मैंने पार्क के बाहर का रास्ता खोज लिया, यह महसूस करते हुए कि होम्स ने मुझे थोड़ा नीचा दिखाया। फिर, जैसे ही मैं बेकर स्ट्रीट पार कर रहा था, मुझे लगा मैंने उन्हें सामने के फुटपाथ पर देखा है। वह अकेले थे, एक रोशनी वाले कमरे को ताकते हुए और उनकी बाँहें उठी हुई थीं जैसे वह किसी को हाथ हिला रहे हों। मुझे लगा, मैंने उन्हें चिल्लाते हुए सुना, “वाटसन!” लेकिन मैं तय नहीं कर सका। मैंने सड़क पार करना शुरू किया लेकिन एक बड़ी लाल बस कुहरे से निकलकर मेरे सामने आ गयी और मुझे उसके गुज़र जाने की प्रतीक्षा करनी पड़ी। जब सड़क साफ़ हुई, तो मैं तेज़ी से भागा। लेकिन उस समय तक मिस्टर होम्स जा चुके थे, और ऊपर के कमरे अँधेरे थे।

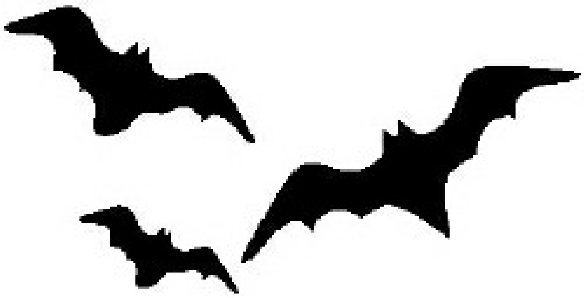

फॉक्स-बर्न पर पिकनिक

लगभग सभी हिल स्टेशनों पर, तेज़ गति से हो रहे निर्माण-कार्यों के बावजूद अब भी कुछ खंडहर पाये जाते हैं जैसे पुराने ढहते बँगले जो अब केवल चमगादड़, उल्लू, जंगली जानवरों, घुमक्कड़ साधुओं और भटकती आत्माओं का शरणस्थल हैं।

ऐसा ही एक खंडहर फॉक्स-बर्न है, लेकिन मैं आपको यहाँ पहुँचने का रास्ता नहीं बताऊँगा। मैं यहाँ 'ध्यान' लगाने या फिर महज़ चिन्तन करने जाता हूँ। और मैं नहीं चाहता कि कभी ऐसा हो कि मैं वहाँ पहुँचूँ और वहाँ पचास लोग पिकनिक मनाने पहुँचे हों।

लेकिन फिर भी फॉक्स-बर्न एक तरह के पिकनिक का साक्षी रहा, जब बच्चे मेरे साथ खंडहर में साथ गये। उन्होंने सुना था कि यह भुतहा है और वे भूत देखना चाहते थे।

राकेश बारह साल का है, मुकेश छह साल का है, और डॉली चार साल की है और वे भूतों से नहीं डरते हैं।

मुझे यहाँ यह उद्धृत करना है कि फॉक्स-बर्न के खंडहर बनने से पहले, 1940 में, यह एक वृद्ध महिला मिसेज विलियम्स के पास था, जिसने कुछ सालों तक इसे बोर्डिंग हाउस की तरह इस्तेमाल किया था। अन्त में, खराब स्वास्थ्य ने उनको यह काम छोड़ देने के लिए बाध्य कर दिया और अपने अन्तिम सालों के दौरान, वह इस विशाल घर में अकेली रहती थीं, सहायता के लिए बस एक चौकीदार था। उनके बच्चे, जो वहीं पर पले-बढ़े थे, दूर की जगहों पर बस चुके थे।

जब मिसेज विलियम्स मर गयीं, चौकीदार कुछ समय तक ठहरा, जब तक सम्पत्ति बेच नहीं दी गयी; लेकिन उसने वह जगह छोड़ दी जितनी जल्दी वह छोड़ सका। देर रात उसके दरवाज़े पर तेज़ खटखटाने की आवाज़ हुई, और उसने एक वृद्ध स्त्री का चिल्लाना सुना, "शमशेर सिंह, दरवाज़ा खोलो! दरवाज़ा खोलो, मैं कहती हूँ और मुझे अन्दर आने दो!"

यह कहने की ज़रूरत नहीं कि शमशेर सिंह ने दरवाज़ा मज़बूती से बन्द रखा। पहले

मौके पर ही वह गाँव लौट गया। हिल-स्टेशन उस समय मंदी के दौर से गुज़र रहा था और नये मालिक ने घर गिरवा दिया और छत और खम्भे रद्दी की तरह बेच दिये।

"फॉक्स-बर्न का मतलब क्या होता है?" राकेश ने पूछा जब हम खंडहर की ओर जाने वाले उपेक्षित, जंगली पौधों से भरे हुए रास्ते पर चढ़े।

"बर्न स्कॉटिश भाषा का एक शब्द है जिसका अर्थ धारा या झरना है। शायद कभी वहाँ एक झरना था। अगर ऐसा है तो यह बहुत पहले सूख गया था।"

"और कभी एक लोमड़ी यहाँ रहती थी?"

"शायद एक लोमड़ी इस झरने पर पानी पीने आती थी। अब भी लोमड़ियाँ पहाड़ पर रहती हैं। कभी-कभी तुम उन्हें चाँदनी रात में नाचते देख सकते हो।"

एक दीवार के अन्तराल से गुज़रते हुए, हम घर के खंडहर में पहुँचे। गर्मी की सुबह की चमकती रोशनी में यह बिलकुल भी डरावना या निराशाजनक नहीं लग रहा था। बस यूनानी नगर डोरिस की शैली के खम्भों की पंक्ति ही उसके अवशेष के रूप में बची थी जो कभी भव्य ड्योढ़ी और बरामदा रहा होगा। उनके पार, देवदारों के बीच से हम दूर बर्फ़ देख सकते थे। यह किसी के लिए अपनी ज़िन्दगी के बेहतर दिन बिताने के लिए एक बहुत लुभावनी जगह थी। कोई शक नहीं कि मिसेज विलियम्स वापस आना चाहती थीं।

जल्द ही बच्चे घास पर धमाचौकड़ी मचाने लगे, जबकि मैंने एक विशाल अखरोट के पेड़ के नीचे शरण ली।

अखरोट के पेड़ से बढ़कर मैत्रीपूर्ण पेड़ कोई और नहीं, खासकर गर्मियों में जब यह पत्तियों से भरा होता है।

मुकेश ने एक खाली वॉटर टैंक खोज लिया और राकेश ने सुझाया कि यह पहले उस धारा का स्त्रोत हुआ करता था, जिसका अब कोई अस्तित्व नहीं। डॉली घास में खिलने वाले जंगली गुलबहार के फूलों से गुलदस्ता बनाने में व्यस्त थी।

राकेश ने अचानक ऊपर देखा। उसने खंडहर के दूसरी तरफ़ के रास्ते की ओर संकेत किया, और चिल्ला उठा—"देखो, वह क्या है? क्या वह मिसेज विलियम्स हैं?"

"भूत!" मुकेश ने उत्तेजना से कहा।

लेकिन वह स्थानीय धोबिन निकली, जो एक बड़ा सफ़ेद बंडल सिर पर रखे, वहाँ से गुज़र रही थी।

इससे ज़्यादा शान्ति की जगह की कल्पना नहीं की जा सकती थी, जब तक कि एक बड़ा काला कुत्ता, स्पैनियल जाति का उस जगह पर न आया था। वह चाहता था कि कोई उसके साथ खेले—वास्तव में, उसने हमें खेलने पर बाध्य किया—और हमारे चारों तरफ़ गोल-गोल घूमने लगा जब तक कि हमने लकड़ियाँ नहीं फेंकीं उसके उठाकर लाने के लिए और उसे अपना आधा सैंडविच नहीं दिया।

"यह किसका कुत्ता है?" राकेश ने पूछा।

"मैं नहीं जानता।"

"क्या मिसेज विलियम्स काला कुत्ता रखती थीं?"

"क्या यह एक कुत्ते का भूत है?" मुकेश ने पूछा।

“यह मुझे वास्तविक लग रहा है,” मैंने कहा।

“और इसने मेरे सारे बिस्कुट खा लिये,” डॉली ने पूछा।

“क्या भूत को खाना चाहिए होता है?” मुकेश ने पूछा।

“मुझे नहीं पता। हमें किसी से पूछना होगा।”

“भूत होने में कोई मज़ा नहीं अगर आप खा नहीं सकते,” मुकेश ने घोषणा की।

उस काले कुत्ते ने उसी तरह अचानक हमें छोड़ दिया, जैसे वह प्रकट हुआ था, और चूँकि वहाँ मालिक का कोई चिन्ह नहीं था, मैं यह सोचकर आश्चर्य करने लगा कि वह वास्तव में कहीं एक आत्मा ही तो नहीं था।

सूरज को बादल के एक टुकड़े ने ढँक लिया और हवा में ठंड बढ़ गयी।

“आओ घर चलें,” मुकेश ने कहा।

“मैं भूखा हूँ,” राकेश ने कहा।

“आ जाओ, डॉली,” मैंने आवाज़ लगायी।

लेकिन डॉली कहीं दिखाई नहीं दी।

हमने उसे आवाज़ लगायी और पेड़ों और खम्भों के पीछे देखा, इस बात पर निश्चित होते हुए कि वह कहीं छुपी हुई थी। उसे खोजते हुए लगभग पाँच मिनट बीत गये और आशंका का एक डरावना विचार मुझे घेरने ही लगा था, जब डॉली खंडहर से निकल कर हमारी ओर भागती हुई आयी।

“तुम कहाँ रह गयी थीं?” हमने लगभग एक स्वर में उत्तर माँगा।

“मैं खेल रही थी—वहाँ—पुराने घर में। आँखमिचौली।”

“अकेले ही?”

“नहीं, वहाँ दो बच्चे थे। एक लड़का और एक लड़की। वे भी खेल रहे थे।”

“मैंने किसी बच्चे को नहीं देखा,” मैंने कहा।

“वे अब चले गये हैं।”

“अच्छा, अब हमारे भी चलने का समय है।”

हम घुमावदार रास्तों पर चले, राकेश हमारे आगे चल रहा था और फिर हमें रुकना पड़ा, क्योंकि डॉली रुक गयी थी और किसी को हाथ हिला रही थी।

“तुम किसको हाथ हिला रही हो, डॉली?”

“बच्चों को।”

“वे कहाँ हैं?”

“अखरोट के पेड़ के नीचे।”

“मुझे वे दिखाई नहीं दे रहे। तुम्हें दिखाई दे रहे हैं, राकेश? क्या तुम्हें मुकेश?”

राकेश और मुकेश ने कहा कि वे किसी बच्चे को देख नहीं पा रहे, लेकिन डॉली अब भी हाथ हिला रही थी।

“गुड बॉय,” उसने आवाज़ लगायी, “गुड बॉय!”

क्या वहाँ हवा में आवाज़ें थीं? धीमी आवाज़ें गुड बॉय कहती हुईं? क्या डॉली कुछ देख रही थी? क्या डॉली कुछ ऐसा देख रही थी, जो हम नहीं देख सके थे?"

"हमें कोई नहीं दिखाई दे रहा है।" मैंने कहा।

"नहीं," डॉली ने कहा, "लेकिन वे मुझे देख सकते हैं!"

फिर उसने अपना खेल छोड़ दिया और हमारे साथ शामिल हो गयी और हम हँसते हुए घर की ओर भागे। मिसेज विलियम्स ने उस दिन अपने पुराने घर की यात्रा भले ही नहीं की थी लेकिन शायद उनके बच्चे वहाँ थे, अखरोट के पेड़ के नीचे खेलते हुए, जिसे वे बहुत पहले से जानते थे।

पानी में कुछ है

पन्द्रह साल पहले मैंने एक गर्म दोपहर में राजपुर के करीब उस तालाब को खोजा था। वह पास उगे साल के पेड़ों की छाया से ढँका था और शान्त और आमन्त्रित करता प्रतीत हो रहा था। मैंने अपने कपड़े उतारे और पानी में गोता लगा दिया।

पानी मेरी उम्मीद से ज़्यादा ठंडा था। वह ग्लेशियर के पानी की तरह बर्फ़ीला ठंडा था। सूरज ने जैसे इसे कभी छुआ नहीं था, ऐसा प्रतीत होता था। पूरी शक्ति के साथ तैरते हुए मैं तालाब के दूसरे किनारे पर पहुँचा और खुद को पत्थर पर खींचा, काँपते हुए।

लेकिन मैं थोड़ा और तैरना चाहता था। इसलिये मैंने फिर से गोता लगाया और हल्के ब्रेस्टस्ट्रोक देता हुआ तालाब के बीचोंबीच पहुँचा। कुछ मेरे पैरों के बीच सरक आया। कुछ लिसलिसा, मुलायम। मैं किसी को देख नहीं पा रहा था, कुछ सुन नहीं पा रहा था। मैं तैरता रहा लेकिन वह लिसलिसी तैरती हुई चीज़ मेरे पीछे लगी रही। मुझे वह अच्छा नहीं लग रहा था। कुछ मेरे पैर के पास लिपट आया। कोई पानी के नीचे का पौधा नहीं। कोई चीज़ जो मेरे पंजों को चूस रही थी। एक लम्बी जीभ मेरी पिंडली को चाट रही थी। मैं बेतहाशा तैरता रहा, उस अनजान चीज़ से खुद को दूर भगाता हुआ जो मेरा साथ चाहती थी। कोई अकेली चीज़, छाया में विलीन होती हुई। पानी में हाथ-पैर मारता फुहारें छोड़ता, मैं एक भयभीत सूंस की तरह तैर रहा था जो कि किसी भयंकर खतरे से भाग रहा हो।

पानी से सुरक्षित बाहर आकर, मुझे धूप की रोशनी से गर्म एक पत्थर मिला और मैं वहाँ पानी को देखता खड़ा रहा।

कुछ नहीं हिला। तालाब की सतह अब शान्त और अचल थी। बस कुछ गिरे हुए पत्ते तैर रहे थे। एक भी मेढक, एक भी मछली, या पानी का पक्षी नज़र नहीं आ रहा था और यह अपने आप में एक विचित्र बात थी, क्योंकि आप किसी प्रकार के जीवन का प्रमाण तालाब में देखने की ज़रूर उम्मीद करते हैं।

लेकिन तालाब में कोई रहता था, इस बात का मुझे यकीन था। कोई बहुत ही ठंडे खून वाला, पानी से भी ठंडा और गीला। क्या वह खरपतवार में फँसा कोई शव था? मैं नहीं जानना चाहता था; इसलिये मैंने अपने कपड़े पहने और तेज़ी से निकल आया।

कुछ दिनों बाद मैं दिल्ली के लिए निकला, जहाँ मैं एक विज्ञापन एजेंसी में काम करने गया था और लोगों को यह बताता कि किस तरह कोला इत्यादि पेय के सेवन से आप ग्रीष्म की गर्माहट झेल सकते हैं जो वास्तव में आपको और प्यासा बनाता है। जंगल का वह तालाब मुझे भूल चुका था।

मैंने उस घटना के दस साल बाद फिर राजपुर की यात्रा की। उस छोटे होटल को छोड़ते हुए जहाँ मैं ठहरा हुआ था, मैंने खुद को उसी पुराने साल के जंगल से गुज़रते पाया और उस तालाब की ओर खिंचे चले जाने से खुद को रोक नहीं पाया, जहाँ मैं अपना तैरना खत्म नहीं कर पाया था। मैं वहाँ फिर से तैरने के लिए बहुत उत्सुक नहीं था, लेकिन यह जानने की उत्सुकता थी कि क्या वह तालाब अब भी वहाँ अस्तित्व में है या नहीं।

बेशक, वह वहाँ अब भी था, हालाँकि आस-पास का माहौल बदल चुका था और कई नये घर और अन्य इमारतें बन गयी थीं, पहले जहाँ सिर्फ़ जंगल था। और तालाब में भी बहुत सारी गतिविधियाँ जारी थीं।

ढेर सारे मज़दूर बाल्टी और रबर की पाइप से तालाब से पानी खींच रहे थे। वह छोटी धारा जो उसे पानी देती थी, वे उसे अवरुद्ध कर चुके थे और उसका मार्ग बदल दिया था।

एक सफ़ेद सफारी सूट में सज्जित व्यक्ति इस अभियान का निरीक्षण कर रहा था। पहले मैंने सोचा कि वह कोई जंगल का अवैतनिक प्रबन्धक है, लेकिन फिर पता चला कि वह एक स्कूल का मालिक था जो पास में ही निर्मित हो रहा था।

“क्या आप राजपुर में रहते हैं?” उसने पूछा।

“मैं रहा करता था... बहुत पहले...आप तालाब को क्यों खाली कर रहे हैं?”

“यह एक खतरा बन गया है,” उसने कहा, “मेरे दो लड़के यहाँ हाल में डूब गये। दोनों ही सीनियर विद्यार्थी थे। यह सही है कि उन्हें बिना अनुमति के तैरने नहीं आना चाहिए था, यह तालाब निषिद्ध था। लेकिन आप जानते हैं कि लड़के कैसे होते हैं। नियम बनाइये और वह उसे तोड़ना अपना कर्तव्य मानते हैं।”

उसने बताया कि उसका नाम कपूर है और वह मुझे अपने घर में ले गया, एक नया बना बँगला जिसका खूब बड़ा और बढ़िया बरामदा था। उसका नौकर हमारे लिए ठंडे शर्बत के गिलास लाया। हम बेंत की कुर्सियों पर बैठे, जहाँ से तालाब और जंगल दिख रहा था। खुली जगह के पार, एक पथरीली सड़क नयी बनी स्कूल की इमारत की ओर जाती थी, जिस पर नयी सफ़ेदी हुई थी और वह धूप में चमक रही थी।

“क्या लड़के वहाँ एक ही समय पर गये थे?” मैंने पूछा।

“हाँ, वे दोस्त थे। और उन पर ज़रूर पक्के दुश्मनों ने आक्रमण किया होगा। सारे अंग मुड़े और टूटे हुए, चेहरा बिगड़ा हुआ। लेकिन मौत डूबने से हुई—यह चिकित्सक का कथन था।”

हमने तालाब के उथलेपन को घूरा, जहाँ अब भी कुछ लोग काम कर रहे थे, बाकी लोग दोपहर के भोजन के लिए गये थे।

“शायद इस जगह को छोड़ देना ही सही होगा,” मैंने कहा, “इसके चारों ओर काँटेदार बाड़ लगायें। अपने लड़कों को दूर रखें। हज़ारों साल पहले, वास्तव में यह घाटी चारों ओर से घिरा हुआ समुद्र थी। अब कुछ तालाब और धाराएँ ही उसके अवशेष के रूप में बची हैं।”

“मैं इसे भरना चाहता हूँ और वहाँ पर कुछ बनाना चाहता हूँ। एक ओपन एयर थियेटर शायद। हम एक कृत्रिम तालाब तो कहीं भी बनवा ही सकते हैं।”

अभी बस एक आदमी तालाब में बचा हुआ था, कीचड़ के पानी में घुटने तक डूबा हुआ और मैंने और मिस्टर कपूर दोनों ने देखा कि उसके बाद क्या हुआ।

तालाब के तल से कुछ निकला। वह एक दैत्यकार घोंघे की तरह लग रहा था, लेकिन उसके सिर का आधा हिस्सा मानव का था, उसका शरीर और अवयव आधे घोंघे या ऑक्टोपस की तरह थे। एक विशाल स्कूबी, स्त्री दैत्य। वह तालाब में खड़ी उस आदमी से ज़्यादा लम्बी थी। एक नरम और लिसलिसी जीव, हमारे प्राचीन काल की उत्तरजीवी।

तेज़ शोषक गति से, उसने उस आदमी को अपनी बाज़ुओं में लपेट लिया कि बस उस आदमी की बाँहें और पैर ही बेतहाशा और निरर्थक रूप से संघर्षरत दिखाई दे रहे थे। स्कूबी, स्त्री दैत्य ने उसे पानी में खींच लिया।

कपूर और मैंने बरामदा छोड़ा और तालाब के किनारे भागे। सतह के पास हरी काई से झाग निकल रहा था। बाकी सब कुछ स्थिर और शान्त था। और जिस तरह बच्चे के मुँह से बबलगम निकलता है, एक क्षत-विक्षत आदमी का शरीर पानी से निकल घूमता हुआ हमारी तरफ़ आया।

मृत और दम घुटा हुआ, और शरीर का सारा द्रव्य चूस कर सुखाया हुआ।

स्वाभाविक था कि उसके बाद तालाब पर कोई और काम नहीं हुआ। यह कहानी बताई गयी कि एक मज़दूर फिसल गया और पत्थर पर गिरकर मर गया। कपूर ने मुझे राज़ नहीं खोलने की कसम दी। उसका स्कूल बन्द हो जाता अगर उस क्षेत्र में कई विचित्र तरीके से डूबने से मौतें और अन्य दुर्घटनाएँ होतीं। लेकिन उसने उसे अपनी सम्पत्ति से अलग करते हुए उस जगह के चारों ओर दीवारें खड़ी करते हुए उसे बिलकुल अगम्य बना दिया। साल के जंगल के सघन विस्तार ने उस तक पहुँचने का रास्ता ढँक दिया।

मानसून की बारिश आयी और तालाब फिर से भर गया।

मैं आपको बता सकता हूँ कि वहाँ कैसे पहुँचना है अगर आप उसे देखना चाहें। लेकिन मैं आपको वहाँ तैरने की सलाह नहीं दूँगा।

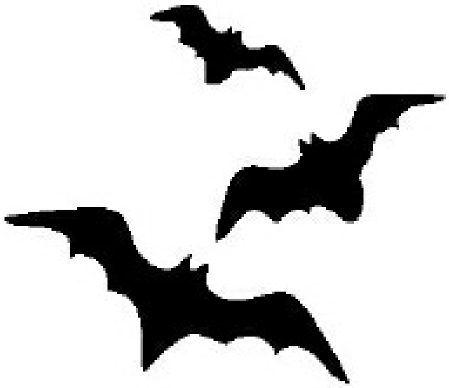

पारिवारिक भूत

"अब एक भूत की कहानी सुनायें," मैंने बीबीजी से कहा, मेरी मकान मालकिन, जैसे ही वह बरामदे में पुराने पलँग पर आराम से बैठीं, "आपके गाँव में कम-से-कम एक भूत तो होगा।"

"ओह, वहाँ बहुत सारे थे," बीबीजी ने कहा, जो विचित्र कहानियाँ सुनाती कभी नहीं थकती थीं, "दुष्ट चुड़ैलें और शरारती प्रेत। और था एक मूंजिया जो भाग गया था।"

"मूंजिया क्या होता है?" मैंने पूछा।

"मूंजिया एक जवान ब्राह्मण लड़के का भूत था, जिसने अपनी शादी से एक दिन पहले आत्महत्या की थी। हमारे गाँव के मूंजिया ने पीपल के पेड़ पर अपना घर बनाया था।"

"मुझे आश्चर्य होता है कि क्यों भूत हमेशा पीपल के पेड़ पर रहते हैं!" मैंने कहा।

"इस बारे में मैं तुम्हें कभी और बताऊँगी," बीबीजी ने कहा, "लेकिन मूंजिया के बारे में कहानी सुनो...।"

गाँव के पीपल के पेड़ के पास (बीबीजी के अनुसार) एक ब्राह्मण का परिवार रहता था जो इस मूंजिया की विशेष सुरक्षा में था। भूत ने खुद को इसी परिवार से जोड़े रखा हुआ था (वे उस लड़की के परिवार से सम्बन्धित थे जिससे कभी उसकी शादी होने वाली थी) और उनके प्रति अपने लगाव को पत्थर, हड्डियाँ, मल और कचरा फेंककर, डरावनी आवाज़ें निकालकर, और जब भी मौका मिले, उन्हें डराकर दिखाता रहता था। उसके संरक्षण में शीघ्र ही वह परिवार बिखर गया। एक-एक करके वे मर गये और बचने वाला वह एकमात्र बेवकूफ़ लड़का था जिसको भूत ने तंग नहीं किया था, क्योंकि वह सोचता था कि ऐसा करना उसकी प्रतिष्ठा के खिलाफ़ था।

लेकिन, गाँव में, जन्म, शादी और मृत्यु सबकी आती है और इस बात को ज़्यादा देर

नहीं बीती जब पड़ोसी उस मूर्ख की शादी पर विचार करने लगे।

गाँव के बुज़ुर्गों की एक सभा के बाद, वे सहमत हुए, पहली बात कि मूर्ख की शादी होनी चाहिए; और दूसरी कि उसकी शादी सबसे कर्कशा लड़की से होनी चाहिए जो बिना योग्य उम्मीदवार पाये सोलह की उम्र तक पहुँच गयी हो।

मूर्ख और कर्कशा की जल्द ही शादी हो गयी और उन्हें खुद को सँभालने के लिए छोड़ दिया गया। बेचारे मूर्ख के पास आजीविका कमाने का कोई साधन नहीं था और उसे भीख माँगने का सहारा लेना पड़ा। पहले वह खुद को ही मुश्किल से सँभाल पाता था और अब उसकी पत्नी भी एक अतिरिक्त बोझ थी। घर में घुसते ही उसकी पत्नी ने उसके कान के नीचे एक घूँसा लगाया और उसे रात के खाने के लिए कुछ लाने के लिए बाहर भेज दिया।

बेचारा लड़का हर दरवाज़े पर गया, लेकिन किसी ने उसे कुछ नहीं दिया, क्योंकि वही लोग जिन्होंने उसकी शादी तय की थी, उससे चिढ़े हुए थे क्योंकि उसने उन्हें अपनी शादी की दावत नहीं दी थी। जब, शाम को वह खाली हाथ लौटा, तो उसकी पत्नी चिल्लायी, “तुम लौट आये, तुम आलसी, मूर्ख? तुम इतनी देर तक कहाँ थे, और मेरे लिए क्या लाये हो तुम?”

जब उसे पता लगा कि वह एक पैसा भी नहीं लाया, तो वह गुस्से से उबल पड़ी और उसकी पगड़ी को फाड़कर पीपल के पेड़ पर फेंक दिया। फिर झाड़ू उठाकर, अपने पति को खूब मारा जब तक वह दर्द से कराहते हुए घर से भाग नहीं गया।

लेकिन कर्कशा का गुस्सा अब तक कम नहीं हुआ था। अपने पति की पगड़ी को पीपल के पेड़ पर देखकर उसने उसके तने को पीटना शुरू किया, अपने प्रहारों के साथ वह भद्दी गालियाँ भी दे रही थी। पेड़ पर रहने वाला भूत उसके प्रहारों के प्रति संवेदनशील हो गया था और इस बात के लिए चौकस कि उसकी भाषा के प्रभाव से कहीं वह पूरी तरह खत्म ही न हो जाये, वह उस पेड़ से गायब हो गया जिस पर वह बहुत सालों से रह रहा था।

बवंडर पर सवार, वह भूत जल्द ही मूर्ख तक जा पहुँचा जो अब भी गाँव से बाहर जाती सड़क पर दौड़ा चला जा रहा था।

“इतना तेज़ नहीं, भाई!” भूत चिल्लाया, “अपनी पत्नी को छोड़ दो, ज़रूर, लेकिन अपने पुराने पारिवारिक भूत को नहीं! दुष्टा ने मुझे मेरे पीपल के पेड़ से भगा दिया। सच ही है एक भूत का कड़वी ज़ुबान वाली एक औरत से कोई मुकाबला नहीं! आज से हम भाई हैं और हमें अपना भाग्य मिलकर बनाना चाहिए। लेकिन पहले वादा करो कि तुम अपनी पत्नी के पास कभी नहीं लौटोगे।”

मूर्ख ने बहुत ही खुशी से रज़ामंदी दी और साथ मिलकर उन्होंने अपनी यात्रा जारी रखी जब तक कि वे एक बड़े शहर नहीं पहुँच गये।

शहर में घुसने से पहले, भूत ने कहा, “अब सुनो, भाई, और अगर तुम मेरी सलाह मानोगे, तुम्हारा भाग्य बन जायेगा। इस शहर में दो बहुत खूबसूरत लड़कियाँ हैं, एक राजा की बेटी है और दूसरी एक अमीर महाजन की बेटी है। मैं जाऊँगा और राजा की बेटी को अपने वश में कर लूँगा और उसके पिता हर तरह का उपचार कर लेंगे लेकिन कोई प्रभाव

नहीं होगा। उस बीच तुम हर दिन सड़कों पर साधू की पोशाक में घूमना और जब राजा आयें और तुम्हें अपनी बेटी को ठीक कर देने के लिए कहें तो तुम्हें जो भी शर्त सही लगे, वह रखना। जैसे ही मैं तुम्हें देखूँगा, मैं उस लड़की को छोड़ दूँगा। फिर मैं जाऊँगा और महाजन की लड़की को अपने वश में कर लूँगा। लेकिन उसके पास बिलकुल मत जाना, क्योंकि मैं उसके प्यार में हूँ और उसे छोड़ने का मेरा कोई इरादा नहीं। अगर तुम उसके पास आये तो मैं तुम्हारा गला मरोड़ दूँगा।"

भूत अपनी हवा पर सवार हो चला गया और मूर्ख ने अकेले ही शहर में प्रवेश किया और तीर्थयात्रियों के लिए स्थानीय विश्राम घर में एक बिस्तर प्राप्त कर लिया।

अगले दिन शहर में इस बात का समाचार हर ओर फैला था कि राजा की बेटी खतरनाक रूप से बीमार थी। चिकित्सक, हाकिम और वैद—आये और चले गये, और सबने लड़की की बीमारी को लाइलाज बताया। राजा दुःख से विचलित था और उसने अपनी आधी सम्पत्ति उसके नाम कर देने का प्रस्ताव रखा जो उसकी सुन्दर और एकमात्र लड़की को ठीक कर देगा। मूर्ख ने खुद को धूल और राख से लपेट कर सड़कों पर चलना आरम्भ कर दिया था, कभी-कभी चिल्लाता—"भूम, भूम, भो! बम भोला नाथ!"

लोग उसकी वेशभूषा देखकर चकित रह जाते और उसे एक बुद्धिमान और सिद्ध पुरुष समझते, उन्होंने राजा को खबर की। राजा तुरन्त शहर में आया, और मूर्ख के आगे दंडवत हो गया, उससे अपनी बेटी को ठीक कर देने की भीख माँगी। थोड़ी उदारता और अनिच्छा दिखाने के बाद मूर्ख राजा के साथ उसके महल में जाने के लिए मान गया और लड़की उसके सामने लायी गयी।

उसके बाल बिखरे हुए थे, दाँत बज रहे थे और उसकी आँखें बिलकुल अन्दर धँसी हुई थीं। वह विलाप करती, कोसती और अपने कपड़े फाड़ती। जब मूर्ख उसके सामने आया तो उसने कुछ अर्थहीन मन्त्र पढ़े, और भूत मूर्ख को पहचान कर चिल्ला पड़ा—"मैं जाता हूँ, मैं जाता हूँ! भूम, भूम, भो!"

"मुझे एक संकेत दो कि तुम चले गये हो," मूर्ख ने माँग रखी।

"जैसे ही मैं लड़की को छोड़ूँगा," भूत ने कहा, "तुम देखोगे कि वह आम का पेड़ उखड़ जायेगा। यही संकेत मैं दूँगा।"

कुछ मिनट बाद आम का पेड़ धड़ाम से गिर गया। लड़की को अपने दौरे से आराम मिला और वह अपनी इस बात से अनजान लग रही थी कि उसे क्या हुआ था। यह समाचार पूरे शहर में फैल गया और मूर्ख आदर और आश्चर्य का एक नुमाइंदा बन गया। राजा ने अपने वचन के अनुसार अपनी आधी सम्पत्ति उसके नाम कर दी; और इस तरह मूर्ख के लिए आनन्द और समृद्धि का दौर शुरू हुआ।

कुछ हफ़्ते बाद, भूत ने महाजन की बेटी को अपने वश में कर लिया, जिससे वह बहुत ज़्यादा प्रेम करता था। अपनी बेटी का मानसिक सन्तुलन खोते देख, महाजन ने अति आदरणीय मूर्ख को बुलावा भेजा और उसे एक अच्छी खासी राशि देने का प्रस्ताव दिया अगर वह उसकी बेटी को ठीक कर देगा तो। लेकिन भूत की चेतावनी को याद कर मूर्ख ने जाने से मना कर दिया। महाजन क्रोधित हो उठा और अपने आदमियों को उसे बलपूर्वक उठा लाने के लिए भेजा और मूर्ख के पास प्रतिरोध का कोई साधन नहीं होने के

कारण, महाजन के घर खींच लाया गया।

जैसे ही भूत ने अपने पुराने साथी को देखा, वह क्रोध में चिल्लाया, “मूर्ख, तुमने हमारा समझौता क्यों तोड़ा और यहाँ क्यों आ गये? अब मैं तुम्हारी गर्दन मरोड़ दूँगा!”

लेकिन मूर्ख जिसकी बुद्धि की प्रतिष्ठा ने वास्तविक रूप में उसे बुद्धिमान बनाने में योगदान दिया था, कहा, “भाई भूत, मैं तुम्हें परेशान करने नहीं आया, बल्कि एक भयंकर समाचार सुनाने आया हूँ। पुराने दोस्त और संरक्षक, हमें यह शहर तुरन्त छोड़ देना चाहिए। तुम देखो, वह आ गयी है—मेरी खूँखार पत्नी, वह कर्कशा! हम दोनों को प्रताड़ित करने के लिए और हमें गाँव खींच ले जाने के लिए। वह इस घर की ओर आती सड़क पर है और कुछ मिनटों में यहाँ होगी!”

जब भूत ने यह सुना, वह चिल्ला पड़ा, “ओह नहीं, ओह नहीं! अगर वह आ गयी है तब हमें ज़रूर चले जाना चाहिए! भूम भो, भूम भो, हम जाते हैं, हम जाते हैं!”

घर की दीवारों और दरवाज़ों को तोड़ते हुए, भूत ने खुद को एक छोटे से बवंडर में समेट लिया और शहर में तेज़ गति से उड़ते हुए एक खाली पीपल का पेड़ तलाशता रहा।

अपनी बेटी के दुष्ट प्रभाव से स्वतन्त्र हो जाने से आनन्दित महाजन ने मूर्ख को गले लगा लिया और उस पर उपहारों की बौछार कर दी और उसी दौरान, बीबीजी ने कथा समाप्त की। मूर्ख ने महाजन की सुन्दर लड़की से विवाह कर लिया और अपने श्वसुर की सम्पत्ति का उत्तराधिकारी बनकर शहर का सबसे अमीर और सफल महाजन बना।

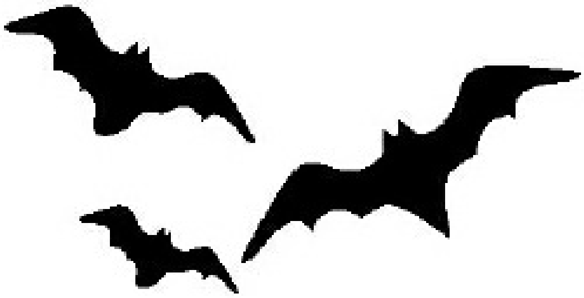

सहस्त्राब्दी की एक रात

कसाई की दुकान के नीचे वाले खड्डे में हड्डियाँ और फेंके हुए माँस के टुकड़े ढूँढते सियार "हूआ-हूआ" कर रहे थे। पसंद इस आवाज़ से अविकल था। एक नौजवान कम्प्यूटर विशेषज्ञ जो खुद को इन सब अंधविश्वासों और अज्ञात के भय से परे समझता था। उसके शब्दकोश में अज्ञात का अर्थ था, जिसकी अभी खोज होनी हो। वह रात में, श्मशान के पास से गुज़र रहा था।

आधी रात होते ही नयी सहस्त्राब्दी शुरू हो जायेगी। साल 2000 बुला रहा था, पसंद जैसे पढ़े-लिखे नौजवानों के लिए नयी सम्भावनाओं से भरा हुआ, जबकि करोड़ों लोग—जो जल्द ही एक अरब से भी ज़्यादा होने वाले हैं—नीचे मैदानों की गर्मी और धूल में पसीना बहा रहे थे ताकि उनको और उनके बड़े परिवारों को दो वक्त की रोटी नसीब हो पाये। उनके पास न पब्लिक स्कूल की शिक्षा थी, न ही गैराज में तीन गाड़ियाँ और न बरमूडा में बैंक खाता। अब सबके पास इतना दिमाग, अच्छी किस्मत और हाँ, पैतृक सम्पत्ति नहीं हो सकती—जिसने उसके लिए जीवन को इतना सुविधाजनक और सम्भावनाओं से भरा बनाया था—पसंद ने मन-ही-मन सोचा, 'यह वह सहस्त्राब्दी होगी जब सभी चालाक और बुद्धिमान लोग सर्वोपरि होंगे और बाकी सभी तरह के गधे नीचे गिर जायेंगे।' उसकी यह धारणा थी कि गुलामों की उन्नति के लिए एक शासक विशिष्ट वर्ग का होना बहुत ज़रूरी है।

उसने अपनी घड़ी की ओर देखा—बारह बजे थे। उसने अच्छा खाना खाया था और अब वह इस लम्बी, घुमावदार सड़क पर टहलता हुआ सभी अमीर और जाने-माने लोगों के घरों के सामने से गुज़र रहा था—लाल, बैनर्जी, कपूर, रामचंदानी। वह इन सब से किसी तरह भी कम नहीं, और अब तो वह इनसे भी आगे निकलने वाला था। वह अपनी चोटी तक पहुँचने वाला था, जबकि ये लोग पहले ही अपना मुकाम हासिल कर अब वापस नीचे गिर रहे थे—ऐसा वह सोचता था।

अब वह श्मशान तक पहुँच गया था, टूटी कब्रों वाला यह श्मशान—जिसमें कुछ कब्रें डेढ़ सौ साल से भी ज़्यादा पुरानी थीं, एक ऐसे शक्तिशाली साम्राज्य की निशानी था

जो आज धूल और खंडहर के अलावा कुछ नहीं। यहाँ दफ़नाये गये थे कर्नल और जिलाधीश, व्यापारी और मेमसाहिब, और कई छोटे बच्चे—जिनके नाज़ुक जीवन की लौ किसी अशान्त समय में बुझ गयी थी। ये सब हारे हुए लोग थे। उसके पास उन लोगों के लिए उपेक्षा के अलावा और कुछ नहीं, जो अपने शौर्य और वैभव को मज़बूती से पकड़े न रख पाये। उसके लिए कभी हारे हुए साम्राज्य नहीं होंगे।

यहाँ सड़क पर बहुत अँधेरा था, क्योंकि उत्तरी चोटी पर घने पेड़ थे। पसंद थोड़ा घबराया पर उसकी जेब में रखे मोबाइल ने उसे फिर आश्वस्त कर दिया—वह जब चाहे अपने ड्राईवर और अंगरक्षक को बुला सकता था।

चाँद, नाग टिब्बा के ऊपर से झाँक रहा था, और सारी कब्रें उसके चारों ओर कतारों में खड़ी थीं, जैसे नवयुग के इस टी-शर्ट और जींस धारी शूरवीर को सलामी दे रही हों। देवदार के पेड़ों के बीच उसे श्मशान की बाहरी रेखा पर एक हल्की रोशनी दिखाई दी। उसके एक चमचे ने उसे बताया था कि यहाँ एक विधवा अपने बहुत सारे छोटे बच्चों के साथ रहती है। हालाँकि उसका स्वास्थ्य खराब रहता है पर वह अभी भी जवान और सुन्दर थी, और लोग कहते थे कि वह उन लोगों को बहुत खुश करती थी जिनके पास लुटाने के लिए पैसे हों, क्योंकि अपने भूखे परिवार के लिए उसे पैसों की बहुत आवश्यकता थी।

लोग यह भी कहते थे कि वह थोड़ी पागल थी और उसका स्वर्गीय पति—जो वहाँ देखभाल करता था, को मिली झोंपड़ी में रहने की बजाय वह मकबरों में सोना पसंद करती थी।

पसंद को इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ा। वह यहाँ प्यार की खोज में नहीं आया था, उसे केवल दैहिक सन्तुष्टि चाहिए थी। और अभी उसे ज़रूरत महसूस हो रही थी, किसी औरत के ऊपर अपनी मर्ज़ी चलाने की, ताकि वह अपनी मर्दानगी साबित कर सके। आज तक सभी जवान लड़कियाँ उससे दूर भागती थीं, पर यह औरत जवान नहीं थी।

तीस पार की यह औरत अपनी गरीबी और बदसलूकी के कारण और भी बूढ़ी दिखती थी। पर अभी भी ढलती सुन्दरता की झलक उसकी सुलगती आँखों और सुडौल हाथ-पैरों में दिख जाती थी। अँधेरे में दाँत चमका कर पसंद की ओर मुस्कुराते हुए उसने उसे अपने शयनकक्ष में आमन्त्रित किया—यह वह मकबरा था जो उसे सबसे प्रिय था।

पसंद के पास प्रेम-क्रीड़ाओं का समय नहीं था। उसने उसके वक्ष को पकड़ लिया और तब उसे पता चला कि वे बहुत बड़े नहीं थे। उसके पहले से फटे कपड़ों को उसने नोच कर फेंक दिया और अपने होंठ उसके सूखे होंठों पर जड़ दिये। उसने इसे रोकने की कोई कोशिश नहीं की। वह जो चाहता था उसने किया। बाद में थककर जब वह एक कब्र—जो किसी प्राचीन मृत योद्धा के अवशेष को ढँके थी, पर लेटा था तब उस औरत ने उसके ऊपर झुककर उसे गाल और गले पर ज़ोर से काट लिया।

दर्द और आश्चर्य से वह चिल्ला उठा और उठने की कोशिश करने लगा। पर कई छोटे पर मज़बूत हाथों ने उसे फिर कब्र की तरफ़ धकेल दिया। छोटे मुँह और नुकीले दाँत उसके शरीर पर हमला करने लगे। धूल से सने हाथों ने उसके कपड़े फाड़ दिये। वे छोटे दाँत बार-बार उसे काटने लगे। उसकी चीखें सियारों के रुदन से मिल गयीं।

“आराम से मेरे बच्चों” औरत बोली “सबके लिए बहुत है।”

वे फिर उस पर टूट पड़े।

नीचे खाई में अपनी बारी का इन्तज़ार करते सियार फिर ‘हूआ-हूआ’ करने लगे। हड्डियाँ उनकी होंगी। सिर्फ़ मोबाइल ही तिरस्कृत रहेगा।